|| वन्देमातरम् ||

कारावास

की

रामकहानी ।

१६२१ २२

की

धकापेल ।

मूल्य ।।।)

सम्वत् १६८० वि०

नरदेव शास्त्री

(वन्दे मातरम्)

कारावास

की

रामकहानी

१९२१-२२ की

धक्कापेल

लेखक

श्री० वेदतीर्थ नरदेवशास्त्री (जेलतीर्थ)

प्रकाशक—

चौ० हुलासवर्मा, भारतीय प्रेस देहरादून

ज्येष्ठ शुक्ला पूर्णिमा

(१९८०)

पं० कृष्णकुमार शर्मा के विद्याभास्कर प्रेस कनखल में मुद्रित।

॥ ॐ तत्सत् ॥

(वन्देमातरम्)

ताo १३ दिसम्बर १६२१ को, दुपहर के समय, देहरा जेल में जब मुझे सवा वर्ष का कठोरदण्ड सुनाया गया तब किसको खयाल था कि मैं इस प्रकार कारावास की राम-कहानी लिख सकूंगा। खयाल यही था कि बान बटते २ सवा साल निकल जायगा, लिखने पढ़ने का सामान कभी नसीब न होगा,— हमारे न्यायाधीश श्रीमान् हरचन्दरोडर साहब की इच्छा और थी और न्यायाधीशों के न्यायाधीश, परमकारुणिक भगवान् की इच्छा और थी। बड़े दरबार की इच्छा को कौन मिटा सकता है। जो कुछ हम पर बीती, जैसे बीती, जैसे हमने दिन काटे, यह सब आप पढ़ेंगे ही। खुर्जा (बुलन्दशहर)के स्वाo योगानन्द, देहरादूनके चौoहुलासवर्मा, मुरादाबाद के बाo रामशरण गुप्त एमo एo एल्o एल्o बीo, मनियर जिला बलिया के बाo ब्रह्मदेवप्रसाद मालिक, प्रभुपुर रामगढ़ (बनारस) के निवासी स्वo कुंo विश्वनाथ-सिंह, बलिया के बाo केदारनाथ, पडरौना जिo गोरखपुर के पंo ब्रह्मदेव शर्म्मा, मुबारकपुर टांडा (फैजाबाद) के पंo महादेवप्रसाद, श्रीनगर खीरी, के लाo बाबूराम उर्फ शान्तिस्वरूप, पंo प्रभुदयाल जी मिश्र कानपुरनिवासी, अलमोड़ा के पंo बदरीदत्त पाण्डे, अवध के प्रसिद्ध महाशय बाo रामचन्द्र, कानपुर के पंo लक्ष्मीनारायण अग्निहोत्री, कासगंज के लाo मानपाल गुप्त, सादाबादके बाo निरञ्जन-प्रसाद आदि महानुभावों का मैं कृतज्ञ हूं कि जेलजीवन

के सानन्द व्यतीत करने में मुझे इनसे बहुत सहायता मिली, श्री पं० विश्वम्भरदत्त चंदोला सम्पादक गढ़वाली का मैं अत्यन्त कृतज्ञ हूं कि वे मेरे समाचार साधारण जनता तक पहुंचाते रहे। विद्याभास्कर प्रेस कनखल के स्वामी पं० रामावतार शास्त्री को भी धन्यवाद है कि इसके शीघ्र प्रकाशन में सहायता दी।

प्रिय पाठक! मैंने इसको आन्दोलन के इतिहास के रूप में लिखा है इसीलिये इस 'रामकहानी' को पढ़ने से आपको क्रमशः सब घटनाओं का परिज्ञान हो जायगा। जहां तक हो सका है कोई बात नहीं छोड़ी है। जहां तक हो सका थोड़े शब्दों में बहुत कुछ लिख डालने का यत्न किया गया है। जहां तक हो सका वस्तु स्थिति पर पूर्ण प्रकाश डालने का यत्न किया है। इस विवेचन से मेरे पाठकों को यदि थोड़ा भी लाभ पहुंचा तो मैं अपने परिश्रम को सफल समझूंगा। हमने जेल में जो कुछ सुख दुःख भोगे। जो कुछ अच्छा या बुरा किया, जो कुछ तप तपा, वह सब श्रीकृष्ण के अर्पण कर चुके हैं अतः अब हमारे पास अभिमान करने योग्य कुछ भी नहीं रहा है। उसी की प्रेरणा से, उसी के जन्म-स्थान में पहुंचे। वहां पहुंच कर जो कुछ किया वह सब उसी का है क्योंकि भगवान् ने स्वयं कहा है कि:—

—"यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्।
यत्तपस्यसि कौन्तेय, तत्कुरुष्व मदर्पणम्"॥

तथास्तु, शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु।

श्रीब्रह्मार्पणमस्तु

श्री० नरदेवशास्त्री,।

* वन्देमातरम् *

प्रकाशक का निवेदन

महानुभाव ! १९२१—२२ की घटना भारत के इतिहास में चिरस्मरणीय रहेगी । भारत के इतिहास में यह पहिली ही घटना है कि राजा के चैलेञ्ज को प्रजा ने निर्भय होकर स्वीकार किया । इस 'रामकहानी' के पढ़नेसे आपको १९२१ नवम्बर से लेकर अप्रैल १९२३ तक के सब समाचार क्रमशः ज्ञात होंगे । श्री शास्त्री जी नियमपूर्वक डायरी लिखते थे, अतः उस डायरी से बहुत कार्य हुआ । पहले शास्त्री जी का विचार पुस्तकरूप में छपाने का नहीं था । केवल लेखरूप में समाचारपत्रों द्वारा छापनेका विचार था । अनेक सम्पादकोंने शास्त्री जी के पास पत्र भी भेजे थे । अन्त में मित्रों के आग्रह से आपने इस 'रामकहानी' को पुस्तकरूप में निकालने का निश्चय किया । इसकी उपयुक्तता, मनोरञ्जकता आदि स्वयं अनुभव करने योग्य हैं—यह शास्त्री जी की जेलकथा नहीं किन्तु असहयोग आन्दोलन का दो वर्ष का पूर्ण मनोरञ्जक इतिहास है । यह १७५० व १७ बी० क्रिमिनल ला अमेण्डमेण्ट एक्ट की यादगार है । लार्ड रीडिंग "इनसाफ करनेके लिये, भेद भाव मिटाने के लिये, रिफार्म स्कीम को कामयाब

करने के लिये" भारतवर्ष में पधारे थे। जब इन्होंने भारतवर्ष की भूमि पर पदार्पण किया तब बड़े बड़े वचन दिये थे, परन्तु अब उन्हीं के ज़माने में भारत की जो दशा या दुर्दशा है, वह किस से छुपी हुई है। प्रजातन्त्र पद्धति को स्थापन करने की इच्छा से आये हुए लार्ड रीडिंग के जमाने में 'एकतन्त्र' शासन जोर पकड़ रहा है, फिर नौकरशाही चेत रही है, निमक के दुगने टैक्स ने तो स्पष्ट बतला दिया कि 'रिफार्म-स्कीम' की क्या दशा है। माडरेटों को बगल में लेकर जब असहयोगी कुचले गये तब मोडरेट लोग कूटनीति को न समझ सके, अब स्वयं उनका जो तिरस्कार हो रहा है उससे वे घबरा रहे हैं। सचमुच लार्ड रीडिंग का शासन नाकामयाब रहा यह एक प्रकार से अच्छा ही हुआ। इससे भारतवर्ष का भ्रम जाता रहा। देखें भगवान क्या क्या लीला दिखाते हैं। नौकरशाही की बुद्धि भ्रष्ट हो रही है। भगवान जिसको गिराना चाहता है पहले उसकी मति हर लेता है।

प्रकाशक

ओ३म्

श्री महात्मा गान्धी जी

के

समर्पण

जो कि एरवड़ा जेल में छः वर्ष के कारावास को पूरा कर रहे हैं और स्वर्गीय लोकमान्य तिलक के पश्चात् जिनके कारण भारतवर्ष में अहिंसात्मक-असहयोग का अद्भुत आन्दोलन आरम्भ हुआ और भारत भी निःशस्त्र प्रतीकार के लिये उद्यत हुआ। उसी महात्मा के प्रति यह "कथा" लेखक द्वारा सादर समर्पित है।

ॐतत्सत

कारावास की रामकहानी

१६२१—२२ की

चकाचेल

विशेष निरूपण

—:*:—



संसार के सर्वश्रेष्ठ महापुरुष

महात्मा गान्धी।

रत्नाकर प्रेस कलकत्ता।

ॐ तत्सत्

देहरादून-पर्व)

कारावास की राम कहानी

१—सूत्रपात

१६२१ नवंबर का मास, काँग्रेस काम धडल्ले से हो रहा था, सब देशभक इस उमंग में लग रहे थे कि अहमदाबाद कांग्रेस में जायेंगे, वहां देश की दशा पर विचार करेंगे, स्वराज्य का झंडा गाड़ेंगे, स्वतन्त्रता का द्वार खोलेंगे।

और न जाने क्या क्या सोच रहे थे क्या क्या मना रहे थे, कैसे कैसे सुखस्वप्न देख रहे थे—इतने में भारत सरकार ने अचानचक फरमान निकाला कि काँग्रेस-वालण्टियर, खिलाफत-वालण्टियर तथा नैशनल-वालण्टियर(Unlawful) अर्थात् ग़ैर क़ानूनी हैं, जो वालण्टियर होंगे उनको क्रिमिनल ला अमेण्डमेण्ट एक्ट १७ ए० की धारा के अनुसार छः मास का दण्ड होगा और वालण्टियर भरती करने वाले को १७ वीं धारा के अनुसार तीन वर्ष का कारागारवास और १०००)रु० दण्ड मिलेगा--यद्यपि ये धाराएं अन्य प्रयोजन के लिये बनाई गई थीं तो भी भारत सरकार ने कांग्रेस-आन्दोलन को कुचलने के लिये इनका उपयोग करना विचारा। भारत सरकार का ऐलान निकलना था कि बंगाल सरकारने बिगुल फूंक ही तो डाला,- जब मैंने समाचार पत्रों में यह वृत्त पढ़ा तब यह खयाल हुआ कि केवल बंगाल सरकार ही ऐसा करने लगी है

और यू० पी० सरकार ऐसी भूल कदापि न करेगी,-पर यह मेरी संभावना निर्मूल ही रही। ता० २३ नवंबर का दिन,प्रातः काल संध्योपासन से निमट कर मैं लीडर को पढ़ने लगा तो क्या देखता हूं कि यू० पी० सरकार ने युद्ध का शंख बजा ही डाला। मैंने सोचा कि जिलाधिकारियों द्वारा बाज़ाप्ता सूचना आने के पूर्व ही जिले भर के समस्त कांग्रेस-सभ्यों व स्वयं-सेवकों को बुला कर पक्का संघटन करना चाहिये नहीं तो पीछे से बड़ी रुकावट पड़ जायगी। इस विचार के अनुसार समस्त ज़िले भर में विज्ञापन भेज दिये गये-खूब आन्दोलन किया गया-ज़िले भर में एक अपूर्व उत्साह था—इस कार्य के लिये ता ५ दिसंबर रविवारका दिन नियत किया गया—स्थान तो तिलक-भूमि निश्चत था ही।

इससे पूर्व एक अपूर्व घटना का उल्लेख करना भूल गया—ता० १७ नवंबर को भारत वर्ष की भूमि पर युवराजका पदार्पण होने वाला था, उसी के उपलक्ष्य में आंल-इण्डिया कांग्रेस- कमेटी ने भारत भर में पूरी हड़ताल मनाने का संकल्प किया था—इसी के सम्बन्ध में देहरादून के ज़िले भर में अपूर्व हड़ताल रही-शहर की दशा तो देखने योग्य थी। सरकारीअधिकारी भी हैरान थे कि यह क्या हुआ? इसी दिन तिलक भूमि पर जो महती सभा हुई थी वह भी अत्यन्त महत्वपूर्ण थी। इसमें बरदौली - सत्याग्रह के लिये वालण्टियर भरती किये गये, लाहौर में लारेन्स की मूर्तिको उठा डालने के लिये सत्याग्रहियों के नाम लिखे गये, म्युनिसिपैलिटीके विषय में प्रस्ताव पास हुआ कि वह प्रिन्स आफ वेल्स के स्वागत में एक पाई भी खर्च न करे। सभा में स्वयं सेवकों का उत्साह देखने योग्य था। दूसरे दिन ज़िले भरमें एक बिजली सी दौड़ गयी। तिलकभूमि में दृश्य देखने वाले अच्छी तरह जानते

होंगे कि वे कैसे चहल पहल के दिन थे । वे कैसे परिक्षा के दिन थे— इधर यह उत्साह और उधर ५ दिसम्बर को होने वाली स्वयंसेवक व सदस्यों की महती सभा की चर्चा, एक अजीब लहर थी । इधर रोज अखबारोंमें किसी न किसी के पकड़े जाने की खबर आती ही रहती थी । वालन्टियरों के फार्म छपाये गये नाम धड़ाधड़ आने लगे । जिलाधिकारी घबराने लगे, हम लोगों पर सख्त नजर रक्खी जाने लगी । आज पं० जवाहरलाल पकड़े गये, आज पं मोतीलाल जी पकड़े गये, आज बा० पुरुषोत्तम दास टण्डन गये, आज गौरीशंकर मिश्र गये, अब पं० श्यामलाल नेहरु की बारी आई, आज पं०मोहनलालनेहरु लद गये, आज कमाल-उद्दीन जाफरी पहुंच गये । आज उसका नम्बर आया, आज इसका नम्बर है—यह होता रहा । इस से पूर्व पंजाब में ला० लाजपतराय आदि पकड़े जा चुके थे ।

आज ता० २९ नवंबर है, दुपहरके समय सरदार हरनामसिंह कोतवाल अपने दूतों सहित "तिलक भूमि" की ओर झपटे चले आ रहे हैं । हम ने मनमें सोचा कि आज शायद हम लोगों का ही नम्बर है – कोतवाल साहबने आकर गवरमेंट के हुक्मनामे की नकल हमको दिखादी । मेरे, बा० बुलाकी रामजी के जनाब फखरूद्दीन फारूखी साहब के हस्ताक्षर होगये, मैंने इस हुक्म नामे की पुश्त पर लिखा कि सरकारकी इस कारवाई से राजा और प्रजा में असन्तोष बढ़ेगा । बा० बुलाकीराम जी, फारुखी जी ने भी इसी प्रकार के नोट लिखे ।

गवरमेंट के इस चैलेंज को यू०पी० प्रान्तिक कांग्रेस कमेटी ने किस धीरता वीरता से स्वीकार किया इस बात को सब कोई जानता है । खैर अब सरकारी हुक्मनामेपर हमारे बाज़ाब्ता हस्ताक्षर हो गये तब हम लोगों में खलबली पड़ गई । मुण्डे

मुण्डे मतिर्भिन्ना, के अनुसार नाना भाँति के विचार प्रस्तुत हुए। मैंने जो नोटिस निकाला था कि बर्तमाम दशा पर विचार होगा। स्वयं सेवकों का संघटन होगा,— प्रवेश टिकिटों द्वारा होगा। टिकटों के विषय में परस्पर मद्‌भेद था। सब को आंखें ता० ५ की सभा की ओर लग रही थीं। लोगों को सन्देह हो गया था कि फौज आयगी, गोलियां चलेंगी, खून खराबी होगी,— पर यह अच्छी बात थो कि लोग निर्भय थे— दो चार को छोड़ प्रायः सभी चाहते थे कि तिलक भूमि पर धड़ल्ले से सभा हो। मेरे नोटिस के निकल जाने के पश्चात् बा० बुलाकीराम जी व जनाब फ़ारुखी जी के नाम से दूसरा नोटिस निकाला गया जिसमें लिखा था कि लोग निर्भय होकर ता० ५ को तिलक—भूमि में आवें और स्वयं-सेवक बनें इत्यादि। इधर सभा का दिन समीप आने लगा और उधर अफ़वाहों की भरमार होने लगी। लोग आ २ कर मुझसे कहने लगे 'सोच लीजिये, लद जाओगे' मैं हंसकर यही उत्तर देता रहा कि सोच लिया, अब पीछे हटना कठिन है, सभा अवश्य होगी। १४४ धारा के लगने की पूरी संभावना होने लगी। उन दिनों डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट कालसी की ओर थे, रोज़ खबर आती थी कि सरकारी आदमी उधर जा रहे हैं, आ रहे हैं, अफसर लोग मशविरा कर रहे हैं, पुलिस-सुपरिण्टेण्डण्ट फेरा लगा रहे हैं, इत्यादि।

इधर ज़ोर की तैयारियां हो रही थीं कि ता० ४ दिसम्बर को सायं काल के सात बजे बा० बुलाकीराम जी, फारुखी जी व मुझपर १४४ की धारा लगा दी गई। ता० ५ को मीटिंग थी, और यह १४४ धारा का नोटिस ऐसे समय में दिया गया कि जिससे हम ता० ५ को कुछ भी न कर सकें, और कुछ

करने की कोशिश करें तो भी कामयाब न हो सके। रात रात में हम कहां कहां जाते, क्या क्या करते, लोग तो ज़िले भर से आने वाले थे। सरकारी नोटिस में यह लिखा था कि देहरादून के इर्द गिर्द ६ मील तक, और राजपुर तथा उसके आसपास पांच पांच मील तक पिकेटिंग, बायकाट, क़ानून भंग, तथा स्वयं सेवकों की भरती- इन चार बातों के लिये सभा करना मना है। इस आर्डर की पुश्त पर फिर सबने लिखा कि १४४ धारा का यह दुरुपयोग है इस धारा के लगते ही शहर भर में सन्नाटा छा गया। इधर कांग्रेस की इज्ज़त का सवाल था। सब कांग्रेस के अधिकारी बा० बुलाकीराम जी की कोठी पर एकत्रित हुये, और आधे घंटे के वादविवाद के पश्चात् निश्चय हुआ कि हर्रावाला में सभा की जाय। यह निश्चय होना था कि फिर क्या था, मास्टर हुलासवर्मा, उनके छोटे भाई धर्मवीर, छोटे फारुखी मुश्ताक अहम्मद साहब ने गली गली घूमकर शहर में मनादी कर दी। शहर में उत्साह व आवेश खूब बढ़ा, किसी को पूर्वादून में भेजा, किसी को पछवादून में भेजा, जिससे कि आने वालों को ठीक हाल मालूम हो जाय, जिधर जिधर से लोग आने वाले थे उन सड़कों पर आदमी भेज दिये—कोई कौलागढ़ की ओर गया, कोई रायपुरी को, कोई माजरे की ओर, कोई राजपूर की ओर, कोई कहीं और कोई कहीं। बा० हंसराज कक्कड रातोरात डोईवाला पहुंचे वहां आकर उन्होंने रोक थाम की। धर्मपुर के कलीराम जी व उनके स्वयंसेवकों ने बड़ा काम किया। ता० ५ को प्रातःकाल की गाड़ी से ला० कुन्दलाल भोगपुरी, हुलासवर्मा रेल से हर्रावाला पहुंचे और स्थानादि का सब प्रबन्ध कर दिया- इधर ग्यारह बजे से एक बड़ी लारी ने आदमियों को

हर्रावाला तक ढोने का नम्बर लगाया। सब लोग आगे पहुंचे। मैं एक बजे तक तिलकभूमि पर ही रहा और जो २ आते गये उनको आगे भेजता गया– लोगों के उत्साह को देखकर मेरे आनन्दाश्रु निकलने लगे, मैं आपे में फूला न समाया– विशेषकर जब कौलागढ़ की स्वयंसेवक मन्डली बड़े शान के साथ पछवादून के स्वयं सेवकों को लेकर आई तब मेरे हृदयोल्लास की सीमा नहीं रही– नवयुवकों का वह समूह जिसने देखा वही 'धन्य धन्य' कहता सुनाई दिया। पं० नारायणदत्त डंगवाल की जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। पछा और उधर के भाई तीस तीस, पैंतीस मील चलकर आये थे, जब उन्होंने सुना कि सभा हर्रावाला में होगी तब फिर चल दिये– टांगेवाले लोगों को बिठा बिठा कर हर्रावाला तक छोड़ आते थे, जब किराया देने लगे तब उन्होंने नहीं लिया। स्टेशन पर भी अजीब दृश्य था, देहरे वालों ने ऐसे दृश्य कम देखे हैं। बड़े ज़ोर से यह अफवाह फैलाई गई कि हर्रावाला स्टेशन पर गाड़ी नहीं ठहरेगी, टिकट नहीं मिलेगा, तो भी सैकड़ों मनुष्य जा डटे, गाड़ी में तिल रखने को जगह नहीं थी– जब यह गाड़ी दो बजे के करीब हर्रावाला पहुंची तब जिधर देखो आदमी ही आदमी दिखाई देने लगे। मैं ठीक एक बजे तिलकभूमि से चल दिया और सड़क २ गया, मार्ग में मनुष्य समुदाय के सिवाय और क्या था? लारी भी अपना काम तेजी से कर रही थी– साठ साठ वर्ष के बूढ़े पैदल ही हर्रावाला की ओर उत्सुकता से आते देखे गये। ओह! मैं इस दृश्य को जन्म-भर नहीं भूल सकता। कहीं आश्वासन देते, कहीं 'शाबास' कहते, कहीं मुस्कराते, कहीं हाथ के इशारे से उत्साह देते दिलाते, मैं दो बजे हर्रावाला स्टेशन पर पहुंचा। पूर्व से

ही गये हुये भाइयों ने सब प्रबन्ध कर रक्खा था, सभास्थान स्टेशन के अहाते के भीतर ही था, स्टेशन मास्टर ने आकर कहा कि 'हमारी हद के भीतर सभा न होनी चाहिये। हमारे अफसर नाराज़ होंगे'। मैंने उत्तर दिया कि अब यहां से उठ नहीं सकते। आपसे कोई पूछे तो आप हमारा नाम कह दीजिये। स्टेशन मास्टार बेचारे भले आदमी थे, चुपचाप चल दिये। मैं अभी कह चुका हूं कि सब प्रबन्ध हुआ था—सभा क्या थी एक अच्छा खासा छोटासा मेला ही हो गया था। जिले भर के लोग एकत्रित थे—पछ्वा, चुहडपूर, रामपुर, सहसपुर, राजपुर, मसूरी, लखवाड़, रायपुर, नांगल, मालदेवता, गूजरवाड़ो, मियांवालो, थानो, मालकोट, भोगपुर, हृषीकेश, माजरा, डोईवाला, कोलागढ़, बड़ोवाला, गलजवाड़ी और न जाने कहां २ के.............. मुझे याद भी नहीं रहा...........लोग एकत्रित हो रहे थे। तीन बजे तक प्रतीक्षा करके सभा को कार्यवाही प्रारम्भ की गई। बा० बुलाकीराम जी अध्यक्ष थे। राष्ट्रिय गान के पश्चात् बाबू जी ने उपस्थित जनता को बधाई दी और सभा का उद्देश्य बतलाया। पश्चात् ला० बानूमल, चौ० हुलास वर्मा, ठा० मनजीतसिंह जी मु० इसहाक हुसैन, फारुखी जी व ठा० चन्द्रसिंह जी, के समयोचित भाषण हुए, पश्चात् मैंने स्वयं सेवकों का प्रतिज्ञापत्र (यू० पी० कांग्रेस का स्वीकृत) पढ़कर सुनाया और अहिंसात्मक गति से काम करने का उपदेश दिया,—स्वयंसेवक अपना नाम लिखाने लगे-सेकड़ों स्वयंसेवकों ने नाम लिखाया, प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर किये, ठा० चन्द्रसिंह जी जिले भर के स्वयंसेवकों के कमाण्डर चुने गये, भिन्न २ कप्तान चुने गये,—और बड़ी शान्ति व उत्साह के साथ कार्य समाप्त हुआ। कोई एक सहस्र स्वयं

सेवकों ने नाम लिखाये होंगे, । 'जय' 'जय' करते लोग लौटने लगे-मैंने ईश्वर से प्रार्थना की कि वह हमको अधिक बल देवे—देहरे में आकर देखते हैं तो यहां जिधर देखो हर्तावाला की ही चर्चा !! 'भाई १४४ टूट गई'—'ऐसा जमघट हमने नहीं देखा' 'खूब हुई'—'सरकार की बात न चली' 'अभी क्या है जब पकड़-धकड़ होगी तब देखना'—ऐसे ऐसे वाक्य सर्वत्र सुनाई दिये । मुझे तो निश्चय था कि मैं पकड़ा जाऊंगा और विश्वस्तसूत्र से पता चला था कि अधिकारी लोग मुझे देहरे के बाहर कहीं पकड़ना चाहते हैं । मेरे शहर में पकड़े जाने से उनको बड़ा अन्देशा था । बहुत दिनों की चिन्ता, जागरण, थकावट आदि के कारण मैं चाहता था कि १ सप्ताह आराम करूं । इस लिये ता० ६ दिसम्बर को सायंकाल की गाड़ी से मैं ज्वालापुर गया । मेरा यह खयाल था कि ज्वालापुर में मुझे वारण्ट मिलेगा । महाविद्यालय ज्वालापुर में एक दिन भी पूरा न हुआ था कि देहरे से पत्र आये जिसमें लिखा था कि 'शीघ्र लौटो'—'काम बिगड़ रहा है' । मैं ता० ८ को रात की १० बजे की गाड़ी से देहरे वापिस आया । ज्वालापुर से मैंने बा० हंसराज के नाम तार दिया था कि आ रहा हूं—मतलब यह था कि सरकारी अधिकारी मुझे पकड़ना चाहेंगे तो रेल पर ही पकड़ कर जेल में भेज देंगे । तार का हाल तो उनको मालूम हो ही जायगा । स्टेशन पर हर ट्रेन पर गुप्तचर रहते ही हैं—एक से मैंने पूछा कि क्या हाल है ? पकड़ धकड़ का हाल कहो ? उसने कहा अमन चैन है । ता० १० को प्रातः काल उठकर आवश्यक विधिसे निवृत्त होकर मैं अपने मिलने वालों से बात चीत करता रहा । ज्वालापुर महाविद्यालय में मैं सबसे कह आया था कि एक वर्ष के लिये जा रहा हूं । दिन भर मिलने मिलाने में ही व्यतीत हुआ । प्रातः ८ बजे

स्टेशन से आते हुए एक परिचित ने आकर कान में कहा 'शास्त्री जी तैयार रहिये, आपके पकड़े जाने का निश्चय हो गया है, कमिश्नर ने मंजूरी दे दी है'—मेरी ओर आंसू भरे नेत्रों से देखता हुआ और हाथ जोड़ता हुआ चला गया। मैंने यह खबर किसी को नहीं बतलाई क्योंकि मैं चाहता था कि मैं शान्तिपूर्वक जेल में चला जाऊं तो अच्छा है—कोई गड़बड़ होजायगी तो हानि होगी। उसी समय मैंने निश्चय किया कि 'उपवास' रखना चाहिये। शायद बा० हंसराज कक्कड़ को छोड़कर इस बात को कोई नहीं जानने पाया। बा० जयन्तीप्रसाद के पिता की मृत्यु होगई थी इस लिये शोक-सहानुभूति के निमित्त सायंकाल चार बजे मैं उनके घर पर गया—शोक प्रकट करने के पश्चात् क्रिमिनल-ला अमेण्डमेण्ट ऐक्ट का मतलब समझने के लिये मैंने क़ानूनी पुस्तक मंगवाई, क़ानून पढ़ा गया, वाद विवाद होता रहा। थोड़ी देर के पश्चात् मैं और जयराम सिन्धी पं० अमरनाथ वैद्य जी के यहां पहुंचे। फिर सिन्धी जी बाहर गये और वापस आकर कहने लगे कि कोतवाल झण्डे मोहल्ले में आपकी तलाश में है, आपके पकड़े जाने की खबर है, फिर वे कांग्रेस में गये और खबर लाये कि कोतवाल कांग्रेस में भी होगया है। फिर क्या था? मैंने वैद्य जी से छुट्टी ली, वैद्य जी ने कहा 'सन्देश' मैंने उत्तर दिया लिख देंगे जल्दी क्या है?

बस ईश्वर का नाम लेकर मैं चल दिया। जयराम सिन्धी, मा० रामस्वरूप आदि कई सज्जन मेरे साथ हो लिये। तिलक-भूमि में पहुंच कर पता चला कि कोतवाल आये थे वालण्टियर का फार्म मांगते थे, पीछे से बा० हंसराज कक्कड़ से पता चला कि कोतवाल मोटर लेकर आये थे, मोटर दूर खड़ी करके आये थे, त्रिलोकीसिंह पूछने लगा 'शास्त्री जी

कहां हैं'—जब मैं वहां न मिला तब वे मेरी तलाश में बाज़ार में गये — ख़ैर तिलक भूमि में पहुंचकर दस बारह मिनिट भी न होने पाये थे कि कोतवाल अपने नायब सहित टांगे पर बैठकर आये। मैं कुटिया में था, बाहर आया, कोतवाल ने दूर से ही हाथ के इशारे से बुलाया और कहा 'शास्त्री जी! आइये'–और आप टांगेमें ही बैठे रहे। मैंने पहले तो यह खयाल किया कि इस गुस्ताखी का यही उत्तर हैं कि कुछ भी उत्तर न दिया जावे और जब तक वह गाड़ी से उतर कर भीतर तिलक भूमि में न आवें तब तक ध्यान न दिया जाय पर पीछे से बेचारा भय के मारे दूर से बुला रहा होगा, स्वयं चले जाने में कोई हानि नहीं है--यह सोचकर भगवान् का स्मरण किया 'वन्देमातरम्' की ध्वनि की, और कोतवाल के पास सड़क पर पहुंचा। मैंने कहा वारण्ट दिखाइये। वारण्ट देखने दिखाने में दो एक मिनिट लगे होंगे। इतने में सैकड़ों मनुष्य एकत्रित होगये और चिल्लाकर कहने लगे 'शास्त्री जी! दस मिनिट ठहरिये हज़ारों लोग आ रहे हैं,-- मैंने कहा 'नहीं अब चलने दो', हमारा टांगा चल दिया–बा॰ बुलाकीराम जी की कोठी के सामने होकर जो मार्ग जाता है उसी मार्ग से हम जेल की ओर चल दिये–लोगों ने दूसरे मार्ग से आकर फिर घेर लिया। जेल के सामने आने पर मैंने गाड़ी से उतर कर और पीपल के चबूतरे पर खड़े होकर लोगों को शान्तिसे काम करने व दृढ़ रहने का उपदेश दिया। उस समय की लोगों की दशा वर्णन करने के लिये मेरे पास शब्द नहीं हैं--लोगों के उत्साह का अतिरेक देखने योग्य था। डुभालवाले के एक लड़के ने कहा ' हम भी आपके साथ चलेंगे,–लोगों ने कहा हम भी आपके साथ चलेंगे! बात चीत में दस बारह मिनिट गये होंगे–इतने में जेल का फाटक

खुला, मैं भीतर गया, फाटक बंद हुआ, मैंने फाटक के भीतर खड़े होकर फिर कुछ उपदेश के शब्द कहे-थोड़ी देर पश्चात् दूसरा फाटक खुला, वह भी बन्द हुआ, और मैं भीतर जा पहुंचा-पहले फाटक के भीतर एक नंबरदार ने मेरी तलाशी लेनी चाही, पर जेलर ने कहा, ये महाराज हैं इनकी तलाशी नहीं होगी-वह नंबरदार भी चकित रह गया-खैर इस तरह पहली वार ठाठ बाट के साथ हमारा जेल मे प्रवेश हुआ। बाहर लोग बहुत देर तक 'बन्देमातरम्' 'महात्मा गांधी की जय' और न जाने किस किस की जय बोलते रहे। भीतर जाकर जेलर ने मुझे एक छोटी सी बारीग दिखाई, मैंने कहा इससे बड़ी कोई बारीग हो तो उसमें मुझे आराम मिलेगा, मुझे टहलने की आदत है। दूसरी एक बड़ी बारीग थी उसमें मैं चला गया, दरवाजा बन्द हुआ, ताले पड़ गये। इधर भगवान् सूर्यनारायण अस्ताचल को जारहे थे मैंने हाथ जोड़कर कहा भगवन् जिधर जा रहे हो उधर मेरा समाचार पहुंचा देना और प्रातः काल सब मेरे परिचितों का समाचार लेते आना।' मैं सन्ध्यावन्दन में लग गया-परमात्मा का अनुग्रह समझा कि उसने आज ऐसी शुभ घड़ी दिखाई--इस तरह देहरादून में प्रथम प्रथम मुझ से ही धरपकड़ व जेलप्रवेश का सूत्रपात हुआ—

२ — जेल में पहिली रात्रि

सन्ध्या वन्दन के पश्चात् टहल रहा था, इतने में बा० बुलाकीराम जी आये और कुशल मङ्गल पूछ कर चले गये, थोड़ी देर के बाद जाइएट मैजिस्ट्रेट हरचरन रोडर साहब आये, मेरा नाम धाम पूछने लगे—उन्होंने कहा कि ता० १३ को

आप का अभियोग होगा, आप चाहें तो किसी वकील को कर लीजिये।

मैं — मैं वकील नहीं करूंगा, उसी समय जो कहना होगा कह दूंगा। आप मेरा अभियोग कहां करेंगे? जेल में या खुले कोर्ट में?

जाइन्ट मैजिस्टेट — आप कहां चाहते हैं?

मैं — खुले कोर्ट में।

जाइण्ट मैजिस्टेट — वहां आप के चेले आराम से काम न होने देंगे।

मैं — नहीं, सब शान्त रहेंगे।

इस बात चीत के बाद चलते समय साहब बहादुर ने सिर से टोप उतार कर नम्रतापूर्वक 'गुडबाइ' किया और चले गये। इतने में बाहर से भोजन आया। भोजन को नमस्कार कर कुछ अलग रक्खा कुछ खाया कुछ छोड़ दिया, वहां खाया किस से जाता, ध्यान ही और तरफ था। सोने का प्रबन्ध ज़मीन पर था या मिट्टी की खाट पर था। जेलर ने मुझे तीन नये कम्बल दिये थे, मेरा एक छोटा सा अपना कम्बल था ही, बा० हंसराज कक्कड़ ने एक बड़ा गद्दा भिजवा दिया था। कुछ कम्बल नीचे कुछ ऊपर लेकर लेट गया — मेरा मन विचार सागर में पड़ गया। मन का यह धर्म है कि जब इसको बाह्य जगत् से भीतर बन्द करने का यत्न किया जाता है तब यह बाहर जाने की अधिक चेष्टा करता है। जो लोग प्राणायाम करते रहते हैं उन को इस विषय में अच्छा अनुभव होगा। मेरा शरीर तीन तालों में बन्द था पर मनीराम को बन्द करने की शक्ति किस में है— शरीर वहीं बिस्तरे पर पड़ा रहा पर मनीराम दक्षिण के तमाम [illegible] में हो आये, समस्त भारत में चक्कर लगा

आये, इष्ट मित्रों से मिल आये, देहरे के सब मिलने वालों के घर पर हो आये और न जाने कहां कहां गये पता नहीं – जेल के बाहर वालण्टियरों के झुंड आकर 'वन्देमातरम्', की गर्जना करते हुए मुझे सचेत कर जाते तब मेरे मबीराम जेल में वापिस आते थे ---- हमारी तिलकभूमि जेल से बहुत समीप है – वहां रात्रि को ग्यारह बजे तक बड़ी सभा हुई। वहां के जयनाद स्पष्टरूप से जेल में सुनाई देते थे। जब कुछ नींद आने लगी तब मैंने फिर भगवान का ध्यान किया और निश्चय किया कि धीरता गम्भीरता से अभियोग में योग देना चाहिये ----- निर्भयतापूर्वक अपना वक्तव्य कह डालना चाहिये।

कुछ देर नींद आई, पर बीच बीच में नम्बरदारों की चिल्लाहट जगा देती थी। कभी मेरा वार्डर आकर 'शास्त्री जी' कहकर पुकारता था और जब मैं 'क्या है' पूछता तो वार्डर यह कहकर चल देता कि 'कुछ नहीं' 'सो जाइये'– मैं मन में सोचता कि इसने वृथा तंग किया। दूसरे दिन वार्डर ने कहा, कि क्या करें इस तरह जगाने का हुक्म है। मैंने उत्तर दिया अच्छी बात है। नम्बरदार लोग रात भर चिल्लाते रहे कि "एक–दो तीन...'ताला, जंगला, लालटैन, सब ठीक है साहब, नं०-१-२-३,” प्रातः काल ४ बजे मैं अपने बिस्तरे पर बैठ गया, ध्यान करता रहा—५ बजे भीतर हो शौच से निपट कर हाथ धोकर टहलता रहा। सबकी बारीगें खुली पर ६॥ बजे तक मेरी बारीग नहीं खुली। सब कैदी जब अपना सब कार्य कर चुके और अपने अपने काम पर भेज दिये गये तब वार्डर ने आकर मेरी बारीग खोली। मैं बाहर गया दस मिनट में ही स्नानादि से निवृत्त होकर फिर अपने स्थान पर आया, फिर वार्डर ने मुझे बन्द किया— सन्ध्या करते करते ७॥ बजे— इस तरह जेल में मेरी

प्रथम रात्रो व्यतीत हुई — इस तरह जेल में प्रथम सूर्योदय देखा ——

३—साहब आरहे हैं।

मैं गीता का पाठ कर रहा था,—इतने में जोरसे आवाज़ आई 'साहब आरहे हैं'—यह आवाज़ बाहर के फाटक से गेटमैन ने दी थी। जिससे यह मतलब था कि भीतर के वार्डर लोग ठीक ठीक अपने काम पर रहें। साहबसे मतलब 'जेल–सुपरिण्टेण्डण्ट' से है आज रविवार का दिन था, रविवार के दिन साहब नहीं आते। वह छुट्टी का दिन माना जाता है पर मेरे कारण उनको आना पड़ा। मैं जिस बारीग में था वह ६२ फुट लम्बी और १४ फुट चौड़ी थी। भूतनाथ की तरह मैं अकेला ही इसमें रहता था। ख़ैर—साहब आये, साथ जाइण्ट मैजिस्ट्रेट भी थे। आते ही साहब बोले Come along Mr. Shastri शास्त्री जा आइये। This is more than enough for one man यह बारीग एक आदमी के लिये आवश्यकता से अधिक स्थान है। मैंने कहा, नहीं मुझे इसमें ही आराम है। मैं जहां था वह बारीग दरवाजे के पास थी और आते जाते सब कैदी मुझे देख सकते थे। मैंने साहब से कहा मुझे पुस्तकें मगानी हैं, पत्रादि भी लिखने हैं। उत्तर मिला कि आप धार्मिक पुस्तकें रख सकते हैं, पत्र लिखिये पर मैं देखकर भेजूंगा। मैंने कहा बहुत अच्छा।——साहब चले गये—

अब लोगों से मिलने का नम्बर आया। बाबू बुलाकीराम जी मिले, फिर बबकड साहब आये–आते ही आपने कहा दास पकड़े गये'। मेरी डाक इनके पास ही थी। पत्रादि दे कर उत्तर मैंने लिखा दिये,–फारुखीजी,मु० इसहाकहुसैन,हुलास

बर्मा, ला० कुन्दनलाल, ला० बानूमल, पं० द्वारकानाथ रैना, ला० उग्रसैन जी रईस, पं० ओङ्कार नारायण जी, ला० शङ्कर लाल जी, वद्य पं० अमरनाथ जी और बहुत से अन्य सज्जन मिले–, इसको प्रेमसंमेलन कहें, जेलसंमेलन कहें या क्या कहें, प्रतिदिन भीड़ रहती रही। जो मिल सके वे अपने को कृतार्थ समझकर लौट जाते। जो मिल न सके वे दुखी हो कर लौट जाते। बेचारे नैशनल स्कूलके छात्र निराश ही रहे। सारा स्कूल का स्कूल मिलने के लिये चला आया, जेलर भी क्या करता? लाचार पांच मनुष्यों—पं० भूदेवशर्मा आदिकों को मिलने दिया। मैंनेअपना सन्देश देदिया कि 'दशहज़ार स्वयं सेवक भरती करो'—

मिलने वालों से बाहर के लोगों के सहानुभूति के सन्देश बराबर आते रहे, ज़िले भर में विचित्र लहर फैल गई, देवियों में अनुपम उत्साह संचरित हुआ, छात्रों में आवेश व उत्साह बढ़ा इत्यादि समाचार मन को उल्लास देने वाले थे। जेल के भीतर कैदियों को जब मेरा पूरा समाचार मिला तब वे भी प्रेम प्रकट करने लगे। वे मौका देखकर मेरे बारीग के पास आने का यत्न करते थे और यत्न सफल न होनेपर दूर से ही हाथ जोड़ लेते थे। इनमें से नाम से मुझे प्रायः सभी जानते थे। मैं भी दस पांच मुसलमान कैदियोंको जानता था। इनमें से दो चार पहले खिलाफत के स्वयंसेवक रह चुके थे इस समय ११० धारा में धरे गये थे। जेलर से लेकर साधारण कैदी तक बड़े आदर से व्यवहार करते थे। मुझे पीछे से विदित हुआ कि जिस दिन मैं पकड़ा गया उसके दूसरे दिन अर्थात् रविवार को नायब जेलरोनी ने मेरे लिये फाका रक्खा था और ईश्वर से प्रार्थना की थी कि मैं शीघ्र ही जेल से मुक्त हो जाऊं। पांच पैसे भी अपने देवता के नाम पर चढ़ा दिये

थे। यह समाचार मेरे लिये आल्हादकारक था। एक मुसलमान देवी और मेरे लिये यह हितकामना, एक अपूर्व दृश्य था। नायब जेलर ने मुझे बुलाया और रजिस्टर में मेरे विषय में सब कुछ लिख लिया। नाम, पिता का नाम, स्थान, आयु, शरीर के विशेष चिन्ह, कपड़ा लत्ता, पोथीपत्रा, सब कुछ लिख लिया। पीछे से कहा कि अपने बायें हाथ के अंगूठे की निशानी लगा दीजिये। मैंने कहा बेपढ़ेलिखे मनुष्यों के लिये ऐसा रिवाज़ है, मैं ऐसा नहीं कर सकता। थोड़ी देर तक मीठी हुज्जत होती रही और मैंने अंगूठे का निशान लगा दिया। उमर भर में यह पहला ही मौक़ा था जब कि गंवारों की तरह अंगूठे का निशान देना पड़ा। यहां से निमट कर मैंने १६ पत्र लिखे और जेलर साहब को दे दिये।

मैं यह बतला चुका हूं कि यह ध्यान रक्खा जाता था कि कोई कैदी मेरे बारीग के पास आकर मुझ से बात चीत न करने पावे, मैं अकेला अपनी बारिग में पड़ा रहता, कभी पुस्तक देखता, कभी टहलता, थकने पर फिर पुस्तक लेता, इसी तरह दिनकटी करता था। रविवार को दिन के दो बजे डाक्टर आये, मुझे बुला ले गये, मुझे तोला गया, वजन ११० पौण्ड हुआ, तनदुरुस्ती के खानेमें मुझे 'अच्छा' लिखा गया। मेरे लिये भोजन अलग बनता था क्योंकि मैं अभी हवालाती था, बिसोला (बदायूं) का एक ब्राह्मण पाचक भोजन बनाता था।

अध्ययन के ग्रन्थों में गीतारहस्य, उपनिषद्, शाङ्करभाष्य तथा बा० उग्रसेन जी की भेजी हुई दो अंगेजी पुस्तकें थीं। सोमवार का दिन प्रायः इसी तरह गया। इस दिन भी बहुत से लोग मिले, आज रात्रि को दो बजे तक बैठ कर मैंने अपना स्टेटमेंट (बयान) तैयार किया।

४–मेरी किस्मत का फैसला।

मङ्गलवार का दिन—प्रातः काल ही बा० बुलाकीराम जी व बा० हंसराज कक्कड़ मिले–मैंने स्टेटमेण्ट टाइप करने के लिये दिया। आज जेल में अजीब दृश्य था। मामूली तौर पर सबको ग्यारह बजे ही भोजन दिया जाता है पर आज दस बजे ही सबको भोजन दे दिया गया और बारोगों में ताले पड़ गये–सब कैदी बन्द होगये। जेलर आकर कह गये कि आपका मुकद्दमा जेल में ही होगा, शीघ्र भोजन कर लीजिये–मालूम हुआ कि जेल के चारों ओर बाहर गारदें खड़ी हैं–ऐसा प्रबन्ध हो रहा था मानो किसी 'बगावती' आदमी से पाला पड़ा है। मैंने भोजन किया, पर उत्सुकता में अच्छी तरह नहीं खा सका। भगवान् का ध्यान किया कि वह मुझे बल देवे। इतने में मेरी बारोग का दरवाजा खुला–मैं क्या देखता हूं कि जेलरसाहब व पांच सिपाही बाहर खड़े हैं। जेलर साहब ने कहा 'महाराज चलिये'। मैं बाहर आया और पांचों सिपाहियों ने मुझे घेर लिया और हम सब इजलास में पहुंचे। मैं थोड़ी देर खड़ा रहा, पीछे एक बेंच पर बैठ गया, बीस मनुष्य दर्शकरूप में भीतर आ गये थे—शेष को नहीं आने दिया। ठा० चन्द्रसिंह सम्पादक नार्दर्नस्टार व नव-भारत, पं० चन्द्रौला जी एडिटर गढ़वाली, प्रेस के प्रतिनिधि थे। बा० बुलाकीराम, मि० नवकली, मि० कक्कड़, बा०चण्डी-प्रसादसिंह, ठा० मनजीतसिंह, पं० दिनकर शर्मा, लाला कुन्दनलाल भोगपुरी,—और कई भाई उपस्थित थे। मैं अपना टाइप किया हुआ स्टेटमेण्ट देख रहा था, इतने में सरकारी

वकील मि० तलाटी आये और अदालत का काम प्रारम्भ हुआ। कोतवाल सरदार हरनामसिंह, ठा० त्रिलोकीसिंह, नायब अबदुल रसीद, हर्रावाला ग्राम का पटवारी ग्यानस्वरूप, तारघर का अंग्रेज तारबाबू इनकी गवाहियां हुईं—जो जो बातें मुझ से पूछी गईं मैंने सब का उत्तर दिया। पश्चात् मैंने अपने बयान पढ़े। मेरे बयान को सुनकर साहब बेचैन हुए। मुझ से पूछा गया कि आप कसूरवार हैं या नहीं Guilty or not guilty मैंने उत्तर दिया कि— not guilty according to Moral Proccedure Code मैं नैतिक शास्त्रके अनुसार अपराधी नहीं हूं। इससे मि० हरचनरोडर खिज गये और मि० तलाटी से पूछने लगे कि क्या ऐसा भी कोई क़ानून है या क़ानून की पोथी है, इस पर बा० बुलाकीरामजी ने अच्छा उत्तर दिया।—

कुछ देर क़ानूनी पोथियोंके पन्ने लौटने के पश्चात् साहब बहादुर ने मुझे सपरिश्रम १ वर्ष का कारावास और दोसौ रु० दण्ड और रुपये न दे सकने के बदले में तीन मास और सपरिश्रम कारावास का दण्ड सुनाया। मैंने स्पष्ट कह दिया था कि मैं रु० नहीं दूंगा। जी में आया था कि कह दूं कि सरकारी खज़ाने से लेलों वह भी मेरा ही है। पर इस तरह खिजाना अनुचित समझ कर चुप रहा मैंने मनक एक वर्ष के लिये तैयार किया था केवल फरक यह रहा कि साहब ने तीन मास अधिक कर दिये। मैं अपनी इस बड़ी परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ या नहीं इस बात के निर्णय करने का अधिकार मुझे नहीं है— सब भाई प्रेमपूर्वक मिले 'हम भी शीघ्र आते हैं' ऐसा कह कर चल दिये: ठा० मनजीतसिंह ने पूछा 'सन्देश'? मैं ने कहा 'काम करो, 'अड़े रहो' किसीने पूछा 'और कुछ' मैंने कहा 'दस हज़ार स्वयं सेवक भरती

करो' । एक ने और पूछा 'और कुछ'—मैंने मुस्कराते हुए कहा, 'हां अब आप लोग जाइये और आराम कीजिये'—लोग इधर चले गये । उधर जिस ठाठ से मैं जेली अदालत में आया था उसी ठाठ से अपने स्थान पर पहुंचाया गया। सिपाही कह रहे थे कि 'दुनियां में इन्साफ नहीं रहा'—जेलर बेचारा भी दुखी था । सभी कैदी दुखी थे। मैं फिर अकेला रह गया— बाहर से 'बन्देमातरम्' 'अल्ला हो अकबर' की घोर गर्जना सुनाई दी । अब तक बन्द किये हुए कैदी बाहर निकाले गये— अपने अपने काम पर लग गये आज मुझे खबर मिली कि प्रयाग में सारी प्राविन्शियल कांग्रेस कमेटी ही पकड़ी गई—

बाहर बैठे २ जेल की रामकहानियां कितनी वार न सुनी होंगी, कितनी वार न पढी होंगी । पर बाहर सुनने पढ़ने में और साक्षात् चार दीवारी के भीतर पहुंच कर अनुभव करने में बहुत अन्तर है । कोई आकर मुझे ढ़ाढ़स देता था, कोई सहानुभूति प्रकट करता था । मैं उन से यही कहता रहा कि "घबराइये मत देशसेवा का मार्ग ही ऐसा कठिन है'— अब तक मैं हवालाती समझा जाता था, पर अब कैदी हो गया मैंने अपने मनीराम को समझाना प्रारम्भ किया 'मनीराम अब तुम जेल की पोशाक, कड़ा हसली पहनने के लिये तैयार हो जाओ, हाथ में तसला लेने के लिये सिरपर लाल टोपी डालने के लिये तैयार रहो' धीरे २ मनीराम कहने लगे अच्छी बात है, ऐसी जल्दी क्या है, देखो, अभी क्या होता है । सायंकाल सन्ध्यावन्दन के पश्चात्, थोड़ा सा भोजन किया । और मैं सोगया, निद्रा खूब आई पर वार्डर ने बीच में ही जगाकर निद्रा का भङ्ग कर दिया। फिर नम्बरदारों की "एक.

दो-तीन-चार" की आवाज़ ने प्रातः काल तक सोने नहीं दिया। शय्या पर पड़ा पड़ा सोचता रहा-कभी सम्बन्धियों का खयाल आता था; कभी मित्रों का—फिर जेल में पड़े हुए देशभक्तोंका—जिस जेल में लो०तिलक होआये क्या वह जेल-खाना जेलखाना है, जिसमें लाला लाजपतराय, आदि गये, जिस में दास पड़े हैं, नहरु खानदान का खानदान पड़ा है—जिसमें सहस्रों हमारे जैसे भाई पहुंच चुके हैं क्या वह जेल-खाना जेलखाना है ?—ऐसे ऐसे विचार आते रहे-इतने में पचासा बजा, प्रति दिन की भांति ७ बजे तक अपने आवश्यक कृत्यों से निवृत्त हुआ। ७॥ बजे साहब आये। मुझसे पूछा अपील करोगे ? मैंने कहा नहीं' ।जाते जाते जेलर से कह गये (dont give him any work) इनको कुछ काम मत दो। मैंने पुस्तकों के विषय में पूछा तो उत्तर मिला-धार्मिक पुस्तकें मंगा सकते हो। साहबने जब जेलर से कहा कि इनको काम मत दो तब वे दूर थे-मैंने वे शब्द सुन लिये थे, मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि काम क्यों नहीं दिया। मैंने सोचा कि आगे जिस जेल में भेजेंगे वहीं काम लेंगे। मेरा अनुमान था कि मुझे बरेली भेजेंगे-जेलर चुप था--सब प्रश्नों का उत्तर यही देता था कि मुझे पता नहीं--आज बाहर के कई पत्र मिले जिस में 'बधाई' आई थी-जेल जाने पर बधाई ! एक अजाब ज़माना आया है ! ! ! जेलर अखबार नहीं दिखाते थे--कई पत्र रोक लिये जाते थे-शारदापीठ के शंकराचार्य श्री १०८ भारतीकृष्णतीर्थ जी का संस्कृत में लिखा हुआ पत्र आज तक मुझे नहीं मिला—

सज़ा होने के बाद भी कई लोग मिले; विशेष कर बा० हंसराज कक्कड, भूदेव शर्मा, ला० कुन्दनलाल भोगपुरी, महाविद्यालय ज्वालापुर के विश्वनाथसिंह शास्त्री व पं० कांञ्चीदत्त

शर्मा मिले—एक दिन सुपरिण्टेण्डण्ट ने पूछा कहां रहना पसन्द करोगे ? मैंने कहा यदि कोई हानि न हो तो देहरा-जेलमें ही राखिये। साहब हड़बड़ा कर बोले It seems you are very popular there are so many demonstrations every day-
इसका अर्थ यह है कि 'आप अत्यन्त लोकप्रिय हैं ऐसा प्रतीत होता है, प्रति दिन इतने जलूस निकलते हैं'— मैंने इसका कुछ भी उत्तर नहीं दिया। एक दिन मैंने शिकायत की कि मुझे चौबीसों घण्टे बन्द रक्खा जाता है, बारीग में सवेरे धूप नहीं आती, जाड़ा बहुत पड़ता है। उसने कहा 'इस तरह कभी बारीगों में कभी नहीं सोये होंगे' - मैंने मुसकराकर कहा 'कभी नहीं' — साहब बोला (सरकार का विरोध करने का यह परिणाम है This is the merit of opposing the sarkar इसका उत्तर भी मैंने कुछ नहीं दिया।

५—तैयार हो जाइये।

ता० १७ का दिन, शनिवार, सायंकाल ४। बजे होंगे—जेलर ने आकर कहा कि 'तैयार हो जाइये'—मैंने कहा कहां के लिये, उत्तर मिला 'पता नहीं'—मैंने जलदी जलदी सन्ध्या करली, इतनेमें भोजन आया और जैसे तैसे मैंने कुछ खालिया। ध्यान बाहर की ओर था,...नम्बरदार ने आकर बिस्तरा बान्धा, किसी ने कुछ सामान उठाया,—जेलर आये और कहने लगे 'चलिये देर न कीजिये, मैंने कहा 'कहां भेजियेगा'—फिर उत्तर मिला 'पता नहीं'—पहला फाटक खुला, दूसरा खूला, मैं बाहर आया। फिर मैंने जेलर से पूछा कहां भेजोगे तब कान के पास आकर, आ—हि—स्ता, आ—हि—स्ता बोले "मु—रा—दा—बा-द।" मन में बड़ा हर्ष हुआ कि मुरादाबाद

आ रहा हूं। इधर हर्ष हुआ पर वह हर्ष एक ही या दो मिनिट रहा होगा। क्योंकि मुझे खयाल आया कि जेल की वर्दी व बेड़ी अब पहननी पड़ेगी। अब तक और बात थी! अब जरूर पक्के कैदी बनोगे—बाहर देख रहा हूं तो एक मोटर नज़र आई, उसमें एक अङ्गरेज व दो सीपाही बैठे थे। एक जमादार मेरा वारण्ट लेरहा था—वारण्ट लेने के बाद मैं उस अङ्गरेज ड्राइवर (हिल्टन) के पास बैठ गया। इतने में लाईन इनस्पेक्टर आया—सब के साथ हाथ मिला कर इनस्पेक्टर से हाथ मिलाया—इनस्पेक्टर ने सविनय कहा I am very sorry for you, you took things upon yourself. 'मैं आपके लिये बहुत दुःखी हूं। आपने अपने सिर पर सारा मामला ले लिया'। जेलर, नायब जेलर, लेटर-बाबू, डाक्टरबाबू सब के साथ 'शेक हैण्ड' हुआ और हमारी मोटर हर्रावाला की तरफ चली। उसी हर्रावाला की तरफ जहां कि तारीख ५ को धूम धाम हुई थी। वहीं धूम धाम हुई, वहीं जारहा हूं, वहीं से मुरादाबाद जाऊंगा। विचित्र संयोग है! मोटर ड्राइवर से इनस्पेक्टर कह गया कि जलदी ले जाओ, ड्राइवर कहता था कि मैंने हर्रावाला की सड़क देखी नहीं।

एक बात रह गई-इधर फाटक पर जब जमादार ने मुझे देखा कि मेरे बेड़ी नहीं है तब वह हैरान हुआ कि यह कैसा कैदी? अपने कपड़े पहन रहा है, बेड़ी वगैरा कुछ नहीं-उसने जेलर से कहा कि इस तरह बिना बेड़ी हथकड़ी के मैं इनको नहीं ले जा सकता, लाइन इनस्पेक्टर से कहलवाइये, जेलर ने कहा कि 'ये ऐसे ही जायंगे'—खैर टेलीफोन से लाइन इनस्पेक्टर से पूछा गया-वह दौड़ता आया और उसने कहा कि 'नहीं इनके हथकड़ी बेड़ी नहीं पड़ेगी ऐसे ही

जायंगे'। पीछे शेरसिंह जमादार ने जब मेरा नाम सुना तब वह लज्जित हुआ, कहने लगा कि मुझे मालूम नहीं हुआ था कि आप ही शास्त्री जी हैं। इनस्पेक्टर ने दिन में कहा था कि अफीम का सन्दूक मुरादाबाद जायगा। मुझे क्या मालूम था कि आप जायंगे।" इत्यादि।

एक दिन शहर में हल्ला हुआ कि शास्त्री जी एक्सप्रेस से भेजे जा रहे हैं, यह सुनकर सैकड़ों मनुष्य देहरा स्टेशन पर पहुंचे। इस भीड़भाड़ को रोकने व हल्ले गुल्ले से बचने के लिये अधिकारियों ने मुझे हर्रावाला स्टेशन पर बैठाना विचारा—

मोटर में अङ्गरेज ड्राइवर हिल्टन से स्वराज्य विषयक खूब बात चीत हुई।— आखिर हम हर्रावाला स्टेशन पर पहुंचे। इस ठाट बाट को देखकर-मोटर, साथ इधर उधर पुलीस, अङ्गरेज ड्राइवर, यह सब देख कर लोग इकट्ठे हुए। मि० हिल्टनने हाथ मिलाया और कहा They wont detain you much longer, you wouldcome backsoon. आप बहुत देर जेल में न रहेंगे, शीघ्रही वापस आवेंगे। 'गुडबाई' कह कर वह चल दिया।

थोड़ी देर में मेरी गाड़ी आई- 'बन्दे मातरम्' की गर्जना सुनाई दी - क्या देखता हूं कि बा० हंसराज, ला० कुन्दनलाल कलईराम आदि बहुत से सज्जन मेरे मिलने के लिये आये हैं। बहुत हर्ष हुआ, सुखदुःख की कहानी कहते- सुनते हरिद्वार पहुंचे— हर स्टेशन पर कोई न कोई मिलाही। यदि मुझे देहरे स्टेशन पर चढ़ाया जाता और लोगों को खबर मिल जाती तो निःसन्देह देहरावासी सहस्रों की संख्यामें एकत्रित होते। ला० कुन्दनलाल हरिद्वार से जुदा हुए— बा- हंसराज कक्कड़ ठेट मुरादाबाद तक पहुंचे—और रात्रि को १२॥बजे

मुझे जेलमें छोड़कर और सवेरे फिर आने का आश्वासन देकर चले गये...................... इस तरह देहरादून छूटा, देहरादून से मुरादाबाद में आ पड़े......

इति देहरादूनपर्व

——*——

(मुरादाबाद पर्व)

१—नया जेल, नई बातें ।

मुरादाबाद स्टेशन से जब जेल पर पहुंचे तब वहां के सन्त्री ने 'हुकम दर, 'हाल्ट' बोल दिया हमारे जमादार ने भी 'फ्रेंड' कहा और हम सब तांगे पर से उतर खड़े हुए । जेलर साहब को इतला दी गई और वे तुरन्त आगये -- रात के एक बजे का समय, सख्त जाड़ा पड़ रहा था, मुझे नंगे सिर नंगे पैर देख कर जेलर साहब को आश्चर्य हुआ । झटपट फाटक खोला गया, मेरी पहुंच की रसीद दी गई और जेलर साहब मुझे भीतर लेगये । एक वृक्ष के नीचे एक अंगीठी धधक रही थी, वहां मुझे बिठा कर कह गये कि मैं आपके लिये दुग्ध का प्रबन्ध करके शीघ्र आता हूं । मैंने कहा जेलर साहब मुझे किसी स्वच्छ खुली बारीग में रख दीजिये । जेलर बोले और तीन असहयोगी जिस बारीग में हैं उसी में आपको रख दूंगा। यह कह कर गये और पांच मिनिट में वापिस आये और कहा, 'चलिये' — मैं पीछे पीछे चल दिया, एक चौक में एक बारीग खुली, उसीमें मुझे लेगये । उसमें पहुंचते ही हमारे असहयोगी भाई झटपट उठ खड़े हुए -- क्या देखता हूं कि उनमें हमारे पुराने मित्र बा० बनवारी लाल एडिटर रहबर भी हैं··· बड़ी

खुशी हुई। दूसरे असहयोगी थे खिलाफत के प्रेसीडेण्ट सैयद् ज़फर हुसेन एम्० ए०, तीसरे महाशय थे जनाब अशगाफ साहब । उनको यह खुशी हुई कि एक साथी और बढ़ गया, मुझे खुशी हुई कि मैं अकेला न रहा। ये सब भाई दो दो वर्ष के लिये लद गये थे। जेलर साहब ने तीन नये कम्बल ला दिये। दूध पीकर सोना चाहता था पर नींद कैसे आवे दो घण्टे परस्पर सुख दुःख की कहानी सुनते सुनाते लग भग ३-३॥ बजे निद्रा देवी ने आघेरा।

प्रातः नित्यविधि के पश्चात् मैं सोच रहा था कि मेरी सख्त कैद है और मेरे भाइयों की महज़ कैद है शायद मुझे इनके साथ न रक्खेंगे। रविवार के दिन प्रायः साहब सुपरिण्टेण्डण्ट नहीं आते पर आज मेरी वजह से आगये। इनका नाम बी० एन्० व्यास है, बड़े ही भद्र पुरुष हैं, जेलर साहब का नाम है अहसान अली, ये भी सौम्य पुरुष हैं, हेड वार्डर भी हंसमुख और मिलनसार है।

सुपरिण्टेण्डण्ट ने आकर पूछा कि कब आये मैंने कहा रात को, मैंने यह भी कहा कि मेरे बहुत से मित्र मिलने के लिये आये हैं, कृपया मिलने का प्रबन्ध कर दीजिये। उन्होंने मेरा टिकिट मंगा कर देखा और कहा 'अच्छा'। थोड़ी देर में मैं फाटक पर बुलाया गया और प० शंकरदत्त जी,पं० नाथूराम जी वैद्य, पं० मगलदेव गुप्त, बाबू रामशरण एम० ए०, पं०रविशंकर जी,बा० हंसराज कक्कड़ आदि बहुत से सज्जन मिले। मिलने के पहले सुपरिण्टेण्डण्ट ने मेरे सब पूर्व वृत्तान्त संक्षेप से सुने। मैंने कह दिया कि मैं पहले महा-विद्यालय का अध्यक्ष था। सब भाइयों से मिलकर मैं लौट आया और आनन्द से रहने लगा। ठीक ११॥ बजे भोजन

आया, यह असली जेल भोजन था। वही मोटी मोटी रोटियां और वही काली दाल आई। लोहे का तसला, लोहे की कटोरी आई। मेरे अपने बर्तन साथ थे उसमें लेकर अन्नदेवता को नमस्कार करके प्रारम्भ में कष्टमय परन्तु परिणाम में सुख-मय भोजन को करने लगा। मेरे दूसरे भाइयों को सुभीता था कि वे घर से मंगा सकते थे व मंगा लेते थे। मैं चाहता तो मैं भी मंगा लेता क्योंकि मुरादाबादमें परिचितों व हितैषियों की कमी नहीं थी परन्तु किसी को कष्ट देना उचित नहीं समझा और मननें ठान लिया कि अपने आप कोई रिआयत नहीं चाहूंगा, जेल वाले अपनी इच्छा से जो चाहें करें। प्रातः काल बड़ी कठिनता से तीन रोटी खा सकता था सायंकाल कभी एक, कभी डेढ़ रोटी खा लेता था क्योंकि गोबी का शाग बहुत ही खराब होता था, निमक के साथ रोटी खा लेता था लग भग १२-१३ दिन यही दशा रही। मुझे काम कुछ भी नहीं मिला, जेलर साहब से पूछने पर विदित हुआ कि ऊपर लिखा गया है वहाँसे जैसा लिखा आवेगा वैसा ही होगा। कभी टहलना, पुस्तकें देखना, बातचीत, जाप आदि में ही हमारा समय व्यतीत होता था। एक दिन साहब से मैंने कहा कि हमारा बहुतसा समय व्यर्थ जाता है। मेरे लिये लिखने के सामानका प्रबन्ध होजाय तो मैं गीता पर कुछ लिखना चाहता हूं। साहब ने जेलरको आज्ञा दी। दुपहरके समय पचास पृष्ठ कीएक कापी सिई-सिलाई आगई,—३-४ घण्टेके लिये दावात कलम भी मिलने लगी, मुझे हर्ष हुआ कि मेरा मार्ग साफ होगया, मेरे साथी देखते के देखते रह गये, मेरा पक्का अनुमान हुआ कि मुझसे कोई काम न लिया जायगा, और हुआ भी ऐसा ही।

इस जेल के जिस चौक में हम रक्खे गये थे, वह खुला

चौक था, और बड़ी चहल पहल रहती थी। यह चौक जेल के मध्यभाग में था अतः चहुं ओर हमारी दृष्टि पड़ती रहती थी - यहां २४ दिन में जेलशास्त्र का तत्त्व पूर्णरूप से ज्ञात हुआ। -- एक दिन अचानक ऊपर से हुक्म आया कि हम लोगों के साथ पोलिटिकल कैदियों का सा वर्त्ताव किया जाय .... फिर क्या था।

भोजन बदल गया, अच्छा मिलने लगा, दूध, घी मिलने लगा, रसोइया मिला, नौकर मिला,— कभी कभी समाचार पत्र भी मिलने लगे — वहां के कैदियों ने उमर भर में हम जैसे कैदी कभी देखे नहीं थे। उनकी दृष्टि में हम लोग देवता थे। विशेष कर मुझसे सभी प्रसन्न थे क्योंकि मैं बहुत ही नियमपूर्वक रहता था। मैंने मन में समझा कि अब सवा साल आनन्द से व्यतीत होंगे, खूब जाप करेंगे, खूब लिखेंगे खूब पुस्तकें पढ़ेंगे। अब सिर्फ दो तीनही कष्ट थे १— रात को बारीग में बन्द होना पड़ता था, २—उसके सामने के छोटे से चौक में ही दिन कटना था, इधर उधर उसके बाहर नहीं जा सकते थे। ३— पत्र व्यवहार के नियम अनिश्चित थे।

ये दिन अहमदाबाद कांग्रेस के थे, वहां के समाचारों के लिये हम बहुत उत्सुक रहते थे— अन्त में सब समाचार मिले। ता० ७जनवरी को अमरोहे के चार भाई १-डा० नरोत्तमशरण, २—वैद्य पं० नाथूराम, ३—ला० बाबूलाल, ४—नवाब जमील अहमद, आगये। ता० ९ को इनका अभियोग भी जेल में हुआ। और इनको भी भिन्न भिन्न समय के लिये कारावास मिला। अब हम चार के आठ हुए। ता० ६ को पं० बालाप्रसाद जी शर्मा मिल गये थे जिससे देहरे के सब समाचार ज्ञात हुए। ता० ८ को बा० उग्रसेन जी रईस

देहरादून मुरादाबाद के दो तीन रईसों के साथ मिले। उनसे काउन्सिल, गवर्मेण्ट की नीति वगैरों के पूरे समाचार मिले। आपसे यह भी मालूम हुआ कि आपने काउन्सिलसे परित्याग पत्र भी दे दिया है। इनके साथ बातचीत से यह स्पष्ट हुआकि हम लोगों के साथ मामूली कैदियों का सा वर्त्ताव न होगा। ता० ११ का दिन प्रातः ३ बजे होंगे, मैं शौच से निवृत्त होकर भगवत्स्मरण कर रहा था. मेरे भाई अभी सो रहे थे— एक नम्बरदार ने अकस्मात् आकर कहा '७ बजे की गाड़ी से से बरेली जाना होगा'। आप सब लोग तैयार रहिये'—उस समय की गड़बड़ी, उत्सुकता, तर्क-वितर्क का अन्दाजा पाठक न लगा सकेंगे— विदित हुआ कि बरेली, लखनऊ, काशी व आगरा ये चार डिस्ट्रिक्ट जेल पोलिटिकल कैदियों के लिये रक्खे गये हैं — हमको यहां घरसा हो गया था, मुरादाबाद जेल घर के तुल्य था— "अब भगवान् जाने आगे क्या होगा" यह सोचते हुये, सबसे मिलते मिलाते— फाटक के बाहर आ गये, गाड़ियों में बैठ गये। साथी लोगों ने स्टेशन तक बराबर "जयघोष" का सिलसिला रक्खा। स्टेशन पर आ-कर क्या देखते हैं कि चहु ओर से मिलने वाले आ रहे हैं। आश्चर्य हुआ कि 'इनको कैसे पता चला'— बड़ी चहल पहल रही। पं० शंकरदत्त शर्मा, बा० रामशरण, और बीसियों भाई थे। मास्टर हरद्वारीसिंह तो बरेली तक साथ गये— इनसे अहमदाबाद के असली हालात सुने। पं०शंकर-दत्त व बा० रामशरण जी से मैंने कहा कि 'आप लोग भी लदने वाले हैं पहले से ही तैयार रहिये'— यही बा० राम-शरण फिर मुझे मई में राय बरेली जेल में मिले। खैर एक सारी गाड़ी हम लोगों ने घेर ली— गाड़ी यथासमय चल दी और देखते देखते मुरादाबाद छूटा— आगे प्रत्येक स्टे-

शन पर कोई न कोई परिचित मिलता ही रहता था। हमको देखने वाले कहते थे कि 'अच्छे कैदी हैं, न बेड़ा न हथकड़ी, न डन्डा'— हंसते खेलते ठीक दस बजे बरेली स्टेशन पर पहुंचे—।

इति मुरादाबाद पर्व

बरेली-पर्व

१—शकुन अच्छा है ?

बरेली स्टेशन पर हमारे स्वागत के लिये सरकार की ओर से पूरा प्रबन्ध था। लाइन इन्सपेक्टर पूरे स्टाफ के साथ स्टेशन पर मौजूद था। हम सब लोग उतरे और फिर दो लारियों में लादे गये—लादे गये इस लिये कह रहा हूँ कि सच मुच असबाब की भांति लादे ही गये थे। बैठने तक को स्थान नहीं था। उसमें खड़े के खड़े ही रहे। जयघोष करते करते जेल के दरवाज़े पर पहुंचे। मार्ग में लोगों की भीड़ थी ही। मेरे मित्र मा० हरद्वारीसिंह स्टेशन से ही पृथक् हुए मैंने उनको सब सन्देश देदिये। जब जेल के दरवाज़े पर आये तो सामने एक टोकरी में सुन्दर डाली लगी हुई दीख पड़ी—मैंने साथियों से कहा 'शकुन अच्छा है'—थोड़ी देर में दरवाज़ा खुला, जेलर बा० पृथ्वीनाथ साहब, नायब देवीदयाल साहब लेटर-बाबू सदानन्दराव आदि सब मिले। दूसरा फाटक खुला, हम भीतर गये,—दूसरे व तीसरे फाटक के बीच के

छोटे आंगन में दस पन्द्रह मिनिट खड़े रहे-फिर तीसरा भी खुला—वहां प्रथम समाचार यह मिला कि पं० हरकरण-नाथ मिश्र लखीमपुर से रात्रि में ही आगये हैं-सेण्ट्रल जेल से बाबा रामचन्द्र, पं० केदारदत्त, पं० बद्रीदत्त पाण्डेय, सेठ निरञ्जनप्रसाद आदि १६ भाई भी वहीं बड़े आंगन में अपने कड़े व हसलियां कटवा रहे थे-खूब एक दूसरे से गले लगाकर मिले। मैंने मुस्कराकर कहा 'हमने आते ही तुम्हारे कड़े कटवा दिये।' ये लोग कड़े कटवाकर अपने चक्कर में चले गये—शेष रहे हम आठ भाई। हमारे टिकिट मुरादाबाद में रह गये थे—अतः जेलर हैरान था कि इनको कहां रक्खा जावे--टिकट देखे बिना फर्स्ट व सेकण्ड क्लास का निर्णय करना कठिन था। पं०हरकरणनाथ, ठा०महावीरसिंह, चन्द्र-भाल जौहरी, स्वा० योगानन्द फर्स्ट क्लास में थे, पं० बद्री-दत्त पाण्डे आदि सेकण्ड में थे। हमारे विषय में मुरादाबाद जेलको तार गया और सायंकाल तक हम हास्पिटल में ही रहे। मुरादाबाद से तार आया कि (१) बा० बनवारीलाल (२) सय्यद जफरहुसैन (३) मु॰ अशफाक ये तीनों पोलि-टिकल हैं शेष 'अनिश्चित' हैं। मैं और मेरे अमरोहे के चार भाई एवं हम पांच'अनिश्चित'रहे पर हमारे नये साहब कर्नल लैन्सले ने तार पर लिखा कि अभी सबको स्पेशल में ही रक्खो--सांयङ्काल को दीवानी बारीग में जहां पं० हरकरणनाथ मिश्र आदि रहते थे, उसमें हम चार भाई रहे शेष हास्पिटल में ही पड़े रहे-दीवानी बारीग क्या थी अच्छा खासा कूप था-इसमें मुझे अच्छा नहीं लगा--वहां और भी असुविधाएं थीं-मैंने व मिश्रजी ने रात को ही सोच लिया कि प्रातः यहां से अन्यत्र जाने का यत्न किया जाय। लग भग ७ बजे होंगे कि बरेली के कलेक्टर मिस्टर स्टब्स आये-- उनसे कहा गया कि

इस कूप सदृश बारिग में हम लोगों का स्वास्थ अच्छा नहीं रह सकता। सुपरिण्टेण्डण्ट करनल लैप्स्ले की सलाह से हम सब लोग हास्पिटल के सुन्दर, विस्तृत, रमणीय स्थान में भेज दिये गये। इसमें सब प्रकार के सुभीते हैं--दो कूप हैं, विस्तृत मैदान हैं, टहलने के लिये सड़कें हैं,—इस ब्लाक में हम स्पेशलवाले ही थे--शेष सैकण्ड क्लासवाले चक्कर में थे।--सरकार को यह ख्याल नहीं था कि इतने लोग जेल में चले आयेंगे--उधर सरकार ने युद्ध का बिगुल बजा दिया और इधर कांग्रेस वालों ने अपना शङ्ख फूंका—देखने योग्य दृश्य था। सरकार ने हम लोगोंके लिये कोई नियम नहीं बनाये थे केवल इतना कर दिया था कि फर्स्ट क्लास वालों को १॥) रु० प्रतिदिन भोजनादि के लिये मिलता था। सेकण्ड क्लास वाले मामूलीकैदियोंकी भांति रहते थे-केवल उनको काम नहीं करना पड़ताथा,कपड़े लत्ते भी अपने रखसकतेथे,और मिलाई पत्र-व्यवहार में कोई भेद नहीं था। सरकार के इस भेदभाव ने आपसमें बड़ी गड़बड़ी फैलाई। सेकण्डक्लास में हड़तालों की धूम रहती थी--इसी खपखानी में बाराबंकी से ४१ और वीर मुसलमान भाई आ पहुंचे---बुलन्दशहर से भी दो भाई आये १—बा० अतरसिंह, २ पं० विश्वशर्मा। ये सब सेकण्ड में ही रक्खे गये। पीछे गवर्मेण्ट को होश आया--एक कमीशन बैठाया गया--इस में मि० स्टब्स कलेक्टर, एक जज, कर्नल लैप्स्ले- इन तीनों ने सब के पेशे वगैरे पूछकर निर्णय किया। उन उन स्थानों के मैजिस्ट्रेटोंने बदला लेने के विचार से बहुतों को 'रद्दीखाते' में डाल दिया था। इस कमीशन से कुछ सुधार हुआ पर फिर भी गड़बड़ी रही। मालिक सेकण्ड क्लास में तो नौकर फर्स्ट क्लास में ऐसी भी घटनाएं हुईं।

सरकार ने सेकण्ड क्लास के लिये फैजाबाद जेल खाली किया और सबको उधर ही भेज दिया।

अब हमारी जेल में सब फर्स्ट क्लास के ही लोग रह गये ईश्वर जाने गवर्मेण्ट ने इस भेदभाव को किस आधार पर स्थिर किया। पर दूरदर्शी गवर्मेण्ट की यह चाल बड़ी विचित्र चाल थी।

हम लोगों की बहुत बार सभाएं हुई, कोई कहता था कि अपने सैकण्ड क्लास के भाइयों से जा मिलो कोई कहता कि मामूली कैदी जैसे रहो, कोई कहता 'मियां पड़े रहो' क्यों आराम से नहीं रहते,-- 'हम फर्स्ट क्लास माँगने नहीं गये थे सरकार ने अपने आप दिया है .... कभी भी एक राय नहीं हुई। मैंने महात्मा गान्धी जी के पास एक पत्र लिखा और पूछा कि आपकी क्या राय है यह भेदभाव उचित है या अनुचित। मैंने अपना समाचार भी लिखा था। जो उत्तर आया वह इस प्रकार है ....

Dear Nardev Shastri,

I am delighted you are annotating the Yita. Do ask for a spinning wheel as a change from the study. I am glad you are with Pt. Harkarannath. I am sure you are both doing greater service being in jail. In my openion there should be no deffe-rentiation between political prisoners.

Yours sincerely

M. K. Gandhi.

Bardoli 1-2-22.

यह पत्र बारदोली से आया जिसका अभिप्राय यह है।

प्रिय नरदेव शास्त्री,

मुझे हर्ष है कि आप गीता पर टीका कर रहे हैं, चर्खा भी मंगा लीजिये। मुझे हर्ष है कि आप पं० हरकरणनाथ के साथ हैं। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि आप दोनों जेल में रहकर अधिक काम कर रहे हैं...मेरी रायमें पोलिटिकल कैदियों में इस तरह फर्स्ट-सेकण्ड आदि भेद नहीं होने चाहियें।

आपका शुभचिन्तक—

एम० के० गान्धी

खैर मुरादाबाद जेल की भांति बरेली में भी दिन आनन्द से कटने लगे, मुरादाबाद में दिनकटी करने का जो कार्यक्रम था वह प्रायः यहां भी रहा, यहां पत्रों का सुभीता रहा, प्रति सप्ताह एक दो पत्र भेज सकते थे। कर्नल लैफ्स्ले बहुत भद्र पुरुष था। वह प्रायः कहा करता था कि मुझे इससे मतलब नहीं कि बाहर सरकार ने क्या किया और आपने क्या किया दो बातों के लिये मैं जिम्मेवार हूं, १—आपकी तनदुरुस्ती २—आपके ऊपर चारदीवारी के भीतर कब्ज़ा—आप चाहें जैसा विचार रखते हों उससे मुझे क्या मतलब? आप आनन्द से रहिये। इस जेल में पश्चिम के तेरह ज़िले के लिये प्रबन्ध था। भिन्न भिन्न जिलों के जेल के डेलीगेटों से मिलकर बहुत अनुभव हुआ। हम लोगों में कितना स्वार्थत्याग है, क्या २ त्रुटिएं हैं,हम लोग कितने उन्नत हैं ये सब बातें ज्ञात होगईं। ता० १८ को मास्टर हुलासवर्मा को छः मास का कारावास हुआ था। वह भी ता० २० की रात्रि को हमारी जेल में आये। सात आठ दिन सेकण्ड क्लासमें रह कर वे भी फर्स्ट में मेरे ही पास आगये, इनसे देहरे के समाचार मिले—फिर

ला० कुन्दनलाल भोगपुरी ने सब हालात सुनाये, हमारे ब्लाक में अब बढ़ती होने लगी। शक्ति के सम्पादक पं० बद्रीदत्त पांडे भी हमारे साथ रहने लगे अब हमारे यहां इस ब्लाक में २५ भाई हो गये।

हम लोगों को आश्चर्य हो रहा था कि प्रान्तभर में धर-पकड़ का दौर दौरा है बरेली में सुनसान क्यों। मि० स्टब्स की मीठी नीति के कारण यहां अब तक कोई भी नहीं पकड़ा गया, अन्त में ता० ५-२-२२ को शान्ति भङ्ग हो ही गई और बरेली के डेलीगेट भी आ ही पहुंचे, कोई वकील, कोई रईस, कोई सम्पादक, कोई पण्डित, कोई मौलवी,—बा० मोतीसिंह वकील, बा० टिकैतराय; पं० बंशीधर पाठक आदि थे। लखीमपुर से भी ठा० रतनसिंह, बा० गिरिजाप्रसाद, बा०महेश्वर-सहाय आ मिले।

हम लोगों ने सब प्रबन्ध अपने ही हाथ में रक्खा था। हमारी अपनी एक कमेटी थी—उसमें सब काम बांट दिये थे कोई किचन-मन्त्री, कोई स्वास्थ्य मन्त्री, कोई कुछ और कोई कुछ, सब आराम थे। केवल चारदीवारी के बाहर नहीं जा सकते थे।

यह तो सब कुछ था किन्तु सब की आंखें मालवीय जी की राउण्ड-टेबल कान्फ्रेन्स की ओर लग रही थीं। अब सुलह हुई, अब छूटे, अब मामला बिगड़ गया, अब वायसराय नहीं मानते, अब गाँधी नहीं मानते-इसी प्रकारकी खबरें आती रहीं अन्तमें वायसरायके पत्रके पढ़नेसे निश्चय हुआ कि कानफरन्स होगी। उधर बारदौली में भी तैयारी हो ही रही थी। किन्तु अचानक समाचार आया कि ता० ४-२-२२ को चौरीचौरा जि० गोरखपुर में घोर उपद्रव हुआ। ता० ११-२-२२ को बारदौली में वर्किंग कमेटी ने 'सिविल नाफरमानी" का

मामला मुलतवी किया। चित्त बहुत दुखी हुआ पर 'ईश्वरेच्छा' कहकर मनको मसोस कर रह गये। 'याच्चिन्तितं तदिह दूरतरं प्रयाति'—यह उक्ति सर्वथा चरितार्थ हुई। चार दीवारी के भीतर बैठे हुए हम लोगों की मानसिक दशा का चित्र कोई भी चित्रकार नहीं खींच सकता। हम तो रहे एक ओर महात्मा गान्धी जी की क्या दशा हुई होगी? आज (१५–२–२२) भोजन अच्छा नहीं लगा। सब ध्यान कांग्रेस के भविष्य की ओर था। क्या अहिंसात्मक संग्राम के तत्त्व को लोग नहीं समझे? क्या भारतवर्ष में अहिंसात्मक संग्राम चल सकता है? क्या यह संभव है कि म० गान्धी बारदौली के रण में जा डटें और जनता चुपचाप शान्ति से रह जाय? या चुपचाप सरकारी अत्याचार देखती जाय! कांग्रेस पीछे जा रही है कि आगे? ऐसे अनेक विचार आये–४—५ दिन बहुत परेशान रहे, हैरान रहे कि क्या हो रहा है। उन दिनों में माडरेट लोग ज़ोर लगा रहे थे कि हम लोग छूट जायं और क़ानून (१७—१, १७—२) उठ जाय और कुछ कामयाब भी होगये थे, लायल कमीशन भी बैठने वाला था—हमको निश्चय होगया कि न तो अब सरकार और महात्मा का समझौता होगा न हमही छूटेंगे·················

मिलाई का दिन रविवार था। इस दिन पचासों भाई आकर मिलते थे-बाहर के बहुत से समाचार इन से विदित होते थे बात चीत से विदित होता था कि अहिंसात्मक तत्त्व को बहुत कम लोगों ने समझा है—

इस रामरौले में जेल में जी लगना कठिन होगया तो भी मन को समझाकर मैंने 'गीताविमर्श' का प्रारम्भिक भाग लिख ही डाला-यह हाल हुआ ता० १६-२-२२ तक का। आगे क्रमवार मैं अपनी डायरी लिखता हूं जिससे पाठक

सब वृत्त को यथार्थ रूप में जान सकेंगे—इससे क्रमवार आन्दोलन का इतिहास ज्ञात हो जायगा ।

(१७—२—२२)

२४-२-२२ को देहली में आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी की बैठक होगी । बम्बई में मालवीय कानफरन्स होगई । प्रस्ताव पास हुआ कि वायसराय अपनी नीति बदलें-राजनैतिक कैदियों को छोड़ें । आज यहां से सब सेकण्ड क्लास राजनैतिक कैदी फैज़ाबाद भेजे जा रहे हैं—भाई बिछुड़ रहे हैं, ईश्वरेच्छा 'लीडर' लिखता है कि अभी वर्किंग कमेटी ने 'सत्याग्रह' मुलतवी किया है, केवल मुलतवी करने से काम न चलेगा, सिविल-नाफरमानी सर्वदा के लिये बन्द होनी चाहिये । ट्रिब्यून लिखता है कि 'अब तो वायसराय जो कुछ चाहते थे वह होगया, क्यों नहीं नीति बदलते' । बारदोली वर्किंग कमेटी के निश्चय से उत्साही नवयुवकों में निराशा छागई । मरहटा की राय में सिविल नाफरमानी मुलतवी न होनी चाहिये थी । उसने "महात्मा जी को उलटी कुलाँच" एक मज़ेदार लेख लिखा है ।

(१८—२—२२)

सिविल नाफरमानी के विषय में महात्मा जी का लेख पढ़ा । महात्मा ही हैं ।

(१९—२—२२)

बंगाल महात्मा जी के पास डेपूटेशन भेज रहा है कि यह क्या कर रहे हो ?

(२०—२—२२)

स्वा० श्रद्धानन्द काउन्सिल में जाने का प्रस्ताव उपस्थित करेंगे । आश्चर्य ! महात्मा गान्धी दिसम्बर तक सिविल नाफरमानी मुलतवी कर रहे हैं । वैयक्तिक कानूनभंग भी बन्द

करेंगे। आप का लेख Shuddering with fear "भय से काँप रहा हूं" पढ़ा—महात्मा जी की अर्जुन की सी दशा हो गई। अफसोस इस समय कोई कृष्ण नहीं है जो महात्मा जी के इस विषाद-योग को दूर कर देवे। काश के आज लो० तिलक मौजूद होते।

२१—२—२२

१-महात्मा जी के पास पत्र लिखा कि बारदौली के निश्चय से आप हमको फिर पीछे घसीटकर १९२० में लेजा रहे हैं। इससे कार्यकर्ताओं की हिम्मत टूट गई होगी। क्या आप इस तरह कभी भी सविनय कानूनभंग कर सकेंगे, क्या लोग आपके अहिंसातत्त्व को समझ सकेंगे? और एक जगह कानूनभंग हो रहा हो तो समस्त भारतवर्ष शान्त रह सकेगा? लोगों को उत्साहित करने के लिये कोई उपाय होना चाहिये।

२-सुना है बरेली सेण्ट्रल जेल में सात मनुष्यों ने घबरा कर माफी मांग ली है यह अधःपतन के लक्षण हैं—

३— महाविद्यालय के महोत्सव का निमन्त्रण आया, संदेश भेज दिया—

२३—२—२२

डाएढा लखौएड के पं० ब्रजबिहारी फरासी व जाखन के डा० मानसिंह ये दो देहरे के वालण्टियर सहारनपुर जेल में हैं। बा० मेलाराम वकील व पाण्डेय भुवनेश्वरीप्रसाद को लिख दिया कि इन से मिलकर हाल लिखें। आज देहरे से खबर आई कि मेरी एक वर्ष की सजा सख्त से महज़ कर दी, मई जुरमाना वैसा ही रहा।

२४—२—२२

देहरे में डिस्ट्रिक्ट कानफरन्स मार्च या अप्रैल में होगी।

देहली में आज आल-इन्डिया—कांग्रेस कमेटी की बैठक हो रही होगी। पं० शंकरदत्त शर्मा फैजाबाद जेल में पहुंच गये। बा० रामशरण एम० ए० रायबरेली जेल में हैं। देहली में अखिलभारतवर्षीय हिन्दू सभा होगी-। नियम बदलने का नोटिस आया है। मैंने लिख दिया है कि अब बहुत से मेंबर जेलमें हैं तब इस तरह उनके पीछे कोई कार्यवाही न होनी चाहिये।

२५—२—२२

आज पता लगा कि हमारे सुपरिण्टेण्डण्ट करनल लैण्स्ले ता० १५ मार्च को विलायत जायेंगे। झांसी से कोई हार्पर साहब आ रहे हैं। करनल लैण्स्ले बहुत सभ्य, शिष्ट पुरुष हैं।

२६—२—२२

ध्यान सारा देहली में है— कोई खबर नहीं मिली। कान में शब्द पड़ रहे हैं कि हम लोग कहीं बदले जायंगे। जेलर ठीक ठीक पता नहीं देते।

२७—२—२२

अचानक लखनऊ के जाने की तैयारी-जेल से लेकर स्टेशन तक पोलिस व घुड़ सवारों की धूम है—ऐसा प्रबन्ध है मानों हम लोग १८५७ के विकट राजद्रोही हैं-अद्भुत दृश्य है। लोगों की उत्सुकता का पारावार नहीं। आज गाड़ी भी लेट हो गई- १०॥ बजे रात्रि को हम स्टेशन पर पहुंचे। लोगों की खूब भीड़ थी। ११॥ बजे गाड़ी छूटी। जेलर वगैरे सब लोग प्रेमपूर्वक मिले। नायब देवीदयाल जी, लेटर बाबू सदानन्दराव जी आदि सब बड़े मिलनसार लोग हैं। नायब साहब लखनऊ तक हमारे साथ ही आ रहे हैं-

(इति बरेलीपर्व)

लखनऊ पर्व

२८—२—२२

हमारी गाड़ी प्रातः दस बजे लखनऊ स्टेशन पर पहुंची। ११ बजे तक स्टेशन पर ही रहे क्योंकि सवारियों का पूरा प्रबन्ध नहीं था। १२ बजे सब लोग जेल के दरवाजे पर पहुंचे। एक घन्टा वहां बाहर ही रहे फिर जेलर साहब एक एक का नाम पुकारते गये। और हम भीतर नम्बर से जाते गये। यहां यू० पी० भर के राजनैतिक कैदी विद्यमान हैं— और अभी कुछ लोग आगरे में पड़े हैं— थोड़े दिनों के पश्चात् वे भी आवेंगे। यहां प्रायः सभी परिचित मिले, वर्षों से बिछुड़े हुए बाबा राघवदास जी यहीं मिले— यहाँ प्रायः सभी नियमों में परिवर्त्तन है। बरेली में हमारा खर्च ४५) प्रति मनुष्य था। अब इससे आधा, कर दिया गया है। चाहे कितने ही पत्र आवें पंद्रह दिन में एक ही पत्र मिलता है और एक ही पत्र लिख सकते हैं। यंग-इण्डिया को छोड़ कर शेष समाचार पत्र मिल जाते हैं— हमारे ब्लाक में प्रो० कृपलानी, बा० सम्पूर्णानन्द सम्पादक 'मर्यादा', पं० शिवविनायक मिश्र आदि लोग हैं। श्री पं० मोतीलाल जी आदि सिविल ब्लॉक में है।

१—३—२२

बस्ती के बा० विश्वनाथ मुकर्जी आदि से वर्त्तमान आन्दोलन के विषय में बात चीत। जेल सभा बनाई गई, हमारी बारीक की ओरसे प्रो० कृपलानी, पं० बद्रीदत्त पाण्डेय, व मैं प्रतिनिधि नियत हुये हैं।

२—३—२२

आज जेल सभा हुई, लोगों का अजीब ढंग है, बहुत समय गया पर कुछ भी निर्णय न हो सका। लीडर में महा० गान्धी जी व एक संवाददाता की बात चीत पढ़ी। आज यहां के अधिकारियों की ओर से व्यवहार में कुछ सुभीता हुआ। आज से अपना लीडर मंगाने लगा हूं। पहले मुझे केसरी व मरहट्टा मिलते थे पर अब नहीं देते।

३—३—२२

शरीर स्वस्थ नहीं है- आज 'गीता' के विषय में कुछ लिख सका। दो बजे पं० जवाहरलाल नेहरू, बा० मोहनलाल सकसेना, जनाब शौकतअली बी० ए० एल्० एल्० बी० आदि सात महानुभाव छूटे। चलो छूटनेका श्रीगणेश हुआ। बारीगों के दरवाज़े सदा बन्द रहते हैं, सब अपने अहाते में पड़े रहते हैं- कोई किसो से मिलने नहीं पाता। मिलाई के दिन गेट पर सबका मिलना हो जाता है।

(४-३-२२)

काशी के शेष ७५ आगये, मैनपुरी से ६ आये। ब्र० प्रभुदत्त फैजाबाद से फिर यहां लौट आया-उससे फैजाबाद जेल के समाचार मिले। अधिकतर वहां दंगई लोग एकत्रित हुए हैं। रायबहादुर मिट्ठनलाल सुपरिण्टेण्डण्ट भद्र पुरुष हैं। पण्डित शंकरदत्त का वजन २८ पौण्ड घट गया।

(५-३-२२)

डिपुटी कमिश्नर आये थे सब दशा देख गये। सोती जगदीशदत्त, व बा० विश्वामित्र वकील बिजनौर से बातचीत। बा० राघवदास स्पेशल क्लास में भी साधारण कैदी की भांति रहते हैं। भिन्न प्रकृति वाले लोगों का अच्छा खासा समुदाय एकत्रित हुआ है। देहरे के स्वा० ब्रह्मानन्द भारती भी यहीं

इसी जेल में आगये। बा० बुलाकीराम जी के पत्र से विदित हुआ कि देहरे में अच्छा काम हो रहा है।

(६–३–२२)

कल से सेकण्ड क्लास वालों ने खान–पान की हड़ताल बोल दी है। बड़ा ऊधम है, अज्ञता की पराकाष्ठा है डा०मुरारी लाल जो मिले। आज सुना जारहा है कि १७-१ वाले सब छूटेंगे व १७-२ वालों को सिर्फ ६ मास को कैद रहजायगी। कांशी ब्लोक के लोग (४१) मामूला भजरा-रोटी लेते हैं। आज सभा में निश्चय हुआ कि फर्स्ट क्लास वाले का कर्त्तव्य है कि वह अपने भाग का एक छटांक दूध व आध छटांक घृत सैकण्ड क्लास वालों के लिये दे देवे।

७–३-२२

हड़ताल समाप्त हुई। देहरे की जिला कानफरन्स ईस्टर में होगी। आज बांदे के बावा जीवनदास माफी मांगकर छूटे साश्चर्य खेद है! असहयोगियों की दशा अच्छी नहीं--

८--३--२२

गीता लिखने का काम दुबारा प्रारम्भ—

(९–३–२२)

सुलतानपुर वालों की सजा सिर्फ ६ मास की करदी गई। विदित होता है इसी प्रकार औरों की सजाएं भी घटाई जायंगी।

(१०–३--२२)

आज कैद के तीन मास समाप्त हुए

११–३–२२

सायंकाल ७॥ बजे महात्मा गान्धी जी के गिरफ्तार होने की खबर आई--करागार में एक बिजली सी दौड़ गई। जिधर

देखो 'जय जय' है, जिधर देखो यही चर्चा है। लोगों को अब आशा होगई कि "कुछ न कुछ कर जायेंगे"--कल पूर्ण व्रत होगा कल से होली है। महाविद्यालय ज्वालापुर व कांगड़ी गुरुकुल के उत्सव धूम धाम से होरहे होंगे।

१२-३-२२

माण्टेगू ने परित्याग पत्र दिया व स्वीकृत भी होगया। ईश्वर रक्षा करे। म० गांधी पर १२४ अ० लगाया गया है। देश में सर्वत्र शांति है। नं० ३--४ बारीग में कुछ उद्धत लोगों ने गड़बड़ मचा रक्खी है इसलिये आज हम सब एक घण्टे तक आसमान बन्द रक्खे गये। जब हमारी बारीग का दरवाजा खुला तब प्रो० कृपलानी वगैरा ने उनको समझाया--कुछ शांति हुई, चार आदमी बारीग में बन्द नहीं हुए--

(१३-३-२२)

जेल में विचित्र होली मनाई गई। प्रातः ३ बजे से ही आनन्द, उत्साह का प्रारम्भ है। प्रातः ४ बजे होली जलाई गई। सब भाई भेदभाव को भूलकर सम्मिलित हुए। मैंने तो २३--२४ वर्ष के पश्चात् होली खेली है। यज्ञ हवन के पश्चात् शाही जी का "रुक्ष न होना प्यारे देश" आदि सुमनोहर गीत हुए, आज दिन भर यही रामरौला रहा। हिंदु मुसलमान आदि सभी रंगे गये और ऐसा प्रतीत होता था मानो रंगा हुआ भारतवर्ष नाच रहा है। आज चक्कर में कोई अधिकारी नहीं आया। आज की रसद कल ही बांट दी गई थी। सुना गया कि लायलसाहब की रिपोर्ट जेल में आई है।

(१४-३-२२)

हमदम व आनन्द के सम्पादक जेल के विजिटर नियत हुए हैं। आज इनस्पेक्टर जनरल जेल के पास लग भग १५० मनुष्यों का हस्ताक्षर युक्त पत्र इस विषय का गया कि बारीगों

में सोने में बहुत गर्मी होती है अतः यदि ८-१० दिन तक रात्रि को बारीगों के खुले रहने का प्रबन्ध न किया जायगा तो उपद्रव की संभावना है कृपया आकर मिलिये। करनल क्लीमेएट का वर्त्ताव अच्छा नहीं है।

(१५-३-२२)

म० गांधी जी का मुकद्दमा सेशन सुपुर्द हुआ। महात्मा जी माडरेटों के साथ उदारताका व्यवहार करनेके लिय लिख रहे हैं। मि० माएटेगू का करारा लेक्चर पढ़ा। ब्रिटिश मन्त्रि-मएडल की पोल खुल रही है।

(१६--३--२२)

अहमदाबाद में वर्किंग कमेटी होगी, हकीम अजमलखां साहब गांधी जी के स्थान में नियत होगये।

१७-३-२२

मालवीय जी अहमदाबाद पहुंचे। लीडर में पं० बनारसी-दास चतुर्वेदी का पत्र पढ़ा उससे महात्मा जी की गरफ्तारी के यथार्थ वृत्त मिला। लीडर की टिप्पणियों को पढ़ कर ऐसा स्पष्ट प्रतीत होता है कि उसका एडीटर म० गान्धी व असहयोगियों से चिड़ा बैठा है। फ़ैज़ाबाद से खबर आई है कि इस मास के अन्त तक वहां के २०० कैदी छूट जायंगे क्योंकि थोड़ी थोड़ी मियाद के कैदी हैं।

महात्मा गान्धी को जब समाचार मिला कि बाहर सुप-रिएटेएडेएट वारंट लिये खड़ा है तब वे तुरन्त उठे, आश्रम के लोगों को बुलवाया, सब ने मिलकर यह पद्य गाया—

❋ गान्धी जी का प्रिय गीत ❋

वैष्णवजन तो तेने कहिये, पीर पराई जाने रे।
पर दुःखे उपकार करे तो ए, मन अभिमान न आणे रे॥

सकल लोकमां सहुने वन्दे, निंदा न कर कनी रे ।
वाच काछ मन निश्चल राखे, धन धन जननी तेनी रे ॥
समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी, पर स्त्री जेने मात रे ।
जिह्वा थकी असत्य न बोले, पर धन न झाले हाथ रे ॥
मोह-माया व्योप नहिं जेने, दृढ वैराग्य जेना मनमां रे ।
रामनाम शुं ताली लागी, सकल तीरथ मनमां रे ॥
वण लोभीने कपट रहित छे, काम क्रोध निवार्यां रे ।
भणे नरसैयो तेनुं दर्शन करतां, कुल एकोत्तर तर्यां रे ॥

यह नरसी मेहता का गीत है, अफ़रीका के सत्याग्रह में भी गाया गया था जब कि पहला जत्था जेल में गया था ।

१८-३-२२

अपने नित्यनियम में कोई बाधा नहीं है । जप भी नियम-पूर्वक चल रहा है । गीताविमर्श का काम चल रहा है ।

महात्मा गान्धी कहते हैं कि जितनी लम्बी लम्बी सजाएं होंगी असहयोग उतनी ही शीघ्र गति से चलेगा । अभी धर-पकड़ जारी है भूमिहार डेपूटेशन के उत्तर में वायसराय ने कहा है कि क्या करें हम लाचार हैं पढ़े लिखों का पकड़ना पड़ता है । महात्मा जी को छः वर्ष की कड़ी सज़ा हुई, आखिर गवर्नमेंटने बदला ले ही लिया । तिलक महाराज के साथ भी यही गति थी । भारत हड़बड़ा कर जगेगा । कुछ काल तक तो निराशा रहेगी ही । महात्मा जी की यह खबर रात्रि के ९॥ बजे मिली—आज शायद ही कोई सोया हो ।

१९ । ३ । २२

केसरी में 'महात्मा गांधीनां पकड़ले'—यह लेख मननीय है । गान्धी जी के विचार भी पढ़े । इस ज़माने के युधिष्ठर

प्रतीत होते हैं। उनका उसूल ठीक है पर क्या इस तरह देश में काम चल सकेगा? वे स्वयं कहते हैं कि असहयोग में चाहे थोड़े मनुष्य हों पर अच्छे हों। उनका कहना है कि अत्याचाररहित असहकारिता के पीछे चलो या प्रतियोगी सहकारिता का आश्रय लो। दूसरी गति नहीं। उनका दो मार्च का लेख 'शान्त रहो' दुःखपूर्ण है। गान्धीजी ने इतना स्पष्ट कभी नहीं लिखा था। बिचारे साधु पुरुष हैं। उनके लिये भी नया अनुभव है। अफ़रीका व भारत के वातावरण में बड़ा भेद है। परमात्मा की कृपा हुई कि गान्धी जी के सिर से छः साल के लिये भार उतर गया। देखें अब पीछे लोग क्या करके दिखाते हैं। वे प्रायः अपने व्याख्यानों में कहा करते थे कि उस दिन मुझे सच्चा स्वराज्य मिलेगा जब कि मैं जेल में हूंगा। निःसन्देह उनको छः साल के लिये व्यक्तिगत स्वराज्य मिल गया। भारत का सामुदायिक स्वराज्य जब कभी मिले, अभी तो बहुत देर है। महा० गांधी जी आदर्शवादी हैं। कर्मयोगी नहीं हैं। चौराचौरी आदि घटनाओं की जिम्मेवारी अपने ऊपर लेना बतला रहा है कि वे कर्मयोगी नहीं हैं। हाँ साधु सन्तों में उनकी गिनती हो सकती है। खैर लोकमान्य तिलक के पश्चात् भारतको इतने स्वल्पकाल में इतना आगे खेचने वाला कोई नेता नहीं मिला। वे कहते हैं अन्दाजा चूक गया। ईश्वर के परमानुग्रह से गान्धी जी के दिन जेल में शान्ति से कटें, और इधर भारत अपने कर्त्तव्य को समझकर शान्ति से क्रान्ति करने में संलग्न हो जाय। महात्मा गांधी का उद्देश्य ही "शांति से क्रान्ति" है।

२०—३—२२

१— देहरे के दो वालण्टियर पं० ब्रजविहारी व मानसिंह

सहारनपुर जेल में पहुंचे।

२—महात्मा जी ने अपना अपराधी होना स्वीकार कर लिया। उन्होंने कहा कि यदि मैं खुला रहा तो फिर सरकार के विषय में अप्रीति उत्पन्न कराऊंगा। जज ने प्रशंसा की और कहा कि मेरा काम हलका कर दिया। बारह वर्ष पूर्व लोकमान्य तिलक के विषय में ठीक ऐसी ही परिस्थिति उत्पन्न हो गई थी। वे छः वर्ष के लिये भेजे गये थे, आपको भी उतना ही दण्ड देता हूं। पर यदि देश में शान्ति रही तो आपको पूर्व ही छोड़ देने के लिये सिफारिस करने में मुझे बड़ा आनन्द आयेगा। गांधी जी ने कहा कि लोकमान्य का उल्लेख करके आपने मेरा गौरव बढ़ाया है। ला० शंकरलाल को १॥ वर्ष का कारावास व १०००) रु० दण्ड हुआ। सज़ा सुनाने के पूर्व गान्धी जी ने कहा था कि तुम्हारे अधिकार में जितनी सज़ा है उतनी दे डालो दया माया मत दिखाओ। जजने कहा कि न्याय का व अपराध का ठीक तुलापर तोलना अत्यन्त कठिन कार्य है।

२—कटारपुर के भाई सेण्ट्रल जेल में अच्छी तरह हैं। बैरिष्टर ए० पी० सेन आये आये थे। सब दशा देखकर चले गये।

२१—३—२२

आज इनस्पेक्टर जनरल आने वाले हैं। मि० सी० आर० दास बीमार हैं। महात्मा जी ने कहा कि यदि लोगों ने उत्पात किया तो वे आयु भर जेल में ही रहना पसन्द करेंगे।

२२—३—२२

स्वा० योगानन्द जी आज छूटे—करुणापूर्ण दृश्य था। बा० सीताराम, बा० छैलबिहारी मेम्बर लेजिस्लेटिव काऊ-

न्सिल से बातचीत हुई। गवर्नमेण्ट तन रही है प्रश्नों के उत्तर भी नहीं देती।

२३—३—२२

१— गीता हिन्दी भाषानुवाद लिखा गया है।

२— महात्मा जी का पूरा बयान पढ़ा, ठीक है- उनको परवड़ा जेल में भेज दिया है।

३— आज एक मामूली कैदी ने मुझ से पूछा कि आप क्या चोरी में आये हैं'— मैंने मुस्कराकर कहा 'हां डाके में आये हैं'—कैदी बहुत खुश हुआ और इसलिये भी खुश हुआ था कि उस जैसे चोर अब पढ़ लिखे बाबू भी बन गये हैं।

२४—३—२२

यहां का जल वायु बहुत खराब है। बरेली में स्वास्थ्य अच्छा रहता था, यहां गरमी अधिक है। यहां ठीक ठीक पचता नहीं। टहलने के लिये स्थान भी नहीं। स्वच्छता नहीं, प्रबन्ध नहीं,— मच्छर बहुत हैं।

२५—३—२२

१— देहरा जिले की कानफरन्स ईस्टर में होगी। पं० हरकरणनाथ मिश्र प्रेसिडेन्ट चुने गये।

२— आज से रात को बारागें खुली रहेंगी— मि० क्लीमेण्ट स्वयं कह गये।

२६—३—२२

स्वा० नारायण मिले, हिन्दू सभा व कांग्रेस समाचार जाने— बारदौली का किस्सा सुना। पं० पद्मसिंह शर्मा मुरादाबाद में हैं और पूर्वापेक्षया अच्छे हैं, ईश्वर का अनुग्रह हुआ। सीतापुर के बा० शम्भुनाथ जी से बातचीत हुई सीतापुर में घोर अत्याचार हो रहे हैं— अवध में एका—मूवमेंट ज़ोरों पर है।

२७—३—२२

महाविद्यालय से समाचार आया कि महोत्सव सानन्द समाप्त हुआ। प्रो० राममूर्त्ति आदि आये थे। खूब धूम रही।

हरदोई के भाई आर्डिनरी कैदी कर दिये गये। सरकार ने दिक् करने का यह नया प्रकार निकाला है। प्रविन्शियल कांग्रेस कमेटी में संयोजक कार्यपद्धति स्वीकृत हुई।

२८—३—२२

कल सम्बत् १९७९ का प्रारम्भ है-संवत्सर का नाम है 'भाव' ईश्वर की कृपा से वह भावपूर्ण हो।

जब से जेल में आये हैं तब से आज एक लक्ष गायत्री का जप समाप्त हुआ। उपनिषदों के दश पारायण व गीता के तीस पारायण हुए।

अब यह पुराना संवत्सर जा रहा है-जेल के अनुभव से गीतावर्णित सात्त्विक, राजस, तामस का स्वरूप समझ में आगया। विश्वरूप में विश्वदर्शन का अच्छा अवसर हाथ आया।

'प्रकृतिं यान्ति भूतानि, निग्रहः किं करिष्यति' इसका पूर्ण अनुभव मिला।

२९—३—२२

भाव संवत्सर १९७९।

बुधवार–चैत्र शुक्ला प्रतिपद्।

यह भाव नामक संवत्सर हम सबको सुखकारक हो और हम शीघ्र ही स्वराज्य को प्राप्त कर सकें। कारागार में रहने वाले पुण्य देशभक्तों के भाव सब के कल्याण करने वाले हों। अधिकारी लोग अधिकार मद में लिप्त हैं, प्रजापालनरूपी कर्तव्य पथ से भ्रष्ट हो रहे हैं, नीतिशून्य होकर प्रजा के सुखदुःखों

की कोई परवाह नहीं कर रहा है, भाव संवत्सर इनके भावों को शुद्ध करे। हे भाव! मैं तुम्हारे भावों को जानने के लिये उत्सुक हो रहा हूं। तेरा स्वागत करता हूं, तेरा भला हो और हमारा भी भला हो। देखो भाव! पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर सर्वत्र भद्र समाचार पहुंचाओ—

भावो भवतु भव्याय परिपूर्णो मनोरथैः
भवस्य कृपया तूर्णं स्वराज्यं प्राप्नुयाम वै ॥ १ ॥
कारागारे निवसतां पुण्यानां देशवासिनाम्।
भावा भवन्तु भव्याय सर्वेषां स्वत्त्वकाङ्क्षिणाम् ॥ २ ॥
स्वाधिकारः प्रमत्तोऽयमधिकारिजनोऽखिलः।
प्रजापालनकर्त्तव्यपथभ्रष्टः पराङ्मुखः ॥ ३ ॥
अनीतिर्न गणपति प्रजादुःखहितानि च।
भावः प्रजापतिस्तस्य, भावान् परिशोधयेत् ॥ ४ ॥
भाव! भावान्परिज्ञातु मुत्कोऽस्मि भगवन्! तव।
उद्युक्तः स्वागते तेऽह स्वागतं भद्रमस्तुते ॥ ५ ॥
भद्रं वद दक्षिणतो भद्रमुत्तरतो वद ।
भद्रं प्राच्यां प्रतीच्यां च, भद्रं प्रवद सर्वतः ॥ ६ ॥
ॐ तत्सत्।

३०-३-२२

फैज़ाबाद जाने की ख़बर गरम है, इससे साथियों में बड़ी सनसनी फैल रही है। यह सरकार का नया तरीक़ा है कि फरर्टक्लास वालों को सैकण्ड व थर्ड में भेज रही है। बेचारे हरदोई के भाई थर्ड में गये।

पाण्डेय चन्द्रदत्त जैसे सोलह सतरह वर्ष के बालक को एक वर्ष की क़ैद, आश्चर्य है! ऐसे अल्पवयस्क लड़कों को आन्दोलन में भाग न लेना चाहिये।

३१-३-२२

आज ३८ भाई छूट रहे हैं। फर्स्ट क्लास वाले दूसरी क्लासों में भेजे जा रहे हैं। खेद है कि पचासों भाई अपना कार्यक्रम ठीक नहीं रखते, इस तरह अपनी आदतों को स्वयं खराब कर रहे हैं। ऐसे अमूल्य समय का इस तरह नाश हो रहा है, कहते हैं कि जेल तप करने के लिये नहीं है। है किस के लिये? भगवान् इनको सुबुद्धि दें।

१-४-२२

महाभारत का उद्योग पर्व समाप्त। कृष्ण का हस्तिनापुर को दूत बनकर जाना, कौरवसभा के भाषण आदि प्रकरण मनन करने योग्य हैं। वर्तमान दशा पर सब बातें संघटित हो रही हैं। जिसने कभी महाभारत नहीं पढ़ा वह उसकी अनुपमता को कभी भी नहीं समझ सकता।

यदिहास्ति तदन्यत्र, यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्।

यह उक्ति सर्वथा सत्य है। इसका अभिप्राय यह है कि जो महाभारत में है वही सर्वत्र है और जो बात इसमें नहीं मिलेगी वह फिर संसार में कहीं भी नहीं मिलेगी।

२-४-२२

विद्यार्थी श्री० गणेशशङ्कर जी से बातचीत हुई। खबर आई है कि ३०० भाई मियाद पूरी करके फैज़ाबाद से छूट गये।

३-४-२२

देहरे में ज़िला कानफरन्स का काम खूब हो रहा है, बम्बई में मालवीय जी का लेक्चर बहुत अच्छा हुआ। खबर उड़ रही है कि गान्धी जी को धारवाड़ जेल में ले गये।

४-४-२२

कल बहुत से भाई फैज़ाबाद जा रहे हैं, और फैज़ाबाद से भी इधर आने वाले हैं, ऐसा प्रतीत होता है कि गवर्नमेण्ट

की नीति (हम लोगों के विषय में) निश्चित नहीं हुई है। आज कुछ है, कल कुछ है, परसों कुछ है। प्रतिदिन नये नियम !! आयरलैण्ड में शान्ति होगई—उन्हें पूरा स्वराज्य तो नहीं स्वराज्य का छोटा भाई मिल गया। आयरलैण्ड फ्रीस्टेट होगया। देखें भारत का भाग्य कब चेतता है।

५-४-२२

महात्मा जी को धारवाड़ ले जाने का समाचार ठीक नहीं था, वे एरवडा (पूना) जेल में ही हैं। आज हमारी जेल से २६ भाई छूटेंगे। कल से १३ तक राष्ट्रिय सप्ताह मनाया जायगा आगरा जेल से बीस भाई आये—सब से मिलकर बड़ा आनन्द हुआ। स्वा० भास्करतीर्थ, प्रो० रामदास गौड़, डा० लक्ष्मी-दत्त, आदि सज्जन हैं। शेष फिर आवेंगे। गीताविमर्श की भूमिका लिखी गई।

६-४-२२

आज ४०-४१ भाई छूटेंगे। आज उपवास व्रत आदि है। आज राष्ट्रिय सप्ताह मनाया गया। प्रातः मेरी कथा हुई। सायंकाल व्याख्यानादि हुए। तिलक स्वराज्य फण्ड एकत्रित हो रहा है।

७-४-२२

श्री-राजागोपालाचार्य म० जी से एरवडा जेल में मिले—साधारण वर्त्ताव है। आज हमारे वार्डवालों की सभा हुई—बड़ी खप्प रही है।

८-४-२२

१८ ता० को सर्वत्र हड़ताल रहेगी। मौ० मुहम्मदअली बिजापूर जेल में हैं वर्त्ताव साधारण कैदियों का सा है। महा-राष्ट्र के प्रसिद्ध कादम्बरीकार स्व० हरिनारायण आपटे लिखित

'उषः काल' मंगाया । ऐसी अनुम ऐतिहासिक कादम्बरी देखने में नहीं आई ।

आज आगरे से दूसरा जत्था आया । इसमें पं० गौरी-शंकर मिश्रादि हैं । आज जेल में लोगों ने खूब उधम मचाया ।

९--४--२२

देहरादून से समाचार मिला को वहां अच्छा काम होरहा है । पं० प्रयागदत्त जी, पं० रासबिहारी तिवारी, पं०व्यासदेव शास्त्री आदि मिले ।

१०--४--२२

श्री ब्रह्मदेवशास्त्री काव्यतीर्थ सम्पादक आ० सर्वस्व से बात चीत हुई ।

११--४--२२

आज फिर सुना जारहा है कि ५० भाई फैज़ाबाद जायंगे जेल गप्पों के मारे नाक में दम है ।

१२--४--२२

आज दुर्जन नामक एक पासी कैदी ने आकर कहा कि म० गांधी व उनका एक साथी बिल्ली का रूप धारण कर यरवड़ा जेल में से निकल गये--लखनऊ आने वाले हैं । बड़ी दिल्लगी रही । यह दुर्जन पासियों का गुरु है । चोर भाइयों को शत्रु न बतलाने के अपराध में दस सालकी सज़ा लेकर आया है।

आज मैंने जेल कमेटी से परित्याग पत्र दे दिया । मेम्बरों का डेपूटेशन आया बात चीत हुई ।

१३--४--२२

लाहोर में मालवीय जी का व्याख्यान बन्द । पंजाब में दमन ज़ोरों पर है ।

१४--४--२२

मालवीय जी ने उद्योग किया कि व्याख्यान दिया जाय ।

डिपटी कमिशनर से पत्र व्यवहार हुआ। मालवीय जी को फिर नोटिस मिला ।

१६-४-२२

देहरादून में १४४ लग गई। श्री० शंकराचार्य शारदापीठ पं० हरकरणमिश्र, पं० जवाहरलाल आदि पहुंच गये। देखें क्या होता है, कानफरन्स होती है या रुकती है, मौ० हसरत-मोहानी पकड़े गये। उनको अहमदाबाद ले गये हैं। स्वा० नारायणादि मिले। बाहर के लोगों में निराशा छा रही है। सरकार को दमननीति की धूम है। पं० मोतीलाल नेहरु के आजकल छूटने की खबर उड़ रही है ।

१७-४-२२

मौ० हसरत मोहानी पर १२१—१२४ धाराएं लगाई हैं। दासबोध अद्भुत ग्रन्थ है। मरहठो दासबोध का पारायण हो रहा है।

१८-४-२२

आज गांधी दिन है-सब उपवास कररहे हैं-सायंकाल को सभा करने के पश्चात् उपवास तोड़ा जायगा।

१६—४—२२

लीडर में देहरादून का हाल आया। पं जवाहरलाल जी की प्रेरणा से देहरे में कानफरन्स न होकर डोईवालामें हुई। प्रो० राममूर्ती भी सम्मिलित थे। डोईवाला के भाग्य जगे। देहरे के दो पत्र आ रहे हैं उनमें परस्पर विरोधी समाचार हैं। कोई कहता है काम हो रहा है कोई कहता है नहीं हो रहा।

२०—४—२२

करनल वेजवुड का भाषण पढ़ा, स्पष्टवक्ता हैं—यू० पी० व पंजाब में दमन की मात्रा अधिक है। मालवीय जी

पंजाब में मासान्त तक रहेंगे। देहरे में प्रोसेशन के समय किसी दुष्ट ने शंकराचार्य जी पर जूता फेंका और गोली चलाई। ईश्वर की दया हुई कि पं० हरकरणनाथ मिश्र व श्री० शंकराचार्य जी को कोई चोट नहीं आई, दोनों एक ही गाड़ी में बैठे थे।

२१--४--२२

मालवीय जी पर सियालकोट में १४४ लग गई। लीडर ने अच्छी टिप्पणी लिखी है। न्यूयार्क मिशन ने भारत-शासन पर एक सुन्दर लेख निकाला। है स्वतन्त्र देशके अखबार खूब स्वतन्त्रा से लिखते रहते हैं।

वनपर्व देखा जारहा है इधर जेलपर्व में हम देख रहे हैं कि न सरकारकी ही नियत अच्छीहै और न हमारे जेलबन्धुओं की दशा ही अच्छी है।

२२-४-२२

बड़ी कांग्रेस गया में होगी। धार्मिक दृष्टि से स्थान अच्छा है पर वैसे शहर बहुत खराब है। मद्रास के गवर्नर लार्ड विलिंगडन ने करनल वेजवुडके व्याख्यान का उत्तर दिया है। जिनोआ कानफरन्स में रूस--जर्मन सन्धि के कारण बड़ी हलचल मच गई है।

कृष्ण की तसवीर लटकाने के मामले में ५-६ दिन से बड़ी गड़बड़ मच रही है, मिस्टर रंगा अय्यर सेण्ट्रल जेल भेज दिये गये। दो एक फैजाबाद गये। दोष हमारे भाइयों का भी और करनल क्लीमेण्ट का भी। इस विषय में पं० मोतीलाल नेहरु से भी बात चीत हुई।

२३-४-२२

देहरादून में जिसने गोली चलाई वह डूंगे के चौ० समशेरसिंह का पुत्र है। श्री शंकराचार्य जी ने बड़ी शान्ति से काम लिया है।

श्री० आचार्य-स्वा० शुद्धबोधतीर्थ जी, देहरे के ला० कुन्दनलाल जी आदि मिले। प्रोविन्शियल कांग्रेस के विषय में आवश्यक बातें बतलाई गईं। श्री० आचार्य जी महाराज पर वृद्धावस्था की पूर्ण छटा आगई है।

२४-४-२२

श्री० पं० शिवनायक मिश्र छूटे-बनारस में बा० भगवानदास जी पहले ही छूट गये थे। लीडर ने म० गांधी जी के साथ व्यवहार के विषय में बहुत अच्छा लेख लिखा है, कभी कभी लीडर बुद्धि से भी काम लेता है। कभी २ ऐसी बुरी टिप्पणियां लिखता है कि जिससे प्रतीत होने लगता है कि यह पूर्वजन्म में असहयोगियों का वैरी रहा होगा 'इण्डिपेण्डण्ट' फिर जन्म लेगा। 'स्वराज्य' फिर चमकेगा।

२५-४-२२

सेण्ट्रल जेल में भो रंगाअय्यर को अच्छी तरह रक्खा है। असहयोगी लोग जेल में आकर क्यों इतने च्युत हुए, समझ में नहीं आता। भूमि का प्रभाव !!!

मालवीय जी ने गुजरांवाले में प्रभावशाली व्याख्यान दिया। जहां जाते हैं कैदियों से मिलते हैं।

आज फिर अफ़वाह है कि ५० कैदी सेकण्ड क्लास बनाकर फैज़ाबाद भेज दिये जायंगे।

२६-४-२२

सख्त गरमी है ज्येष्ठ में क्या दशा होगी! पं० मोतीलाल नेहरु चक्कर में आकर हम सब से मिल गये। छूटने वाले हैं, छूटकर अलमोड़ा जायंगे।

२७-४-२२

वनपर्व व विराटपर्व समाप्त। सुना है हसरत मोहानी अपने मुकदमे के समय मौनव्रत धारण करेंगे। अधिक गर्मी के कारण हमारे पर्वतीय भाई बीमार होरहे हैं।

२८-४-२२

म० गान्धी के साथ बहुत बुरा बर्ताव हो रहा है। उनके सब वार्डर अंगरेज ही हैं। उधर यह हाल और इधर इतने सुभीतों के होते हुए भी लोग एक एक वस्तु के लिये इतना हुड़दंग मचाते रहते हैं। जेल-लाइफ ने हमारे बहुत से भाइयों को भ्रष्ट कर दिया है।

शहर में मिस्टर पटेल का भाषण हुआ। बैरिस्टर ए० पी० सेन ने मार्मिक भाषण दिया। प्रसिद्ध ५५ के छोड़ने के विषय में बल दिया। यदि ये ५५ छुट जायंगे तो अच्छा है। मार्ग खुल जायगा। १७-२ में ये नहीं आ सकते थे। सरकार की धींगाशाही है और क्या। आज पं० जगन्नारायण जी पं० मोतीलाल जी से मिले—

२९।४।२२

शारदापीठ के शङ्कराचार्य शहर में हैं। मिलना न होसका। आज दो मास पूर्व आये हुए कई पत्र मिले। अच्छा तमाशा है! बा० शम्भूनाथ जी से सीतापुर के समाचार सुने।

३०।४।२२।

मिरज़ापुर में खूब दमन है--मुसलमानों के रमज़ान शुरू हुए। एक मास तक रात को इन की खूब रहेगी। दिन भर सोवेंगे और रात भर खाते रहेंगे।

१।५।२२

आज एक कैदी ने कटारपुर केस के प्रसिद्ध डा० पूरन-प्रसाद की फांसी का हाल सुनाया। फांसी के समय वह इस जेल में ही था। बड़ाही करुणापूर्ण वृतान्त था।

२।५।२२

शारदापीठ के शङ्कराचार्य पुरी गये हैं, लौट कर मिलेंगे।

३ । ५ । २२

मालवीय जी पेशावर गये, उधर ही घूमेंगे। हसरत मोहानी जी ने बयान देने की ठानली। टर्कीने मित्रों की बात टाल दी। खिलाफत का फैसला नहीं होता दीखता।

४ । ५ । २२

स्वा० भास्करतीर्थ फैजाबाद को लद गये। साक्षात् दुर्वासा प्रतीत होते हैं। असहयोगियों में रोज झगड़े-राज़ लड़ाई--उसी का यह परिणाम है।

५ । ५ । २२

मोहानी जीका बयान पढ़ा, विचित्र है--कहीं ठीक है कहीं उलटा है, ज्यूरी ने १२१-१२४ में सर्वथा निर्दोष बतलाया। ये लोग १२४ के लिये ज्यूरी हैं १२१ के लिये असेसर हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि १२४ में जरूर सज़ा होगी।

६ । ५ । २२

मौ० हसरत मोहानीको १२४ में २ वर्ष के लिये कारागार मिला। १२१ के विषय में जजसाहब हाईकोर्ट को लिखेंगे। पब्लिक प्रासीक्यूटर ने व्याख्यान छपाने का अभियोग वापस लिया।

७-५--२२

प्रयाग म आनन्दभवन की तलाशी हुई। पं० जवाहरलाल फिर आते दीखते हैं। मित्रसंघ में वैमनस्य होरहा है। राष्ट्र-संघको कोई पूछता नहीं।लाइडजार्ज व लार्डकर्जन की कूटनीति के कटुफल लग रहे हैं। मालवीय जी पंजाब में घूम २ कर दुःखितों को धैर्य दे रहे हैं।

अथर्ववेद ८—३—७ मन्त्र मनन करने योग्य है।

पं० लक्ष्मीनारायण व स्वा० वामदेवाश्रम फैज़ाबाद गये। न जाने हमारी बारी कब है। स्वा० सहजानन्दादि सात महानुभाव फैज़ाबाद से आये हैं वे कहते हैं कि वहां बहुत आनन्द है।

शोक कि देवरिया के बा० अवधनारायण मुख्त्यार को करुणा-जनक मृत्यु हुई— दो तीन दिन से बीमार थे।

८—५—२२

कल सोने के समय तक सर्वत्र अवधनारायण जी की मृत्यु की ही चर्चा थी। प्रत्येक बारीग की ओर से ५—५ प्रतिनिधि शव के पास रात्रि भर रहे। प्रातः सब बारीगों के दरवाजे व वार्ड के दरवाजे खुले थे अतः सब हास्पिटल में जहां शव था गये। अर्थी तैयार की गई। ईश्वर की प्रार्थना हुई, शेर हुए, कविताएं पढ़ी गईं, 'रामनाम सत्य है' इसकी की आवाज के साथ सब अर्थी के पीछे हो लिये। बाहर के दरवाजे के पास आकर सब ठहर गये। बाहर आर्यसमाज के लोग आकर प्रतीक्षा कर रहे थे। अर्थी उनके सुपुर्द कर दी गई और हम सब लोग दुःख के साथ अपनी २ बारीग को लौटे। जेल में इसप्रकार का दृश्य प्रथम ही है। अवध-नारायण जी देवरिया में मुख्त्यार थे, ५५ में थे, आपके वृद्ध माता, पिता विद्यमान हैं। इनकी स्त्री पहले ही मर गई थी। इनके कन्या है। वृद्धों के लिये यह दारुण वज्रपात है। ईश्वरेच्छा— मृत्यु के पूर्व यह कहते थे कि "अंग्रेजी दवाई नहीं खाऊंगा, उन्होंने हमारी कांग्रेस को बिगाड़ा है, मैं अभी मरूंगा नहीं। मुझे अभी स्वराज्य का बड़ा काम करना है।' कल सायंकाल ५। बजे इनकी मृत्यु हुई। यहां बीमारों का ध्यान कम रक्खा जाता है। बड़ी बेपतियाती है, शान्ति व गम्भीरता से सब कुछ भुगतना चाहिये। ईश्वर

अवधनारायण जी की आत्मा को सद्‌गति देवे— और वृद्ध माता पिता को धैर्य !

अभी खबर मिली कि मिस्टर केलकर ने महाराष्ट्र प्रान्तिक कांग्रेस के अध्यक्षपद से परित्यागपत्र दिया। न जाने क्या कारण ?

पं० मोतीलाल जी अब तक नहीं छूटे—

पं० जवाहरलाल जी ने 'इधर या उधर' नामक एक नोटिस निकाला था, शायद उसी पर मुकद्दमा चलेगा।

९—५—२२

आज पहली वार हमारे पेड़ पर कोयल आकर बोली है। इसके मधुर आलाप मे बड़ा आनन्द आ रहा है। कोकिल! जेल में तेरी आवश्यकता नहीं। क्योंकि यहां जेल-काकोंका समुदाय है, वे तुझे बहुत देर ठहरने न देंगे। बम्बई में श्रीनिवास शास्त्री जीने व्याख्यान दिया कि "प्रान्तिक स्वराज्य की मांग करना भी शीघ्रता है" धन्य !

१०—५—२२

शायद आज पं० मोतीलाल नेहरू छूटेंगे। कल रात्रि के समय चक्कर में आये थे सबको नसीहत कर गये कि असूलों के विरुद्ध आचरण न होना चाहिये। सोच समझ कर सब की रायों का वज़न देखकर काम करना चाहिये। "यदि मैं छूटा तो सीधा प्रयाग जाऊंगा। पं० जवाहरलाल पकड़े गये तो फिर पहाड़ नहीं जाऊंगा," अलमोड़े में एक बंगला किराये पर लिया था, आज मना करवा दिया है। पहले तो क्लीमेण्ट ने आकर कहा कि आप छूटेंगे कल तैयार रहिये पर पीछे से कहा कि शायद पहाड़ जाना पड़े। मैंने उत्तर दिया कि पहाड़ जाने के योग्य मेरे पास यहां सामान नहीं है। क्लीमेण्ट ने कहा वाइटवे लैडला कम्पनी से आप ले सकते हैं। मैंने उत्तर

दिया कि मैं तो उन कपड़ों को छू भी नहीं सकता।"—इत्यादि बातें पंडितजीने बतलाईं। पं०जीने यह भी कहा कि कृष्ण की तसवीरका मामला अब शान्त होगया है। क्लीमेण्टको समझा दिया है। आप भी अब ज्यादा छेड़छाड़ न करें।

११—५-२२

मानपाल गुप्त व लक्ष्मीनारायण अग्निहोत्री नियमपूर्वक गीता पढ़ते हैं, आज दश अध्याय हो चुके—दासबोध, योगदर्शन का पारायण हो रहा है। Moon-struck Philo sopher. नामक अजीब लेख म० गांधी के विषय में लीडर में उद्धृत हुआ है-किसी विलायती आदमी ने लिखा है। मिस्टर शास्त्री सुधार का नया उपाय बतला रहे हैं। मिस्टर शंकरन् नायर ने Gandhi and Anarchy नामक पुस्तक लिखी है। सुना है इसमें गान्धी जी के विरुद्ध बहुत विष उगला गया है। इस पुस्तक की लीडर प्रशंसा कर रहा है—क्यों न हो।

पं० जवाहरलाल पं० मोतीलाल जी से मिलने आये थे। यहीं पकड़ लिये गये रात्रि को प्रयाग जांयगे। पं० मोतीलाल जी कल रात्रि की गाड़ी से नैनीताल जायंगे। २०–२५ दिन के लिये पहाड़ भेजे जा रहे हैं—आश्चर्य! शायद पं० जवाहरलाल जी के मुकद्मे तक इनको छोड़ना नहीं चाहते।

१२--५--२२

बाबा रामचन्द्र सेण्ट्रल जेल बरेली गये। ये महाराष्ट्र हैं, ग्वालियर स्टेट में उज्जैन के पास के रहने वाले हैं- सरकार की बुद्धि विपरीत हो रही है, कोई एक नियम नहीं है—जनाब हमीद साहब बनारस सेण्ट्रल जेल को भेजे गये।

सी० पी० प्रान्तिक कांग्रेस कमेटीने प्रोग्राम में परिवर्त्तन करना पास किया—लीडर खुश हो रहा है—पं० जवाहरलाल, देवीदास गान्धी आदि का मामला सेशन सुपुर्द हुआ--सर-

कार आन्दोलन को कुचल रही है। आज ३५ भाई फैजाबाद गये। परसों भी कुछ जायंगे।

सुना है मुझे रायबरेली जेल में भेज रहे हैं--अच्छी बात है। चार जेलें देखलीं-यह पांचवी सही। यह अच्छा हुआ कि लिखने का काम समाप्त हुआ। आगे न जाने कैसे रखेंगे देखा जायगा।

१३—५ २२

लीडर में 'मराठा' के बारे में एक लेख है।

मेरी रायबरेली जाने की खबर ठीक है। अमरोहेवाले भाई फैजाबाद जारहे हैं।पोलिटिकलवालों को नान-पोलिटिकल बनाना और पोलिटिकलवालों में भी फर्स्ट-सेकण्ड आदि भेद करना विचित्र बात है। खैर--आज जेल में आये हुए ठीक ५ मास होते हैं--शेष हैं और दस मास। पांच महीने में ५ जेल देखे यही नम्बर रहा तो यू० पी० भर के प्रमुख जेलों की सैर हो जायगी। ईश्वर जो कराता है वह कल्याणकारक ही है।

इस जेल में महाभारत के वन, विराट, उद्योग यह तीन पर्व समाप्त हुए।दशोपनिषद् समाप्त।गौड़पादकारिका समाप्त, गीता विषयक लेख भी समाप्त।

स्वा० ब्रह्मानन्द व मास्टर हुलास वर्मा को देहरे के बारे में हिदायतें दीं।

१४—५-- २२

आज सर्वत्र मेरी चर्चा है कि मुझको रायबरेली क्यों भेज रहे हैं। सब मिलने आरहे हैं - सहानुभुति प्रकट कर रहे हैं। विचित्र समय है। सायंकाल के समय नायब बुलाने आये -- दफ्तर में ले गये। एक रजिस्टर में अंगूठे का निशान लगाना पड़ा, पैर में बेड़ी पड़ी। लौटकर बारीग में आया तो लोगोंमें जबड़जोश देखा। लोग पैरों पर आकर गिरने लगे। यह

बेड़ियों की महिमा है। सौभाग्य से प्रातः शिवप्रसाद मिल गया उसके द्वारा ज्वालापुर समाचार को भेजे सन्देश दिये। सुख दुःख की बातें करते कराते सायंकाल ७॥ बजे बाहर से नायब आया और कहा 'चलिये'... हमने कहा चलिये। प्रत्येक बारिक में जाकर सब से मिले। बा० राघवदास की मेरे विषय में उत्सुकता देखने योग्य थी... डा० मुरारिलाल गणेशशंकर, पुरुषोत्तम दास टण्डन आदि से छुट्टी लेकर चला। किसी ने कविता पढ़ी, किसी ने अभिनन्दन किया। किसी ने अश्रुपूर्ण नेत्रों से देखा, किसी ने गले लगाया। 'बन्दे मातरम्' 'जय जय' की धूम अलग ही थी। इस तरह धूम धाम से जेल के दरवाजे से बाहर हुए। जेल की बन्द गाड़ी में बन्द हुए स्टेशन पर पहुंचे वहाँ भी धूम रही। फैज़ाबाद के भाई फैजाबाद की गाड़ी में बैठे गाड़ी चलदी। मैं भी पास की गाड़ी में बैठाया गया। पीछे मालूम हुआ कि वह गाड़ी कानपुर की है, जल्दी में रायबरेली की गाड़ी पकड़ी। इस अन्धाधुन्धी में बेड़ियों के कारण मेरा पैर बहुत दुख गया। अचानक व्यासदेव शास्त्री मिले। मेरी दशा देखकर घबराये। मैंने उनको धैर्य दिया, उनसे जो कुछ कहना था कह दिया। गाड़ी ने सीटी दी और हमारी ट्रेन हमारे भाग्य के साथ रायबरेली की ओर चलदी। मेरे साथ पीलीभीत के एक और भी मुसलमान भाई थे वे प्रयाग जेल भेजे जारहे थे

(इति लखनऊ पर्व)

[रायबरेली पर्व।]

ट्रेनमें नींद किसको आनी थी। भविष्यके ही विचार आते रहे। १॥ बजे हमारी ट्रेन रायबरेली स्टेशन पर आ पहुंची। मैंने सिपाहियों से कहा कि प्रातःकाल तक स्टेशन पर ही रहो, फिर जेल में चलेंगे। उन्होंने नहीं माना। एक इक्का किया गया—और जेल का रास्ता पकड़ा। यद्यपि इक्का शहर में से हो कर गया तथापि अन्धकार के कारण नगर का स्वरूप अच्छी तरह न देख सका। रायबरेली को नगर कहने की अपेक्षा छोटा कसबा कहना अच्छा होगा। लगभग २ बजे जेल के दरवाजे पर पहुंचे। मेरे हवालदार ने मुझे जेल के फाटकवाले के सुपुर्द किया। फाटक खुला मैं भीतर गया और अपना असबाव भीतर ले लिया। फाटकवाले मु० बुद्धूलाल ने मुझे वहीं जमीन पर लेटने को कहा। वहां मच्छरों का स्वराज्य था। मैं वहां क्या लेट गया उनकी चांदी बन आई। लगे सब मिल कर मेरा लहु पीने। थोड़ी देर में नींद का झोका आ ही रहा था कि फाटक खुला—जेलर राय-साहब पं० चम्पालाल औदीच्य भीतर आये। उन्होंने गेटमैन से पूछा ये कौन लेटे हैं, गेटमैन ने उत्तर दिया कोई लखनऊ से आये हैं, टिकट मेज़ पर रक्खा है। जेलर साहब भीतर गये जाकर टिकट देखकर बोले कि नरदेव शास्त्री आये हैं। थोड़ी देरमें पचासा हुआ सब वार्डर वगैरे आ गये और अपनी अपनी ड्यूटी पर भेजे गये। तब जेलर साहब से मेरी बात चीत हुई। मेरा सामान फाटक पर ही रहा और एक पहरे के साथ मैं सेग्रेनेशन कैम्प में पहुंचा। वहां ब.०

रामशरण एम० ए० आदि मिले। शौचादि से निवृत्त हुआ ही था कि एक नम्बरदार बुलाने आया 'चलिये फाटक पर बुला रहे हैं'— फाटक पर पहुंचा। पहुंचते ही पैर की बेड़िया निकाली गईं, थोड़ी देर में साहब आये – आप का नाम डी० के० मुकर्जी है। जेलर व साहब दोनों सीधे चक्कर में गये और कोई १॥ घंटे के बाद लौटे तब तक मैं नायब-साहब के पास बैठा रहा यहां फिर हुलिया लिखा गया, सामान देखा गया, अंगूठे का निशान लगवाया गया कद मापा गया। वस्तुओं की गिनती हुई। फिर साहब के सामने मेरी हाज़िरी हुई। साहब ने कहा कि देखिये यहाँ कोई गड़बड़ न कीजिये थोड़े दिनों के पश्चात् आपकी वस्तुएं मिल जांयगी। मेरे लिखने का सामान मुझ को नहीं मिला, शेष कपड़े लत्ते और दो चार पुस्तकें लेकर मैं अपनी बारीग में पहुंचा। लखनऊ से आने के कारण शायद साहब ने मुझे उपद्रवी जीव समझा। फर्स्ट क्लास से मामुली दर्जे में आनेवाला ज़रूर उपद्रवी होगा ऐसी उनकी धारणा हुई होगी नहीं तो उपर्युक्त शब्द क्यों कहते ?

जेलर साहब ने उसी समय साहबसे कहा कि 'विद्वान् पुरुष हैं गड़बड़ क्यों करेंगे, शांतिसे ही रहेंगे—" मैं भीतर ही भीतर मुसकराया कि ये लोग मुझे भयङ्कर जीव समझ रहे हैं। पीछे मालूम हुआ कि मेरे वारण्ट पर देहरे के मेजिस्ट्रेट ने 'खौफ़नाक जीव' लिखा है। मैजिस्ट्रेट के लिखने से ही मैं रायबरेली में मामूली कैदियों में भेजा गया हूँ। हम जैसे लोगों के लिये हो नान-पोलिटिकिल क्लास बना है। मेरे आने के एक दिन पूर्व सीतापुर, गोंडा, बस्ती के कैदी भी यहां आपहुंचे थे। इनमें मुझ जैसे ७-८ ही सिंपल कैदी थे शेष सब सख्त मशक्कत वाले थे। नान-पोलिटिकल कैदियों की संख्या लग

भग ८० है। प्रायः इनमें ऐसे ही वीर नवयुवक हैं जिन्होंने पूर्व जेलों में अधिकारियों का नाक में दम कर रक्खा था, अधिकारियों ने भी इन्हें खूब तंग किया था । गांधी जी ने जेल नियमों के अनुसार रहने का आदेश किया तब तो जेल में हमारे भाइयों की यह दशा, यदि कहीं नियमों को न मानने का आदेश होता तो भगवान् जाने क्या होता।

लखनऊ जेलमें प्रायः यू० पी० की कांग्रेस कमेटी के सभी लोग मिले थे। यहां आने से लखीमपुर, सीतापुर, बलरामपुर, तुलसीपुर, गोंडा, करनलगंज, बस्ती, गोरखपुर, बलिया, पड़रौना, रायबरेली, आदि के महानुभाव मिले। बलिया के नवयुवक कु० विश्वनाथसिंह, ब्रह्मदेवप्रसाद माणिक, केदारनाथ, तथा पड़रौना के ब्रह्मदेवशर्मा को देखकर आश्चर्य हुआ। ऐसे नवयुवकों को बड़ीबड़ी सजाएं देना बतला रहा है कि सरकार का बुद्धि विपरीत होरही है। ब्रह्मदेव शर्मा को ढाई साल की सज़ा है!!

बलियामें दमनकी धूमहो रही है। गोरखपुर ज़िले में तो होनी ही थी। ये नवयुवक उत्साही हैं, परम देशभक्त हैं पर इनको अभी अनुभव नहीं है। ऐसे सैकड़ों नवयुवक जेल में पड़े होंगे। देश में अद्भुत जागृति का यह स्पष्ट चिन्ह है।

यहां आकर तीन बातें विशेष हुईं—१ बारीगमें बन्दहोना २—आठवें दिन साहब के सामने लाइन में खड़े होकर परेड देना ३-मामूली कैदियों का भोजन।

पत्रव्यवहार का नियम यह है कि आये हुए पत्र प्रतिदिन मिल जाते हैं पर मास भर में नियत तिथि पर २-३ पत्र भेज सकते हैं। मिलाई मास भर में एक वार-समाचार पत्र नहीं मिलता। यहां सिपल व रिगरस साथ ही रक्खे गये हैं-इस

लिये दोनों अनुभव साथ ही मिल रहे हैं। ईश्वर की कृपा हुई कि यह भी अनुभव मिला।

यह जेल बड़ी जेल है, किसी ज़माने में यह सेण्ट्रल जेल थी। जिस (Segragation Camp) सेग्रेगेशन कैम्प में हम रक्खे गये हैं वहां पहले विकट रोगी रक्खे जाते थे जिस से कि उनके स्पर्श से अन्य कैदियों को रोग न लगे। विचित्र घटना से आज हम भी इसी कैम्प में हैं--हम जिस बीमारी में यहां आये हैं वह भी ऐसी ही है…इस लिये इस कैम्पमें रहना ठीक ही है। हमारे बारीग में पहले १० थे फिर १५ हुए फिर २२ तक का नम्बर आया। शेष भाई 'औरत बारीग' में रक्खे गये थे क्योंकि जेल में उनको रखने के लिये और जगह नहीं रही थी। इन भाइयों के (F:male-ward) औरत बारीग में जाते ही वह (Male-ward) पुरुषों की बारीग होगई।

हमारी वार्ड बहुत सुन्दर वार्ड है-इसमें आम, नीम, जामुन के बहुत से पेड़ हैं। मैंने तनाही की तरफ एक सुन्दर आम्रवृक्ष के नीचे अपना स्थान बनाया है। लीप पोतकर साफ सुथरा स्थान बना लिया है। दिन भर इसी वृक्ष के नीचे समय कटता है, वृक्ष के नीचे गिलहरियों का अच्छा खासा झुण्ड आकर क्रीड़ा करता रहता है। इनको खिलाने पिलाने में बड़ा आनन्द आता है। इनके बच्चे सुहावने प्रतीत होते हैं। लखनऊजेलमें दिन का समय नीमके नीचे कटता था, यहां आम्रवृक्ष के नीचे कटता है। वहां निष्फल वृक्ष थे, यहां सफल वृक्ष हैं।

मैं लिख चुका हूँ कि लिखने का सामान मुझे नहीं मिला, इस लिये पुस्तकावलोकन के अतिरिक्त समय काटने का अन्य कोई उपाय नहीं था। लखनऊकी भांति नित्यनियम यथा-

रीति होते हैं। केवल भेद इतना है कि बारीग ४॥ बजे खुलती है अतः ३बजे ही भीतर स्नान होता है। उसके पश्चात् सन्ध्या-वन्दन जप आदि। बाहर आने पर एक घण्टा भ्रमण। फिर ८॥बजे तक पुस्तकावलोकन। इसी तरह १से ४ बजे तक पुस्तकावलोकन। ४॥ बजे से ६ बजे तक स्नानध्यानादि। ६ बजे फिर बारीग में बन्द। भोजन भी भीतर ही। इस तरह क्रम रहा।

इस मास में ये नवीन पुस्तकें देखीं—

१-माई सिस्टम २ प्रेश पक्कर ३-गास्पेल आफ बुद्ध-इज्म ४-ह्यूमन दी इनफिनिट ५-मार्डन टेनीसन।

मेरे आने के पश्चात् एक ही मास में निम्न लिखित चार महानुभाव छूटे।

१—वागेश्वरीप्रसादसिंह—बलिया, २—स्वामी सच्चिदानन्द बलिया, ३—पं० रामचंद्र शर्मा मथुरा, ४—पं० बसन्तलाल प्रयागवाले।

लेजिस्लेटिव काउन्सिल जोलाय में है-देखें क्या होता है। लखनऊ में आलइण्डिया कांग्रेस कमेटी सानन्द होगई। आगामी कांग्रेस गया में होगी।

यहां के प्रायः सभी अधिकारी अच्छे हैं, सभ्य हैं, शिष्ट हैं, तो भी हमारे बहुत से भाई कभी कभी वृथा झगड़ा खड़ा करते रहते हैं जिस से कभी कभी शान्ति भङ्ग होजाती है।

१५—६—२२

आज मुझे लिखने का सामान मिला इसलिये एक मास पश्चात् यह सब वृत्त संक्षेप से लिख रहा हूँ। कल से यथा-नियम प्रतिदिन लिखता रहूंगा।

१६—६—२२

टेनीसन की कविता बड़ी मार्मिक है। कहीं कहीं स्वभा-

९-७-२२

आज रविवार व्यासपूर्णिमा है,श्री ६ आचार्य जी के लिये धोती जोड़ा व जेलमाला भेजो, यहीं से बैठे दूर रहनेवाले गुरुजनों की मानस पूजा की ।

१० । ७ । २२

देहरादून में तिलक भवन का मामला उलटा पड़ गया, भूमि कांग्रेस के हाथ से जाती दीखती है ।

११ , १२ । ७ । २२

आज सरकार की आज्ञानुसार सर्वत्र यू० पी० भर में छोटी जेल डिलिवरी हो रही है । लगभग ५००० कैदी छूटेंगे । यहां से ११९ कैदी छूट रहे हैं । ये सब कैदी ऐसे हैं जिन के तीन तीन मास रह गये थे । प्रिन्स सकुशल विलायत पहुंच गये इस खुशी में यह रिहाई है ! खुशी हो या न हो जेल का खर्च अवश्य कम हो रहा है ।

१४ । ७ । २२

महाभारत (उपसंहार) रा० चिंतामणराव वैद्य एम्० ए०कृत आज मिला अत्यन्त मनोरञ्जक ग्रन्थ है ।

१५ । ७ । २२

महाभारत का प्रारम्भ हुआ, चार मास में समाप्त करना है । लखनौऊ से काशी के सब भाई छूट गये ।

१६ । ७ । २२

आदि पर्व आधा हो गया । 'उपसंहार' प्रारम्भ ।

१७ । ७ । २२

लीडर से ज्ञात हुआ कि बाहर सर्वत्र शान्ति है । यह शान्ति निरुत्साहजनित शान्ति है । पं० मोतीलाल नेहरू जी की कमेटी गश्त लगा रही है ।

१८ । ७ । २२

कविसम्राट टगोर की गीताञ्जलि देखी । कहीं कहीं विचित्रता है । संस्कृत के प्रतिभाशाली कवियों का मुकाबला टगोर कर नहीं सकते । हां नवीन संसार के लिये नई बात है ।

१६ । ७ । २२

वैद्य चिंतामणराव का उपसंहार विचित्र रूप से लिखा गया है । इससे पाश्चात्य लोगों के विचार जानने में बड़ी सहायता मिल रही है ।

२० । ७ २२

लीडर व अवध के ज़िमीदारों में खूब ठन रही है ।

२१ । ७ । २२

काउन्सिल मुलतबी हो गई । गई अक्टूबर में, लीडर कहता है अगस्त में होनी चाहिये । पर बटलर सुनें तब न ?

२७ । ७ । २२

आदि व सभापर्व समाप्त । दासबोध (हिन्दी) आ गया । हुलासवर्मा छूट कर देहरे पहुंच गये ।

२८ । ७ । २२

आल इंडिया कांग्रेस कमेटी अगस्त से १५ सितम्बर को गई ।

वर्त्तमान स्थिति पर मि० केलकर का उत्तम लेख लीडर में उद्धृत हैं । गीता 'पूर्वप्रसङ्ग' लिख डाला अच्छा लिखा गया है ।

१ । ८ । २२

पुस्तकों में मन प्रसन्न रहता है पर शरीर निर्बल है । आज मार्कण्डेय समासनिर्णय पढ़ा, विचित्र प्रसङ्ग है ।

५ । ८ । २२

दो दिन से खूब झड़ी लग रही है । परसों श्रावणी है ।

वनपर्व समाप्त। पीलीभीत के पं० दुर्गाशङ्कर छूट गये। सौम्य, साधु, उत्साही युवक हैं, ऐसे ही युवक कुछ कर सक्ते हैं।

६। ८। २२

विराट पर्व समाप्त

७। ८। २२

श्रावणी सानन्द समाप्त

८। ८। २२

दासबोध से गीता के श्लोकों की व्याख्या छांट ली है। उपसंहार आधा हो गया।

१२। ८। २२

उद्योगपर्व समाप्त

१४। ८। २२

भीष्मपर्व ४ दिन का युद्ध समाप्त

१५। ८। २

भीष्मपर्व समाप्त

२०। ८। २२

उपसंहार समाप्त द्रोणपर्व समाप्त

२४। ८। २२

कर्णपर्व समाप्त

२६। ८। २२

शल्यसौप्तिकपर्व समाप्त

२७-८-२२

देहरे के समाचार मिले, तिलकभवन की अपील खारिज हो गई।

स्त्रीपर्व समाप्त। मि० केलकर लिखित ' शतसांवत्सरिक वाङ्मय श्राद्ध '(मराठी)अनुपम पुस्तक है।

२८-८-२२

शान्तिपर्व प्रारम्भ। जे० एन० सरकार लिखित 'औरंगजेब का इतिहास" तीनों भाग देखने योग्य हैं ।

२९-८-२२

मि० शंकरन् नायर कृत Gandhi and Anarchy 'गान्धी और विद्रोह' यह पुस्तक पढ़ी। क्या विष उगला है। बहुत सी बातें अच्छी भी हैं, सरकारी लोग इससे खुश हुए होंगे,

३०-८-२२

पार्लियामेंट में प्रीमियर, जायसन हिक्स, करनल वेजबुड इनकी स्पीचें पढ़ने योग्य हैं।

३१-८-२२

मि० शंकरन् नायरने म०गान्धीके "Indian Homerule के आधार पर यह सिद्ध करने का यत्न किया है कि म०गान्धी वैयक्तिक स्वराज्य चाहते हैं, इंग्लिश सभ्यता के शत्रु हैं, असहयोग चलाकर द्वेष बढ़ा रहे हैं।

१-९-२२

दे० दामोदर गणेश सावरकर छूट गये, न जाने विनायक गणेश सावरकर कब छूटेंगे।

३-९-२२

गीता का 'पूर्वरङ्ग' लिखने में एक मास व्यतीत हुआ। शान्तिपर्व चल रहा है।

४-९-२२

मि० केलकर जी का 'वाङ्मयश्राद्ध' समाप्त॥ इस ग्रन्थ में निम्न लिखित बातों का उल्लेख आया है।

१-अंग्रेजों के आने के पूर्व का महाराष्ट्र २-अंग्रेज भारत में कैसे आये, ३-मरहठाशाही क्यों डूब गई, ४-मरहठों की राज्य व्यवस्था इत्यादि।

६-६-२२

मोक्षधर्मपर्व चल रहा है।

७-६-२२

एकभुक्त होकर तीन मास हो गये।

आज आश्रमवासिकपर्व, मौसलपर्व, महाप्रस्थानिकपर्व, स्वर्गारोहणपर्व, ये चार पर्व समाप्त किये, अब केवल अनुशासन व आश्वमेधिकपर्व शेष हैं।

९-६-२२

रिचर्ड पाल की "टू दी नेशन्स" To the Nations पुस्तक सरसरी नज़र से देखी।

१०-६-२२

वायसराय की स्पीच पढ़ी। अत्यन्त शोक कि श्री०मोतीलाल घोष सम्पादक अमृतबाज़ार पत्रिका का देहान्त होगया, बंगाल सूना हो गया।

११-६-२२

श्री० रङ्गाचार्य ने लेजिस्लेटिव एसेम्ब्ली में प्रीमीयर की स्पीच को अच्छा उत्तर दिया है।

१२-६-२२

ग्रीक लोगों का पराजय व तुर्कों की विजय शुरु हुआ। पं० कृष्णकान्त मालवीय का अंगरेजी माल का बहिष्कार विषयक लेख पढ़ा।

१३-६-२२

रिचर्ड पाल लिखित Dawn of Asia अच्छी पुस्तक है। इनका कहना यह है कि श्री० अरविन्दबाबू से ही भारत का उद्धार होनेवाला है।

१४-६-२२

शान्तिपर्व समाप्त, नारायणीय सिद्धान्त मनन करने

योग्य है। सांख्य-योग विवरण अत्यन्त मार्मिक है ।

१५-९-२२

स्वा० श्रद्धानन्द पकड़े गये ।

१६-९-२२

आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी नवम्बर में होगी, दिसम्बर में बड़ी काँगरेस के साथ ही क्यों न हो ।

१८-९-२२

अनुशासनपर्व समाप्त ।

२०-९-२२

आज महाभारत ग्रन्थ समाप्त हुआ। इस निर्णयसागर की ऐडीशन में एक लक्ष बारह हजार श्लोक हैं ।

२२-९-२२

देहरे के पत्र से ज्ञात हुआ कि तिलकभूमि सर्वथा हाथ से गई। प्रान्तिक कानफरेन्स की तैयारी हो रही है ।

२३—९—२२

'अकाली व गुरु का बाग' इस विषय में मिस्टर एण्ड्रूज के पत्र पढ़ने योग्य हैं। साक्षात् देखा हुआ वृत्तान्त लिख रहे हैं।

३—१०—२२

गीतोपसंग्रह का कार्य समाप्त।

४—१०—२२

श्री० सरकार लिखित 'अवरंगज़ेब का इतिहास' आज आरम्भ किया। तीन भाग हैं।

५-१०—२२

पटने के स्व० खा० ब० खुदाबख्श सी. आई. ई. बड़े ही दूरदर्शी पुरुष थे। इनके अनर्थक परिश्रम व विद्याऽभ्यासंग का परिचय मिस्टर सरकार ने अच्छे शब्दों में दिया है ।

७-१०-२२ से १७—१०—२२

अवरंगजेब का इतिहास समाप्त।

बड़ौदे के प्रो० देसाई ने भी इस विषय में मराठी में इतिहास लिखा है। लोग कहते हैं कि अवरंगजेब ने अत्याचार नहीं किया पर सरकार के इतिहास से स्पष्ट सिद्ध है कि बहुत अत्याचार किये। इतना बड़ा राज्य था पर बेचारे को सुख कहां! उमरभर झगड़े मोल लेता रहा-सरकार ने बड़े ही मार्मिक शब्दों में कहा है

This was the harvest that Jalaluddin Akabar's great grandson reaped from sowing the whirlwind of religious persiecution and suppression of nationalities. सरकार की राय है कि खिलाफत का मामला भी उन्नीसवीं सदी का ढकोसला है।

१८—१०—२२

लाइट आफ एशिया Light of Asia बौद्ध ग्रन्थ पढ़ा।

१९—१०—२२

आज हमारे कई भाई छूटे।

२०-१०—२२

टगोर लिखित "Nationalism" देखा।

टगोर कृत कबीर गीतों का अनुवाद भी देखा। कबीर स्वा० रामानन्द के शिष्य थे इनका समय सन् १४४० है।

२२—१०—२२

लिग्राड़ जार्ज मन्त्रिपद से छूट गये-बोनरलॉ आगये।

२३—१०—२२

कबीर के निम्न लिखित पद्य बड़े ही मनोहर हैं—

१-सन्तो सहज समाध भली २-पानी विच मीन प्यासी
३-साईं बिन दर्द कलेजे होय ४-भाई कोई सतगुरु संत कहावे

५-साधो शब्द साधना कीजै ६-साईं से लगन कठिन है भाई
७-जब मैं भूल... ... ... ८-मन न रंगाये... ... ...
९-हमसे रहा न जाय १०-तोर हीरा हिरलवा कीचड़ में
११-अरे दिल प्रेमनगर का अन्त न पाया।
१२—झी झी जन्तर बाजे १३-आजदिन के मैं जाऊं बलिहारी
१४-कोई सुनता है रागी ज्ञान गगन में१५-अवधू बेगम देश हमारा
१६-कोई प्रेम की पेंग झुलाओ रे १७-दर्या की लहर दर्याओ है जी

२६—१०—२२

देहरादून प्रान्तिक कानफरेन्स के सभापति पं० मोतीलाल नेहरू चुने गये।

२८—१०—२२

काऊन्सिल में क्रिमिनिल ला अमेण्डमेण्ट एक्ट उठा लेने का और समस्त पोलिटिकल कैदियों को छोड़ देने का प्रस्ताव पास हुआ। देखें लाट महोदय अब क्या कहते हैं।

२—११—२२

देहरे की कानफन्स कुशलपूर्वक होगई। भारतवर्षीय सभी नेता पहुंचे थे। दे० दास भी पहुंचे थे। प्रस्ताव एक भी काम का नहीं था। सब पुराने गीत थे। दास कहते हैं 'जनता का स्वराज्य' चाहता हूं। Swarajya for masses.

७—११—२२

लीडर में सिविल डिसओबिडियन्स कमेटी की रिपोर्ट पढ़ी, विचित्र रिपोर्ट है, कमेटी की राय में "देश तयार नहीं है"—प्रतिरोध के लिये काऊन्सिल में जाना चाहिये।

८—११—२२

दोनों दलों के विचार पढ़े-दास महाराए पार्टी की सी बातें कर रहे हैं। खूब रामलीला है—

१३—११—२२

कल का व आज का लीडर पढ़ा—दोनों में दोनों दलों की सम्मति पर प्रकाश डाला गया है। पं० मोतीलाल काऊन्सिल के पक्ष में हैं। हकीमजी भी। दूसरी ओर श्री० राजगोपाला-चार्य और उनके दोस्त भी हैं।

१४—११—२२ से २५-११-२२

राजतरङ्गिणी (काश्मीर का इतिहास) ६ तरङ्ग समाप्त।

२८—११—२२

काऊन्सिल में जाने का प्रश्न गया कांग्रेस में गया।

३०-११-२२

हमारे साथी लाल मुहम्मद बड़े भद्र पुरुष हैं। खूब शेर सुनाते रहते हैं। उन्होंने आज स्वयं आकर दो वज़नी मिसरे सुनाये—

—"न जागने में है लज्ज़त न शब के सोने में
मज़ा जो पाया जो पिछले पहर के रोने में"
"कामिल"

—"उस बोरिया नशीं का दिला मैं मुरीद हूं
जिसके रेयाज़ जुहुद में बू-ए-रया न हो"—

इस मास में गोंडा के महम्मदजमासाहब, लहरपुर सीतापुर के गिरजाप्रसाद आदि छूटे।

१-१२-२२

बा० रामशरण, दलश्रृङ्गार, केदारनाथ, विश्वनाथसिंह आदि का पञ्चतन्त्र समाप्त हुआ।

बस्ती के रामानुग्रहलाल छूटे।

२-१२-२२

प्रान्तिक-कांग्रेस कमेटी में फूट पड़ गई है—खेद है!

७-१२-२२

प्रथम तरङ्गिणी समाप्त, ८८०० श्लोक हैं।

१०-१२-२२

अकाली छूट रहे हैं, आज जेलमें आये हुए एक वर्ष हुआ।

१३-१२-२२

ला० लाजपतराय के पिता का स्वर्गवास हुआ।

१४—१२—२२

द्वितीय राजतरङ्गिणी समाप्त।
नेहरू आदि म० गान्धी जी से मिलने के लिये गये।

१५—१२—२२।

कुँ० विश्वनाथसिंह छूटे।

१८-१२-२२

सर बटलर की स्पीच निराशाजनक है।

१९-१२-२२

केदारनाथ छूटे।

२१-१२-२२

तृतीय राजतरङ्गिणी समाप्त।

२२-१२-२२

चतुर्थ राजतरङ्गिणी समाप्त।
ठा० राजकुमार, पं० राममनोरथ, इसहाक छूटे।

२८। १२। १२

लखनऊ में रहनेवाले स्पेशल क्लास वालों के लिये नये विचित्र नियम हैं। घी, दूध, गया— अखबार गया, मि० दास की स्पीच मार्के की है। शारदापीठ के शंकराचार्य १०८ में १ वर्ष के लिये गये।

२९। १२। १२

बा० रामशरण जी का रघुवंश समाप्त हुआ। नागपुर में

लिवरल फेडरेशन हुआ। मि० दादाभाई ने असहयोग के विरुद्ध बहुत विष उगला, शास्त्री जी की वक्तृता विद्वत्तापूर्ण हुई।

३१ । १२ । २२

लखनऊ में क्रिश्चन कानफरन्स हुई। मिस्टर जे० आर० चिदम्बरम् की स्पीच मार्के की है। आप कोआपरेशन के लिये हैं। कम्पाउण्डर लोगों की भी कानफरन्स हुई— वे कहते हैं कि उनको मेडिकल असिस्टण्ट कहा जावे। गांव के लोग उनको गनपाऊडर या कोई कोई कनटोपर कहते हैं, जिससे उनका उपहास होता है और शान में फरक आता है। स्वामी श्रद्धानन्द छूट गये।

गया कांग्रेस में मि० सत्यमूर्त्ति का "अंगरेजी माल का बहिष्कार" का प्रस्ताव फेल हुआ। सब्जेक्ट कमेटी में पास हो गया था।

शोक कि बा० अम्बिकाचरण मुजुमदार की फरीदपुर में मृत्यु हुई। बा० ब्रिजकिशोर स्वा० का० समिति के प्रधान की स्पीच पढ़ी। आश्चर्य सब तत्वज्ञान की ही बातें करते हैं। श्रीयुत राजगोपालाचार्य जी की बायकाट के प्रस्ताव में क्रोध की मात्रा दीख रही है। धन्य!

आज १९२२ जा रहा है इस वर्ष ने भारत का अभूतपूर्व आन्दोलन देखा। आशा है १९२३ प्रजा के लिये हितकारी सिद्ध होगा। शुभं भवतु,

अलीगढ़ में मुसलमानों की शिक्षा कानफरन्स हुई।

खान बहादुर मियां फज़ल—उल—हसन की विचित्र स्पीच पढ़ी। कट्टर मुसलमानी ढंग की स्पीच है। आपने मुसलमानी धर्म की पांच छः विशेषताएं बतलाईं। १- मुसलमान एक ईश्वर के उपासक हैं २— मुसलमानों में उत्तम कोटि का भ्रातृभाव है ३— मुसलमानों की शिक्षा उत्तम है

४— भारतीय सभ्यता में मुसलमानों का बड़ा भाग है
५—मातृभूमि की सेवा का आदर्श। ६-मुसलमानों में अछूत कोई नहीं-

१।१।२३

काउन्सिल जाने का प्रस्ताव रद्द हो गया। ८६० अनुकूल और १७४० प्रतिकूल संमतिएं आईं। खिश्चन कानफरन्स ने सरकार से अनुरोध किया है कि गांधी को शीघ्र छोड़ें। गया कांग्रेस में कोई विशेष कार्य नहीं हुआ। उधर लुईसाना कानफरन्स में मित्रों व टर्की में मनमुटाव हुआ।

३।१।२३

दास पार्टी बनी। इसके साथ आल-इन्डिया-कांग्रेस कमेटी के ११० मेम्बर हैं। राजगोपालाचार्य जी के ही सब प्रस्ताव स्वीकृत हुये- बहुमत के नेता यही हैं। २५ लक्ष रु० व ५०००० स्वयं सेवक मांग रहे हैं। अब तो कांग्रेस में कोई भी सार्वदेशिक नेता नहीं रहा।

४।१ २३

कांग्रेस आन्ध्र को गई। लीडर का अग्रलेख वाचनीय है। दासपार्टी काऊन्सिल के लिये खड़ी होगी। लीडर कहता है कि ये लोग केवल विरोध करनेके उद्देश से जा रहे हैं इसलिये कामयाब न होंगे।

५।१।२३

हमारे साथी रामलाल मिश्र छूटे- दूसरी बारीग खाली हो गई, इसलिये उधर के ७-८ भाई सब हमारे वार्ड में आये हैं। निरञ्जनप्रसाद सादाबादी, पं० ब्रह्मदेव शर्मा पड़रौना-वासी, बाबूराम उर्फ शान्तिस्वरूप आदि हैं।

सर्वन्ट की राय में दासपार्टी का होना अच्छा नहीं है। लीडर कहता है कि दासपार्टी सर्वथा कांग्रेस से पृथक् हो

आय तो अच्छा है, टर्की अड़ रहा है। जर्मन झमेला चल रहा है।

६। १। २३

श्री० श्रीनिवास शास्त्री जी का भाषण, "हमारे सन्मुख कार्य"—पढ़ा। लेनिन की किसी संवाददाता के साथ बात चीत पढ़ी।

७। १। २३

मि० विपनचन्द्र पाल लिखते हैं कि पुरानी कांग्रेस मर गई,

८। १। २३

दास पार्टी की कानफरन्स फरवरी में होगी।

पं० कपिलदेव मालवीय का लेख "हमने कांग्रेस क्यों छोड़ी" पढ़ा।

१०। १। २३

राजतरङ्गिणी संग्रह करने योग्य श्लोकों के अंक लिख लिये हैं। योग दर्शन के सूत्र लिख रहा हूं।

११। १। २३

चौड़ा चौड़ी केस में १७२ को प्राणदण्ड की शिक्षा सुनाई गई!!! पार्लियामेण्ट में मज़दूर दल के सदस्यों ने खूब हुल्लड़ मचाया, मज़मून था 'मजदूरों की बेकारी'

१२। १। २३

बाबा राघवदास का पत्र. दक्षिण जा रहे हैं, फिर १०८ म आयंगे ऐसी संभावना है। उत्तर दिया।

'महात्मा जी क्या कहेंगे इस शीर्षक का एक लेख कपिल-देव मालवीय का छपा है। कहेंगे क्या? आयेंगे तो अपना माथा पकड़ के बैठ जायंगे।

१४-१-२३

ला० लाजपतराय लाहोर सेण्ट्रल जेल में आगये हैं।

फ्रान्स ने जर्मनी का रूर जिला दबा लिया। जर्मन असहयोग कर रहे हैं,

१४-१-२३

शोक कि प्रि० विश्वनाथसिंह प्रभुपुर निवासी का देहान्त होगया। यहां से छूटकर 'गया' गया था, वहां दस दिन स्वयंसेवक रहा। फिर घर जाकर बीमार होगया और २-३ दिन के ज्वर में ही समाप्त हुआ। ठा० गदाधरसिंह का एकलोता पुत्र था।

१७।१।२३

बा० रामशरण एम० ए० छूट गये! ब्रह्मदेव शर्मा ने अच्छे शब्दों में एक मानपत्र अर्पण किया।

१६।१।२३

आज चौड़ा चौड़ी केस के १० कैदी यहां इस जेलमें आये स्टेशन से जेल तक पोलिस खड़ी थी। जेल में भी सब कैदी बारीग म बन्द कर दिये थे। ११ बजे बारीगें खुलीं, लोग कहते हैं बेचारे सीधे लोग हैं। ऐसे लोग ऐसा घोर काम नहीं कर सकते।

बाबा राघवदास का ऊरई से पत्र आया-बम्बई जारहे हैं। स्पेशल कांग्रेस लाहोर में होगी। 'न्यूपार्टी' शीर्षक पं० कपिल-देव का लेख पढ़ा।

२०—६—२३

दलश्रृङ्गार और रसूल छूटे

२१—१—२३

चौरा चौरी के केस के विषय में कलकत्ते के पादरियों ने लेख अच्छा लिखा है। कहते हैं कि ऐसे फैसलों से अंग्रेजों व देशियों में सदैव के लिये मनमुटाव हो जायगा।

२२...१...२३ (बसन्त)

हमने बसन्तोत्सव खूब मनाया। ब्रह्मदेवप्रसाद माणिक व

पं० महादेवप्रसाद की फूलों की चित्रकारी अवर्णनीय थी। फूलों का बनाया हुआ "भारत वर्ष का चित्र' अत्यन्त मनोहर था। गत वर्ष बरेली में धूम हुई थी। ऋतुराज! हम सब जेलबन्धु तेरा स्वागत करते हैं।

२३...१—२३

शारदापीठ के शंकराचार्य भागलपुर में हैं।

२४—१—२३

मालवीय जी चौड़ा चौड़ी केस की हाईकोर्ट में अपील करेंगे। ता० १६ फरवरी नियत है।

मि० दास अपनी जमीन, बंगला वगैरे बेच रहे हैं

भारत में भिन्न भिन्न मतों की भरमार है।

बा० रामशरण का पत्र आया ... मुरादाबाद सो रहा है।

२५—१—२३

चौड़ा चौड़ी के विषय में अफरीका का तार—ऐंड रिबेलियन में ७५०० को कैद व ३४ को फांसी हुई थी। उस दंगे में १२०० मनुष्य मरे थे। चौड़ा चौड़ी में २२ मरे और उसके बदले में १७२ को फांसी!!!

नई पार्टी की मीटिंग बम्बई में २७ को होगी।

मुलशी पेट का सत्याग्रह फिर चल रहा है।

२३—१—२३

श्री० राजगोपालाचार्य कहते हैं २५ लक्ष रुपये रेल और तार में ही खर्च होंगे। लार्ड पील कहते हैं कि 'रिफार्म स्कीम में अधिक सुधार करने का समय अभी नहीं है।

२७—१—२३

रायल-कमीशन 'सिविल सर्विस' के विषय में आ रहा है।

२८—१—२३

ठा० मशाल सिंह पोलिटिकल कैदियों को छोड़ने के बारे में प्रस्ताव ला रहे हैं।

२९—१—२३

पं० महादेवप्रसाद छूटे। लीडर ने पोलिटिकल कैदियों के विषय में सुन्दर अग्रलेख लिखा है।

३१—१—२३

नये गवर्नर की स्पीच, पोलिटिकल भाई छूट रहे हैं।

लाट ने इनको छोड़ना निश्चय किया। सिर्फ एक को न छोड़ेंगे। न जाने यह व्यक्ति कौन है। हम लोग भी दो चार दिन में छूटेंगे।

१, २—२—२३

डा० सप्रु का प्रयाग का भाषण विद्वत्तापूर्ण था। अपने अनुभव बतलाये कि सरकार की मशीन किसप्रकार काम कर रही है। रिफार्म कहां तक सफल हुए। लखनऊ जेल से ७० छूटे। प० चौधरी का एक सुन्दर लेख 'वर्त्तमान दशा' पर लीडर में आया। मालवीय जी ने भी वर्त्तमान स्थिति पर हिन्दु विश्व-विद्यालय में व्याख्यान दिया। बी० सी० पाल ने कांग्रेस व खिलाफत के बारे में फिर लेखनी उठाई है। जार्ज जोसेफ कहते हैं कि प्रथम प्रथम हम लोगही कामयाब रहे, गवर्मेण्टका रोब जाता रहा था। पश्चात् चौड़ा चौड़ी के मामलेसे गड़बड़ होगई।

४—२—२३

लखनऊ जेल को छोड़कर अन्यत्र कहीं से भी पोलिटिकल कैदियों के छूटने का समाचार नहीं आया। 'पोलिटिकल' शब्द के साथ खेल किया गया ऐसा प्रतीत होरहा है। साथ के रहने वाले नवयुवक अधीर हो रहे हैं

६... २... २३

लाहौर में 'लारेन्स की मूर्ति' का झगड़ा फिर चला

८... ४... २३

आज एक बिल्ली को हमने २४ घण्टे का कारावास का दण्ड दिया। यह बिल्ली गिलहरी के बच्चों को उठा ले जाती थी। इसको पास की कोठरी में बन्द करदिया है।

९... २... २३

जर्मन का फ्रान्सीसियों के साथ झमेला चल रहा है। टर्की सुलहनामे पर दस्तखत करने के लिये तैयार है। काउन्सिल में नान पोलिटिकल कैदियों के बारे में प्रश्न हुआ - पोलिटिकल वे ही समझे गये जो लखनऊ में थे। स्व० कु० विश्वनाथसिंह के पिता ठा० गदाधर सिंह ने उनके जेल जीवन के बारे पूछा है, लिखकर भेजता हूं।

१०... २ .. २३

सादाबादी सेठ निरञ्जनप्रसाद छूटे।

११... २— २३

लीडर ने पोलिटिकल कैदियों के बारेमें फिर पूछा है अच्छा लेख है। हमारे नवयुवक साथी कुछ निराश हुये। उनको समझाया गया। लाहोर में बैरिस्टर दुनीचंद फिर पकड़े गये।

१२... २ ...२३

स्वा० विचारानन्द मिले प्रयागमें दोनों दलोंमें समझौता हो गया। दो मासतक कोई किसी का विरोध न करेगा। विधायक कार्य क्रम रहा।

पं० प्रभुदयाल जी छूटे महाभारत-सारोद्धार व शाश्वत धर्म दीपिका ये दो पुस्तक संग्रह करने योग्य हैं

१५–२–२३

मुसलिम नैशनल युनिवर्सिटी के कनवोकेशन के अवसर पर श्री पी० सी० रायका अद्भुत व्याख्यान हुआ। ऐसा ऐतिहासिक व्याख्यान मैंने कभी नहीं पढ़ा। आपने मुसलमान भाइयों को उपदेश दिया कि भारत का पहले ध्यान रक्खो।

१६–२–२३

एनीबिसएट की कनवेनशन के समाचार मिले औपनिवेशिक स्वराज्य ध्येय है।

१७–२–२३

दास की स्कीम पढ़ी। लीडर की राय भी जानी।

बाबा राघवदास बम्बई से लौटे- गोरखपुर में कानफरन्स की तैयारी करवायेंगे।

१८–२–२३

बम्बई गवर्मेंएट ने भी स्पेशल क्लास के नियम बनाये। सिर्फ सिपल वालों को स्पेशल मिलेगा। विचित्र नियम है।

२०–२–२३

भारत सारोद्धार समाप्त

प्रिय ब्रह्मदेव शर्मा पड़रौना निवासी 'योगदर्शन' पढ़ते हैं। समझदार होनहार युवक हैं इनको राजनैतिक क्षेत्रका व्यापक ज्ञान है इनको लिखने का अच्छा अभ्यास है। ऐसे युवकों को शिक्षण देने की आवश्यकता है। योगके समाप्त होने पर—न्याय दर्शन करादेंगे। गीता तत्त्व भी समझा रहे हैं।

२१–२–२३

कलकत्ते में न्यूपार्टी की सभा हुई। परिणाम कुछ नहीं हुआ मि० दास के विचार सब ने सुन लिये। मिस्टर चक्रवर्त्ती पाल आदि पुराने देश भक्त विद्यमान थे।

२२-२-२३

ज्ञानेश्वरी समाप्त—ज्ञानेश्वरी क्या है ज्ञान सागर है,

२३-२-२३

तुलसी रामायण का कलियुग वर्णन महाभारत के वर्णन से मिलता है।

२३-२-२३

शाश्वत धर्म दीपिका समाप्त।

चौरी चौरा केस ७ मार्च को होगा। मालवीयजी अग्रेसर रहेंगे। रामदास गांधी 'नवजीवन' केस में तम्बीह देकर छोड़ दिये गये। सम्पादक कार लेकर १ वर्ष के लिये भेजे गये।

२५-२-२३

बाबा भगवानदास जी का वर्त्तमान स्थिति। पर लेख अत्यन्त विद्वत्ता पूर्ण है।

२६। २। २३

निखिल भारतीय शिक्षण कानफरन्स काशी में होगी।

२७। २। २३

मि०सत्यमूर्त्ति ने प्रयाग में कहा कि जब समय आया तब अच्छी तरह डटे नहीं, यही भूल हुई। मि० दास आज अनुयायिरहित नेता हैं पर वह दिन समीप ही है जब सब लोग उन्हीं के पीछे आवेंगे।

२८-२-२३

आज गढ़वाली के लिये 'गिरिराज के लिये सन्देश' लिखा काउन्सिल के प्रश्न से विदित हुआ कि केवल १०५ पोलिटिकल छोड़े गये हैं। १४१ अभी नहीं छोड़े गये।

१, २ । ३ । २३

अठारह मार्च (गान्धी दिन) भारतभर में मनाया जायगा हड़ताल होगी। इन बुद्धिमानों को एक वर्ष के बाद हड़ताल सूझी है। होनी चाहिये थी उसी दिन जिस दिन पकड़े गये।

३ । ३ । २३

काउन्सिल व आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी के सब समाचार कल के लीडर में आये हैं।

४ । ३ । २३

साथियों के सब सन्देश, समाचार आदि नोट कर लिये। अन्य कैदियों के भी। बाहर जाकर इनके सम्बन्धियों के पास पत्र डालने हैं।

आज होली धूम धाम से मनाई गई। गत वर्ष लखनऊ में 'होली' होली थी। जेल भरमें आनन्द मङ्गल है। आज हमारे साथी नवयुवक ब्रह्मदेव शर्मा, माणिकचन्द, सूरजलाल भी आनन्द मोद में हैं, इन्होंने आज मुझे बेतरह रंग दिया है।

५ । ३ । २३

वर्किंग कमेटी भारत भर में घूमेगी।

६ । ३ । २३

सर गंगाराम के पत्र से विदित हुआ कि कलकत्ते में भी लारैन्स की एक मूर्ति है उसपर लिखा है 'योद्धा व राजकार्यपटु'—इसी तरह लाहोर की मूर्ति के शब्द हटाकर कलकत्ते की मूर्त्तिवाले शब्द लिखे जायं तो झगड़ा मिट सकता है। सर सर्वाधिकारीका भी यही मत है। असली बात यह है कि यह मूर्त्ति विलायत में लण्डन शहर के लिये बनी थी। वहां लोगों ने पसन्द नहीं किया तो लाहोर में लाकर लगादी गई। पंजाब लारेन्स का कार्य क्षेत्र रहा है।

७ । ३ । २३

महाविद्यालय का उत्सव सानन्द समाप्त हुआ, ब्रह्मदेव शर्मा का न्यायदर्शन अध्याय द्वितीय समाप्त ।

८ । ३ । २३

हमारे जेलर रायसाहब पं० चम्पालाल लखनऊ बदले जारहे हैं । नैनीताल से नये जेलर आरहे हैं । रायसाहब जैसे जेलर हों तो जेलों की शोभा हो सकती है । सहृदय पुरुष हैं, कर्त्तव्यपरायण हैं, दूरदर्शी हैं । अपना कर्त्तव्य करते हुए वे किसी का भी जी दुखाना नहीं चाहते ।

९ । २ । २३

श्री गणेश शङ्कर पकड़े गये । आज भवानी बढ़ई ने अपना सब हाल सुनाया, उसने अपनी स्त्रीको कैसे मारा—कैसे फांसी से बचा, कैसे काले पानी की सजा हुई और क्या क्या हुआ ।...... लेपर होने से वह लेपर वार्ड में रहता है इसके घर वालों को यही पता है कि फाँसी होगई । अब मैं बाहर जाकर इसके पिता को पत्र लिखूंगा ।

१० । २ । २३

चौरी चौरा केस में मा० मालवीय जी ने अच्छे पाइन्ट पर बहस शुरु की है ।

११ । २ । २३

जेल समाप्तिव्रत । आज पन्द्रह मास समाप्त हुए । करुणा-निधान परब्रह्म की अपार कृपा हुई । नया जग देखा, नये अनुभव हुए । मेरे पीछे मेरे तीन साथी रहते हैं—ब्रह्मदेव शर्मा, ब्रह्मदेव मल्लिक, और सूरजलाल भगवान इनको धैर्य देवे । इनको आवश्यक बातें समझादी हैं । आज सब बांधाबान्धी करडाली ।

१२ । २ । २३

प्रातःकाल हुआ स्नान सन्ध्यावन्दन के पश्चात् साथियों से सुख दुःख की बातें होती रहीं। ७॥ बजे चपरासी बुलाने आया 'चलिये'–फिर क्या था, वह दृश्य जिसने देखा वही जानता है। इधर जेल से छूटने का आनन्द तो उधर साथियों की वियोगजन्य करुणाजनक दशा। ब्रह्मदेव शर्मा ने झुककर प्रणाम क्या किया मेरे पैर अश्रुओं से भिगो दिये। माणिकचन्द मूक होगया। सूरजलाल का कण्ठ रुक गया। मेरे सफैया आदि भी दुखी थे। मेरी भी विचित्र दशा हुई। सबको दिलासा देकर बारीग से चल दिया। मैंने देखा बेचारे अन्य कैदी भी दुःखी हैं, मैं क्या करूं सन्देशे लेते लेते असली जगह के सन्देश होगये। फाटक पर आया–सब से मिला जुला जेलर साहब ने हिसाब किताब किया। छूटने का पास मिला बड़े साहब आये, उन्होंने हस्ताक्षर किये और पूछा "शास्त्री जी! जाइयेगा" मैंने कहा "जी हां" उत्तर मिला "बहुत अच्छा"·········फाटक खुला, बाहर का मार्ग दीखा—मैं बाहर हुआ जेलर साहब की बैठक में जा बैठा। चलते समय मैंने अपने साथियों को हिदायत की कि मेरी गिलहरियों की खबर रक्खें—उनके खानपान में कमी न हो।

प्रातः ८॥ बजे फाटक से बाहर आया - ९॥ बजे तक साथियों के सम्बन्धियों के पास पत्र भेजे। फिर शहर में गया। पं० विष्णुभास्कर केलकर एम० ए० हेड मास्टर हिन्दु स्कूल से मिला - और बहुत से सभ्य मिले। वहां से रेवतीराम का तालाब, बेली संस्कृत पाठशाला आदि प्रसिद्ध स्थान देख कर जेल को लौट आया। आज प्रातः काल ही जेलर साहब ने निमन्त्रण दे रक्खा था। ११॥ बजे वापस आया। १२॥ बजे तक फिर पत्रादि लिखे। १॥ बजे भोजन हुआ फिर ३॥ बजे

तक लिखाई हुई। लीडर में दो लेख भेजे। एक खुली चिट्ठी थी व एक खिलाफत के विषय में लेख था। ये दोनों लीडर में छप गये हैं। ३॥ बजे मुन्शी गंज का प्रसिद्ध स्थान देखने गया जहां गोली चली थी। स रदार वीरपाल सिंह का मकान इसी मार्ग पर है। स्थान देखकर व सब वृत्त सुनकर चित्त व्याकुल हुआ। एक जानकार मनुष्य मेरे साथ था। ४॥ बजे लौटा। जेलर साहब से आज्ञा या अनुज्ञा लेकर शहर में आया। व्याख्यान का नोटिस शहर में पहले ही घूम गया था। आर्य समाज मन्दिर में व्याख्यान हुआ। अध्यक्ष थे बा० किसमतराय जगाधरी वकील। व्याख्यान देकर ६-२० पर स्टेशन पर पहुंचे। बहुत से सज्जन स्टेशन पर ही मिले।—लगभग ७। बजे गाड़ी आई, हम गाड़ी में बैठे गाड़ीने सीटी दी। रायबरेली शहर, हमारा जेल, हमारे साथी सब पीछे रह गये। कहां एक वह दिन था कि लखनऊ से बेड़ी डण्डा पहन कर पुलिसके साथ यहां आये, कहां आजका दिनकी स्वतन्त्रता से जा रहे हैं —— सब दिन होत न एक समान।

फिर मुरादाबाद

१२—३—२२

प्रातः दस बजे मुरादाबाद आये। मार्ग में बहुत से परिचित मिले। रेल में बैठे बैठे ६०...७० पत्र लिख डाले होंगे। यह सब काम कैदी भाईयों का था। दिन भर मुरादाबाद में रहे। मुरादाबाद जेल में रहनेवाले भाइयों से मिलने गये पर मिलाई नहीं हुई। हां पुराने जमादार, देहरे जेल से आये हुए दो तीन वार्डर मिले। विशेष विशेष व्यक्तियों से मिल

कर रात्रि को ऐक्सप्रेस से देहरे के लिये प्रस्थान किया। पं० शंकर दत्त शर्मा व बा० रामशरण एम० ए० म्युनिसिपैलटी में चुनाव के लिये खड़े हुए हैं।

फिर देहरादून

१४। ३। २३

प्रातः काल का समय-स्टेशन लुकसर पर हमारी गाड़ी ठहरी थी कि बाहर से आवाज़ आई "शास्त्री जी! शास्त्री जी"— मैंने कहा कौन है? उत्तर मिला 'मैं हूं नारायणदास' आं हो! देहरे के दून यहां भी आ पहुंचे— बड़ा हर्ष हुआ। देहरे तक मार्ग भर देहरे की बातें होती रहीं- ७॥ बजे हम देहरे स्टेशन पर आ पहुंचे। सवा वर्ष के पश्चात् देहरे के स्टेशन पर आगमन हुआ -सैकड़ों भाई मिले- खूब धूमधाम हुई-शहर भर फिरे। आर्यसमाज मन्दिर के संमुख मैदान में गिने चुने शब्दों में मैंने देहरावासियों को धन्यवाद दिया और इस तरह लगभग दस बजे लोगों के हाथ से छुटकारा पाया जिस दैव ने मुझे ता० १३ दिसम्बर १९२१ को दूसरा दृश्य दिखाया था, उसी दैव ने आज मुझे दूसरा दृश्य दिखाया।

म्युनिसिपैलिटी का चुनाव

दुपहरभर चुनाव की धूम रही है। चुनाव के स्थान में अच्छा खासा मेला लग गया था। रात्रि के ११ बजे बा० नारायणदास आदि ने आकर खबर दी कि कांग्रेस की जीत हुई- चलो अच्छा हुआ।

१५। ३। २३

आज मुसलमान भाइयों का चुनाव था और आज हमारे भाई भी कामयाब हुए।

१६ । ३ । २३

प्रातः ७॥ बजे ज्वालापुर को प्रस्थान । ११ बजे यहां पहुंचा । महाविद्यालय के अधिकारियों ने बड़ा आडम्बर रचा था । शहर भर में धूम थी, विद्यालय में भी धूम थी, मानपत्रादि लेने के बाद छुटकारा हुआ ।

१७ । ३ । २३

लोगों से मिलने मिलाने में, पत्रव्यवहार आदि में ही समय गया ।

१८ । ३ । २३

देहरे में गांधी दिन धूमधाम से मनाया गया । लोगों में अपूर्व उत्साह था । हड़ताल भी ज़ोर की रही । आज युगा-संवत् (१६८०) का प्रारम्भ है ।

ता० १६ से २२ तक

देहरे की स्थिति के सूक्ष्म अवलोकन में गया । विदित हुआ कि अन्तःस्थिति अच्छी नहीं है ।

२३ से ३१ तक

ज्वालापुर महाविद्यालयका निरीक्षण व परीक्षण ।

१ । ४ । २३

तहसील व ज़िला कांग्रेस कमेटी की संमिलित बैठक हुई । इसमें बहुत कार्य हुआ । बहुत से झगड़े निपट गये । बहुत से सुधार हुये ।

४ । ४ । २३

बा० उग्रसेन जी म्युनि० के प्रेसिडेण्ट चुने गये ।

६ से १८ तक

पूर्व (परवा) दून में परिभ्रमण । डिस्ट्रिक्टबोर्ड के चुनाव में कांग्रेस के सदस्यों का आना कठिन है । जिमींदार बहुत ज़ोर मार रहे हैं जहां तहां कांग्रेस का सगठन शिथिल है ।

बड़ो कांग्रेस में दो दल हो गये, इस कारण भी शिथिलता आ गई है।

बस पाठक ! अब इस वृत्त को यहीं समाप्त करता हूं। जेल से लौट आने पर चहुंदिशा से बधाई के पत्र आये जिससे लोगों के प्रेम का परिचय मिला। जेल में आकर हमने नई दुनियां देखी और बाहर आकर भी नई– बिलकुल बदली हुई दुनियां देखी। समय की विचित्र गति है। जिस स्वराज्य की धुन में हम लोग जेल में गये उस स्वराज्य के लिये अभी बहुत स्वार्थत्याग की अपेक्षा है। अभी तक जो प्रयत्न हुआ है वह ऐसा ही है जैसे दर्या में खसखस। अब दूसरे लोग जो दूर से बैठे हमारा तमाशा या दुर्दशा देख रहे थे, कहते हैं कि 'कहो क्या कर लिया ? हम पहले ही कहते थे। इसको अज्ञान कहें, भारत के दुर्भाग्य कहें, या क्या कहें,। भगवान् हम सबको बल देवे। भगवान् हम सबको सुबुद्धि देवे। भगवान् हम सब की निराशाओं को दूर करे। मेरे सैकड़ों भाई जो अभी जेल में ही हैं उनके लिये मंगलकामना करता हुआ मैं इस वृत्त को समाप्त करता हूं। उन बेचारों के पास जब बाहर की उदासीनता के समाचार पहुंचते हैं, व्याकुल हो उठते हैं। उनके पत्रों से यह बात स्पष्ट झलक रही है। मेरा उनसे यही कहना है कि "आप लोग पुण्यवान् हैं जो जेल में हो, हम लोगों के पाप शेष हैं जो हम इस दुर्दशा को देखने के लिये बाहर आये। मेरा अपना बाहर का एक मास का अनुभव है कि बाहर से भीतर बहुत आनन्द है, जेल के बाहर रहकर ऐसी उदासीनता को देखते रहने से भीतर जेल में रहकर कष्ट उठाना हज़ार-बार अच्छा है !!!

उन नवयुवक भाईयों को शुभाशीः जो घर बार छोड़ कर केवल

देशभक्ति की उत्कट लालसा से जेल में जा पहुंचे हैं। उस भारत को प्रणाम जो अपनी आंखों महात्मा गान्धी व हजारों भाइयों की दुर्दशा देख रहा है फिर भी टस से मस नहीं होता।

१६ — ४ — २३

स्वा० सत्यदेव जी का पत्र आया। बधाई दे रहे हैं और लिख रहे हैं कि विलायत चलो। स्वा० जी आंखों को ठीक करने के लिये विलातत जा रहे हैं। मैंने लिख दिया है कि मैं इतनी शीघ्र तैयारी कैसे कर सकता हूं। चाहूं तो भी इस समय नहीं चल सकता।

२३ — ४ — २३

रायबरेली जेल से साथियों के समाचार मिले, बलिया के ब्रह्मदेव प्रसाद माणिक ता० १ मई को छूटेंगे। सूरजलाल जोलाय में और ब्रह्मदेव शर्मा पडरोनावासी कहीं अक्तूबर में। इनकी माता का एक पत्र आया है। ब्रह्मदेव का हाल पूछ रही हैं। ब्रह्मदेव शर्मा को २॥ वर्ष का दंड हुआ था। एक वर्ष और शेष है। इसकी माता को पत्र द्वारा तसल्ली दे दी कि घबराइये नहीं। ऐसे सैकड़ों युवक जेल में हैं जिनको माताओं को जो कष्ट हो रहा होगा वेही जानती होंगी। वे माताएं धन्य हैं जिन के सपुत्र देशकार्य में संलग्न हैं।

२४ — ४ — २३

श्री० कविवर पं० नात्थूराम शङ्कर जी का शुभाशीः परक एक पत्र आज मिला –

" शंकर छोड़ेंगे नहीं जो परहित की टेव
बन जावेंगे वे सुधी देशभक्त नरदेव ,,

कवियों की कृपा है, जो कहें, पर मैं तो अभी किसी योग्य नही हूं। परहित साधना व देशभक्त होना अत्यन्त

कठिन कार्य है। जेल जाने के पूर्व मैं बहुत अज्ञान में था वहां आकर बहुत सा अज्ञान दूर हुआ — देशभक्त कहलाने योग्य हो जाऊंगा तो अपना सौभाग्य समझूंगा। अभी तो देशभक्ति का अ - आ - इ - ई सीख रहा हूं।

२५ — ४ —२३

श्री ६ गुरुवर पण्डित काशीनाथशास्त्री जी महाराज का शुभाशीर्वाद भी पहुंचा।

ॐ तत्सत्, श्री कृष्णार्पणमस्तु

पत्नी पींजड़े से छूटा

जेल से छूटने के पश्चात् सब मित्रों परिचितों के पास निम्नलिखित श्लोक छाप कर भेजा गया।

शिशिर समये योऽभूत् क्लिष्टश्चिरं हतपत्नतिः।
धरणिकुहरेष्वन्तः कालं निनाय शुचाकुलः॥
कुसुमसमये प्राप्योद्यानं विकासिलतोज्ज्वलं।
किसलयरतः सोऽयं भृङ्गः सुखं रमते पुनः॥

यह राजतरङ्गिणी का श्लोक है। वसन्त में ही मेरी रिहाई हुई है इस लिये ये श्लोक उपयुक्त ही है।

अर्थ—

शिशिर ऋतु में पंखों के मारे जाने से जिसको बहुत देर तक क्लेश हुआ और जिस ने पृथ्वी के छेदों में बड़े दुःख व शोक से दिन काटे वही भृङ्ग आज बसन्त ऋतु में खुले हुए, खिले हुए, पुष्पां से भरे हुए बाग की कलियों में खूब रम रहा है।

कारागार रूपी पींजड़े से छूटा हुआ

नरदेव शास्त्री

(२)

संवत् के दिन सब परिचितों के पास निम्नलिखित आशय का कार्ड भेजा-

१—एक हों सब देश वासी देश के शुभ कार्य में।
६—ग्रह सभी अनुकूल हों इस देश के शुभ कार्य में॥
८—दिग्देवता सन्तुष्ट हों इस देश के शुभ कार्य में।
०—विघ्न बाधा शून्य हों इस देश के शुभ कार्य में॥

१६८० युवा संवत्।

जेल में रहते हुए मैंने हिन्दी कविता की तुक बन्दी का खूब अभ्यास किया था उसी तुक बन्दी का यह नमूना है। कवि लोग इस पर हँसेंगे, विद्वान कहकहा उड़ायेंगे और मैं कृतार्थ हो जाऊंगा।

पुनर्जन्म।

कारापञ्जरनिर्मुक्तः पक्षीवाक्षतपक्षतिः
पुनर्जातमिवात्मानं — नृदेवो मन्यतेतराम् ॥

पींजड़े से छूटे हुए किन्तु साबुत पंख वाले पक्षी की भांति नरदेव भी जेल से छूट कर अपना पुनर्जन्म समझता है।

स्वराज्य कब मिलेगा।

राजतरङ्गिणी के शब्दों में मैं यही कह सकता हूं कि-

यावज्जीवं दरिद्रत्वं। दशवर्षाणि बन्धनम्॥
शूलस्य पृष्ठे मरणं। पुना राज्यं भविष्यति॥

जब देशभक्त लोग जन्मभर दरिद्रता को सुखपूर्वक भुगतने के लिये तैयार रहेंगे। दस दस बीस २ वर्ष की जेल को काटने के लिये उद्यत होंगे। निर्भय होकर शूली व फांसी पर चढ़ने

के लिये तैयार रहेंगे तब स्वराज्य मिलेगा। अभी तो लोग जेल का दरवाज़ा ही देखकर आये हैं।

हम कहां थे और कहां जाना है।

प्र०—हम कहां थे ?

उ०-वह जगह तो पीछे बहुत दूर रह गई, पीछे बहुत दूर रह गई।

प्र०—कहां जाना है, कितनी दूर है ?

उ०—वह जगह भी आगे बहुत दूर है, आगे बहुत दूर है।

कारावास की रामकहानी



रत्नाकर प्रेस, कलकत्ता।

* जेलशास्त्र का स्वरूप *

जेलशास्त्र का स्वरूप।

कारावास की रामकहानी

कारागार के अनुभव

✻ जेलगाड़ी कैसे चलती है ✻

देहरादून, मुरादाबाद, लखनऊ, बरेली, रायबरेली इन पांच जेलों का मुझे स्वयं अनुभव है, और इन जेलों में दूसरी जेलों से आये हुए प्रान्तभर के अन्य साधारण कैदी व असहयोगी भाई अपना जो जो अनुभव बतला चुके हैं उससे अब जेलशास्त्र की कोई बात भी छुपी नहीं रही। जेलों में मिलने वालों में बैरिस्टर, वकील, मुख्तार, नम्बरदार, भङ्गी, पासी, चमार, डोम, पंडित, शास्त्री, मौलाना, दूकानदार, इक्केवाले, जूतेवाले, एडीटर, राइटर, प्रोफेसर टीचर, मास्टर, इञ्जिनियर, ओवरसीयर, जिमींदार, किसान, ताल्लुकेदार, एजंट, प्रेसवाले, कमीशन एजण्ट—करीब करीब सभी पेशेवाले मिले। कालेपानी से लौटे हुए भाई भी मिले। इन डामिलों से वहां की राम कहानी सुनी—सजावालों में १ वर्ष की सजा से लेकर ७० वर्ष की सजावालों तक से मिलना हुआ है। सारांश जेलों में आना क्या हुआ अजायबशालाओं की अच्छी खासी मनोरञ्जक सैर हुई। जिस ब्रिटिशराज्य में सूर्य कभी भी अस्त नहीं होता, उसी ब्रिटिश राज्य की जेलों में कितना अंधकार छुपा हुआ है इस बात को जेल में आनेवाले भाई ही जान सकते हैं।

हमारे आन्दोलन सफल क्यों नहीं होते? नौकरशाही का चक्र इतनी तेजी से क्योंकर घूम रहा है? थोड़े से मुट्ठीभर

परदेशी भरतखण्ड को किस तरह भेड़ों की तरह हांक रहे हैं ? इन सब प्रश्नों का ठीक ठीक उत्तर आपको जेल में ही मिल सकता है कैदी यदि दिन मिलने के प्रलोभनों में ओवरसियर (डंडेवाले), पहरेवाले, नम्बरदार, बरकंदाज़, मेट, टीचर बनकर अपने भाइयों को संभाल रखने में जेलवालों से सहयोग न करें तो जेल गाड़ी क्षणभर में खड़ी होजाय। पक्के को दस दिन, डण्डे वालों को आठ दिन, पहरे वाले को तीन दिन, नम्बरदार को छः दिन मिलते हैं। मिलने का मतलब यह है कि इतने दिन उनके प्रतिमास कम कर दिये जाते हैं जिस से कैद की मियाद कमहोती जाती है। नेकचलनी-(जिससे मतलब जेल के नियमों के अनुसार चलने व जेलाधिकारियों को खुश रखने से है)—के १५ दिन अलग मिलते हैं। सारांश जेल के लोग प्रसन्न रहें तो एक बर्ष का कैदी नौ मास में घर आ जाता है। कोई खास अच्छा काम किया जाय—अच्छा भी जेलवाले चाहते हैं वैसा-तो भी खास दिन मिलते हैं—सांप मारने के भी दिन मिलते हैं, सांप जैसा छोटा मोटा हो वैसे थोड़े या बहुत दिन मिलते हैं,-बस पाठक! इन्हीं प्रलोभनों में आकर कैदी भाई ही कैदी को चलाते रहते हैं' और अधिकार पाकर भाइयों को कष्ट देते रहते हैं,—किसी तरह जेल के अधिकारियों को खुश करना यही मतलब रहता है।

भारत में नौकरशाही का चक्र भी इसी लिये घूम रहा है कि उस चक्रके फिरानेमें हमारे ही भाइयोंका हाथलगा हुआ है।

भारत में ४००-४५० छोटे बड़े जेल हैं। उन में लग भग तीन लक्ष कैदी होंगे। कालेपानी के १५-२० सहस्र भाई अलग हैं ही। प्रायः सब इसी जेलशास्त्र की विचित्र पद्धति पर चलाये जाते हैं। इतने कैदियों का सम्बन्ध लगभग २५ लक्ष भारतवासियों से लगता होगा। इतने दुखी भारतवासियों

का परम्परा से भारत पर जो प्रभाव रहता होगा, उस का अनुमान यह लेखनी नहीं कर सकती' लाखों आदमियों के ज़बरदस्ती के ब्रह्मचर्य से लाखों वंश निर्वंश रहते होंगे। कितने वंश निर्मूल हुए होंगे!!!

क़ैदी किन अपराधों में आते हैं

क़ैदी किन किन अपराधों में प्रायः आते हैं यह भी ज़रा सुनिये। मारपीट, खून-खराबी, चोरी, डाका, आवारागर्दी, चालचलन (चालचलन का अर्थ सरकारी कोड में और ही है) मैंने अनेक नवयुवक असहयोगी भाइयों के टिकिटों पर Bad charecter'बुराचलन'ऐसे शब्द लिखे देखे हैं। जो जेल-वालों के अन्याय को स्वीकार न करे वही 'बुरेचलन' वाला समझा जाता है। इन नवयुवकों का यही अपराध था-यदि यह अपराध है तो-कि कभी अन्नत्याग किया, कभी कोई अनुचित हुक्म नहीं माना, कभी 'बन्देमातरम्' की गर्जना कर डाली, कभी 'गांधीजी की जय' बोलदी। मैंने इन इन धाराओं के क़ैदी देखे---१०७, १०८' १०६, ११०, १११, १४३' १४४, १४७, १४९' १८८, ११७, १२०, ४२५' ३९५, ५०६, १२४, १७-१'--१७-२,--हमारे अच्छे अच्छे असहयोगी भाई १०७ १०६, ११०, में भेजे गये। जब बा० भगवानदास जैसे प्रसिद्ध विद्वान् १०७ में लाये गये तब तो इतना आक्रोश मचा पर अन्य सैकड़ों भाई इसी में लाये गये तब अखबार वालों का मुख क्यों बन्द हुआ समझ में नहीं आता। बिड़हर (फैज़ाबाद) की लूट के क़िस्से में सैकड़ों निरपराध भाई फांसे गये, तब सम्पादक लोग कहां सोये थे। अलमोड़ा नैनीताल के सैकड़ों सीधे साधे पहाड़ी भाई पशुओं की भांति घेरकर जेल में ठोसे गये तब सम्पादक समाज

किस निद्रा में था ? भला हो गणेश शंकर का कि रायबरेली की घटना के समय उन्होंने बड़ा आन्दोलन किया। मेरा तो यह अनुभव है कि शिक्षित समाज की अपेक्षा उन गरीब भाइयों ने सहस्त्र गुण अधिक कष्ट सहा है—वेही धन्य हैं, वे ही मान्य हैं। साधारण कैदियों में चोरी, अवारागर्दी, डाका इन्हीं अपराधों में अधिक कैदी आते हैं—यह हर्ष है कि व्यभिचार के कैदी कम हैं। स्त्रीकैदियों की संख्या अतिन्यून है।

वर्त्तमान पद्धति के शासन में कभी यह संख्या कम होगी या नहीं यह कौन कह सकता है। यह सुनकर आश्चर्य होगा कि सरकार इतनी बड़ी कैदियों की संख्या को संभालती है, रक्षा करती है, और इन्हीं से काम कराकर इन्हीं का खर्च इन्हीं से निकालती है, नहीं, नहीं, वर्षान्त में अपने कोश में बचत भी कर लेती है। जेल खाने क्या हैं अच्छा खासा व्यापार है। रोब का रोब, आमदनी की आमदनी! गाढ़ा, गज़ी, दसूती, छींट, दरी, कालीन, कम्बल, टाट, आसन, झाड़न, फट्टे, चिकें बाण, सन की रस्सियां—एक वस्तु हो तो गिनावें—आदि चीजें यहां बनती और ये कारखाने—शुद्ध स्वदेशी कारखाने मज़े से चल रहे हैं, सिर्फ भेद यह है कि काम हम लोग करते हैं और बागडोर है परदेशी के हाथों में—कहीं कहीं सेण्ट्रल जेलों में प्रेस भी चलते हैं—

सरकार अधिक बुद्धिमान् है

इहलोक के नरकस्वरूप ये जेल पोलिटिकल कैदियों के आने से अब कुछ सुधर रहे हैं। सरकार ने पोलिटिकल कैदियों में भी पोलिटिकल, नान पोलिटिकल, फर्स्ट, सेकण्ड, थर्ड आदि भेदभाव डालकर बड़ा अनर्थ किया है। यदि हम लोग मामूली कैदियों के साथ रक्खे जाते तो और भी दशा

सुधरती। पर यह मानना पड़ता है कि स्वराज्य के लिये आन्दोलन करने वाले हम लोगों की अपेक्षा सरकार अधिक बुद्धिमान व दूरदर्शी है। सब प्रकार के अपने भाइयों से मिल कर मैं इस निश्चय पर पहुंचा हूं कि जेलों में आने के पश्चात् असहयोगी भाइयों की दशा अच्छी नहीं रही।

जो हम लोग बाहर इतने ढङ्गसे काम करते थे, सुमति से रहते थे, जेल में जाते ही सब 'सुप्रबन्ध' तरतीब Decipline भूल गये। जेल में उद्दतता का पारा बढ़ा, शान्ति का दीवाला निकल गया, अधिकतर लोगों ने जेल भुगती पर झींक झींक कर भुगती। बाहर तो गिने चुने ही लीडर थे पर भीतर आते ही सभी लीडर बन गये। युवक हुड़दंग करने लगे। बूढ़े भी उनके साथ मिल गये—मेलमिलाप के नाम पर हिन्दू-मुसलमानों में अनी। अगोर खिचड़ी रहने लगी। हिन्दू-हिन्दुओं में और मुसलमान-मुसलमानों में भी जत्थेबन्दी होने लगी। गान्धीसिद्धान्त रबड़ की भांति चहुं ओरसे खैंचा जाने लगा। बस एक ही बात अच्छी थी—वह यह कि सब लोग उज्ज्वल देशभक्ति से प्रेरित होकर आये थे—एक ही बात अच्छी थी सब लोग अच्छे कार्य में जेल आये थे-बस इसी एक बात ने आन्दोलन की लाज रक्खी। इस समुदाय में जहां तहां पक्के गान्धी-टाइप के भाई भी थे, इनकी वजह से भी लाज बची। महात्मा गांधी मन-वचन-कर्म से अहिंसा चाहते हैं पर लोगों की यह दशा है कि मन व वाणी की हिंसा को हिंसा ही नहीं समझते। अहिंसा का इतना ही मतलब समझा है कि जब तक गान्धी जी नहीं कहते तब तलवार व डण्डा नहीं उठाना चाहिये। हिन्दुओं में परम्परा के संस्कार के कारण सात्विक भाव की छटा है भी, परन्तु मुसलमानों में सात्विकभाव ढूंढने से भी नहीं मिलेंगे।

शायद यह पहला डोस है

धकापेल की शुरुआत में पोलिटिकल कैदियों से जेल-अधिकारी सभ्यतापूर्ण गौरवयुक्त व्यवहार रखते थे, पीछे से वे स्वयं समय २ पर क्यों कड़े हुए और अपना व्यवहार बदलते गये इस प्रश्न का उत्तर इसी में आजाता है। कहां महात्मा गान्धी का आदर्श चरित और कहां अनुयायियों का विपरीत चरित !! शान्तभाव से संयम से जेल काटनेवाले असहयोगियों की संख्या न्यून थी। दीन, हीन, अनाथ, अशरण भारत की बीमारी को दूर करने के लिये महात्मा ने अत्यन्त पौष्टिक औषधि तैयार की थी। उसको भारतीयों के १५० वर्ष के भूखे व कमजोर कोठे पचा नहीं सके। जब तक दवाई भीतर रही तब तक जोर करती रही, बाहर आते ही बीमार वैसा का वैसा ही है। शायद यह पहला डोस है, सम्भव है दूसरे डोस में ठीक होजाय। लेकिन डोस देनेवाला जा बैठा परवड़ा जेल में, वह कब आया, कब दवाई दी, और यह बीमार कब अच्छा हुआ।

अब बाहर के वैद्यों में ही भयङ्कर मतभेद है। भिन्न भिन्न दवाई बतला रहे हैं, भारत के दुर्भाग्य भारततिलक तिलक इस लोक में नहीं हैं, वे होते तो इस बीमारी को कुछ अंशो में अवश्य दूर कर सकते। असहयोग के पूर्व लो० तिलक की रामबाण औषधि ने ही भारत की बहुत कुछ रक्षा की और रोग को असाध्य होने से बचाया। जबतक इन वैद्यों में एक मत नहीं होता तबतक तिलक के नुसखों से क्यों न काम लिया जाय। जब वैद्यों में एक मति हो जायगी तब नई दवाई के विषय में देखा जायगा। कहीं वैद्यों के झमेले में बीमार की अबतर हालत न हो जाय। खैर हमारी जैसी भी दशा है,

एक बात अच्छी है कि भारत को स्वराज्य की उत्कट लालसा लग रही है। यदि नेता अच्छे मिले तो भारत सब कुछ करने के लिये उद्यत बैठा है। कोई नेता बहुत आगे बढ़ा है, कोई बीच में है, कोई पीछे आरहे हैं,... सभी एक ही मार्ग पर हैं यही अच्छी बात है। हमारे कई भाई दूसरे चक्कर के मार्ग से चल कर हमसे आगे निकलना चाहते हैं यह भी अच्छी बात है।

कारागार के अनुभव

(२)

❋ जेल में स्वदेशी ❋

यद्यपि जेलों को मैंने इह लोक के नरक की उपमा दी है, तथापि इनमें सब कुछ बुरा ही बुरा भरा है, यह बात नहीं। यहां की नियमितता, मितव्ययिता और स्वदेशिता प्रशंसा करने योग्य है। यहां का काम सब मशीन की तरह चलता रहता है। सैकडों कैदी रहते हैं पर कहीं हल्ले गुल्ले का नाम भी नहीं। दिन भर में पचासों-एवं सैकड़ों बार दरवाजो के ताले खोलने व लगाने वाले वार्डरों के हाथ इतने अभ्यस्त होते हैं कि उनके हाथ अपने आप चलते हैं। इस जेलरूपी जड़मशीन के बल पर भारत सरकार ने भारत पर अजीब रोब गांठा है।

स्वदेशीपन में तो जेलवालों की बराबरी कट्टर असहयोगी भी नहीं कर सकते। चर्खे यहां चलते हैं, सूत यहां कतता है, कैदियों के कपड़े यहीं बनते हैं, कम्बल यहीं तैयार होते हैं, फर्श, लुंगी, तहमत, वार्डरों के कोट, नम्ब-

रदार, पहरेदार, बरकंदाज की टोपियां, तसले, टाट, हसली कड़ा, बेड़ियां, सब कुछ यहीं तैयार होता है। ऐसी स्वावलम्बिनी संस्थाएं शायद ही कहीं देखने को मिलेंगी। कैदी ही राज, कैदी ही मजदूर, कैदी ही लुहार, कैदी ही बागवान, कैदी ही हल के बैल, कैदी ही चरस के बैल, कैदी ही तेली, कैदी ही बढ़ई, कैदी ही भण्डारी, कैदी ही रसोइया, कैदी ही गर्रा (जलचक्र) चलाने वाले मजदूर—सारांश कैदी ही सब कुछ,- और कैदियों से ही सब कुछ, यह दशा है। जेल संस्था की मितव्ययिता शतमुख से प्रशंसनीय है। जिन कैदियों को हम इतना बुरा समझते हैं कि जेल से लौट आने पर उनसे बोलने बतलाने, पास बैठने उठने में, पड़ोस में रखने में घबराते हैं वे ही कैदी सुन्दर सुन्दर सामान तैयार करके सरकार को हजारों रु० का लाभ पहुंचाते रहते हैं। यदि बाहर भी हम लोग इन कैदियों से मनुष्योचित व्यवहार करें, इनको समझाते बुझाते रहें, इनके निर्वाह का प्रबन्ध कर दें, तो भारत का भयंकर कष्ट मिट सकता है। ये लोग भारत समाज के अङ्ग बनकर उपयोगी कार्यों में हाथ बटा सकते हैं। कैदियों में बहुत से अनुपम गुण होते हैं। एक तो हमारी घृणा, दूसरी पोलिस की कृपा, तीसरे जिमींदारों की अदूरदर्शिता इन तीनों कारणों से इन लोगों की दयनीय दशा हो गई है। बेचारों को निर्वाह के लिये चोरी डाका डालकर निर्वाह करने के अतिरिक्त और कोई साधन ही नहीं रहा-- जब हमारा समाज इनको पास ही बैठने नहीं देता, तब बेचारे निर्वाह कैसे करें और अपने आश्रितों को कैसे पालें। इसके सिवाय सरकारी कतिपय कानूनों ने भी इनको तबाह कर रक्खा है।

मुक्तिफौज की चांदी ।

यदि जिमींदार लोग थोड़ासा नुकसान सहकर भी इन के नाम थोड़ी थोड़ी ज़मीन कर दें तो कितना उपकार हो । उनको १०७, १०९, ११०, २२ वगैरेमें फंसानेमें आनन्द मानते हैं, फिर जब डाका पड़ता है तब रोते हैं, पहले गन्ना नहीं देंगे पर पीछे भेली तक दे देंगे । दूसरा भयङ्कर परिणाम यह है कि सहस्रों भाई विशेषतः सांसिये व पासी ईसाइयों के चुंगलमें फंसकर कैद से जान बचाने की सोचते हैं । मुक्तिफौज के कब्जे में सहस्रों पहुंच चुके हैं । भारत में मुक्तिफौज के ३००० ग्राम और ४००० थाने हैं । भारत समाज ! तू कब जागेगा । स्मरण रहे जहां भारत में ३-४ लक्ष कैदी व उनके सम्बन्धी मिलाकर २५-३० लक्ष मनुष्य-नर-नारी रात दिन लम्बे २ सांस लेते रहते हैं, वहां हे भारत ! तू सुखी कैसे रह सकता है ? खैर हम तो १५० वर्ष में इतने हीन व दीन हो चुके, पर हमारी शक्तिशालिनी सरकार क्यों नहीं इतना बन्दोबस्त करती ? इस प्रकार बार २ जेल में ठोस कर भारत के लक्षों मनुष्यों को क्यों जबरदस्ती चोर बना रही है ! इस कुप्रथा से सब जगह के चोरों व डाकुओं के एक साथ रखने से एक अच्छी खासी चोरों व डाकुओं की एक जबरदस्त क़ौम बन रही है। समझ में नहीं आता यह क्या शासन है जिसमें चोरी नहीं गई, जिसमें जारी बढ़ रही है, जिसमें मद्यादि व्यसन बढ़ रहे हैं, लोगों के बल का ह्रास हो रहा है, धर्म मर रहा है, देश का देश नपुंसक हो रहा है । इसमें सन्देह नहीं कि प्रजा का भी पाप है किन्तु राजा भी इस घोर पाप की जिम्मेवारी से बच नहीं सकता । प्रजा जितना पाप करती है उसका चौथा भाग राजा के जिम्मे लगता है, यह शास्त्रीय सिद्धान्त है ।

रूस के प्रसिद्ध तत्त्ववेत्ता काउएट टालस्टाय ने लिखा है कि चोरों व डाकुओं को गुजारे के लिये जमीनें देकर ठीक करना चाहिये, व्यभिचारियों का विवाह करके व्यभिचार मिटाना चाहिये, परस्पर के झगड़ों को सहनशीलता से मिटाना चाहिये। यह बात जरा कानों को विचित्र लगेगी पर इस में बहुत कुछ सत्य भरा है और यह तभी हो सकता है जब राजा प्रजा को पुत्रवत् समझकर पालना करे। काऊएट टालस्टाय के चेलों ने (लेलिन प्रभृतियों ने) अपने गुरु के वचन पर कितना अमल किया जग जानता है, काऊएट के दूसरे जगप्रसिद्ध शिस्य महात्मा गान्धी भारत में जो कुछकर रहे हैं वह भी जग से छुपा हुआ नहीं हैं, लेलिन व म ात्मा गान्धी के प्रकारों में बड़ा भेद है। अधिकार भेद, देशभेद, व संस्कृत भेद के कारण एक ही गुरु के दो शिस्यों की कार्य प्रणाली में इतना भेद पड़ गया,खैर इस विषयमें फिर विस्तृत रूप म लिखूंगा, पहले कारागारका अनुभव समाप्त हो जावे।

कारागार के अनुभव

(३)

एक आश्चर्य की बात

यह एक आश्चर्य करने योग्य बात है कि जो गवर्मेण्ट अपने ही जेलों के भीतर, इतना अधिक स्वदेशी का पक्ष लेती है—चर्खे व करघे सहस्त्रों की संख्या में चलाती है, वही गवर्मेण्ट, बाहर के चर्खे के प्रचार से इतना क्यों घबराती है? कारण यह है कि जेलों के अन्दर के चर्खे उसके काबू के हैं। उनके पीछे गवर्नमेंट का हाथ है, और बाहर के चर्खों के पीछे भारतीय जनों का हाथ व अधिकार है। इस बाहर के चर्खे से इस लिये डरती है कि चरखा फिराते फिराते भारतीयो के हृदय भी चरखों के साथ फिर गये तो भारतवर्ष ही हाथ से जाता रहेगा। यह स्पष्ट है कि चरखे के प्रचार से भारत में चरखे इतने जोर से नहीं फिरे जितने कि भारतीयों के हृदय फिर गये। जेल के भीतरके चर्खे कैदी लोग फिराते-तो हैं,-पर उस के फिराने में उनकी विवशता एक मुख्य कारण है। अन्दर के चर्खे हृदय शून्य लोग केवल जेल—अधिकारियों के

दंड के भय से फिराते हैं—और बाहर के चर्खे सहृदय स्वतन्त्र्याभिलाषी उत्साही भारतवासी चलाते हैं। इसी लिये गवर्नमेंट को उन चर्खों के चलाने पर भयङ्कर क्रान्ति नजर आती है—गवर्नमेंट को निर्जीव चर्खोंसे डर नहीं-क्यों कि उस के पास इन चरखों का मुकाबला करने के लिये मशीन के चर्खे असंख्य संख्या में विद्यमान हैं, डर उसे सिर्फ सजीव हृदय भारत का है जो चर्खे के साथ बड़े वेगसे घूमता है--चर्खा भी क्या अजीब वस्तु है, गवर्नमेंट के हाथ में जाकर वही चुपचाप चलता हुआ भारत को गारत करता है--और इधर वही म० गांधी का हाथ लगते ही जोर से चिल्लाने लगा है-कहीं "वन्दे मातरम्" की गर्जना करता है, कहीं 'अल्ला हो अकबर' चिल्लाता है, कहीं 'भारत माता की जय' बोलता है। कहीं 'असहयोग के गीत गाने' लगता है कहीं पुराने ज़माने के अनूठे दृश्य दिखाता है। मैं तो यह समझता हूं कि चर्खा--उस के पीछे जैसे हृदय होंगे वैसे ही बोलेगा, जैसे मनुष्यों के हाथ लगेंगे वैसे ही बनेगा, फैशन के भूतों के हाथों में जाते ही "फैशन" की चीज बन जायगा, सेठ और साहूकारों के हाथों में जाते ही चांदी, तांबा, पीतल, सोना आदि का रूप धारण कर सेठ जी के कमरों की शोभा बढ़ायाकरेगा,—जैसा की बम्बई के सेठों के यहां चांदी के चर्खे देखने को मिलेंगे रईस लोग तो लकड़ी के चर्खों से बेहद डरते रहते हैं।—

॥ चल मेरे चर्खे ॥

सारांश चर्खा भी अजीब वस्तु है व्यापारियों के हाथों में जाते ही धन कमाने का ज़रिया बन बैठा, सैकड़ों प्रकार के चर्खों के नमूने व उनके व्यापार के नाम पर गरम दिनों जो लूट मची है उसको कौन भूल सकता है—वाहरे चर्खे! तेरा

अजीब भाग्य है– जो तू तीन युग तक केवल स्त्रियों के हाथ में रहा वही तू कलियुग की अंग्रेजी सभ्यताके प्रतापसे पुरुषों के हाथों में आ बैठा। शायद भारतवासी पुरुष स्त्री बन गये हैं इसलिये यह परिवर्त्तन हुआ है और स्त्रियें कलियुग के व अंग्रेजी सभ्यता के कारण अधिक स्वतन्त्र बन रही हैं–इस लिये शायद वे तुझ (चर्खे) से स्पर्श करने में भी घबराती हैं। परलोकवासी बा० अवध नारायण मुखत्यार (जिनकी लखनऊ जेलमें शोचनीय मृत्यु हुई) ने चर्खे व चक्की पर सुन्दर गीत बनाया था, वह इतना सुन्दर गीत था कि उसकी प्रतिध्वनि मेरे कानों में अब तक गूंज रही है–मुझे तीनों की टेक मात्र याद रह गई है–चर्खे के गीत की टेक थी (चल मेरे चर्खे) और चक्की के गीत की टेक थी (चल मेरी चक्की) चर्खे के गीत में उन्होंने बतलाया था कि दस लकड़ी के चर्खे पर ही बड़े २ चर्खों की चाल निर्भर है इस मेंसन्देह नहीं महात्मा गांधी जी के हृदय के भीतर की गुहा में केवल इसी चर्खे के चलाते रहने से अभिप्राय नहीं है–यह चर्खा तो एक निर्जीव तुच्छ वस्तु है पर सजीव भारतवासी इस चर्खे द्वारा बड़े २ कार्य कर सकते हैं–पर चरखा चलना चाहिये हरएक विषय का न केवल सूत का—हां अवध नारायण जी के दो एक गीत मिलगये, पाठक! ध्यान से पढ़िये जिससे स्वर्गीय अवध-नारायण की आत्मा को सन्तोष हो।—

चल मेरी चक्की

(१)

चल चल मेरी, चक्की प्यारी!
भारत की तू राजदुलारी, है अति पालन हारी।

चर्खे की तू सगो बहन है, चक्र सुदर्शन धारी ॥ चल०
हा-हा-शब्द बुलावे हरिको, आवे कृष्ण मुरारी ।
मोहन-तन धरी भारत नैया, देवें पार उतारी ॥ चल०
ब्रिटिशन्याय की सत्ता पीसूं, आटा के मिस सारी ।
भारत दुःख दरिद्र को पीसूं, हो स्वराज्य सुखकारी ॥ चल०

(२)

खली को कूटूं मन चित लाय !
कूट नीति पर अवलम्बित जो, ब्रिटिशन्याय चितलाय !
फूट मिटाऊं भारत भर की, दुख संकट सब जाय ॥ खली०
कूट कूट कर क्रूर पालिसी, जो भारत में रही छाय ।
दूर करो प्रभु भारत दुख को, अघ सब देहु नसाय ॥ खली०
ऐसी खली खलैना भाई, जस भारत की हाय ।
शक्ति भुजाओं में प्रभु दीजै; विपदा देऊं हटाय ॥ खली०
भारत भारत तात पुकारत, स्वामी होहु सहाय ।
सफल मनोरथ करो दयानिधि, मम स्वराज्य हो जाय ॥ खली०

चल मेरे चर्खे

(३)

(अफ़सोस कि यह गीत हाथ नहीं आया)

———

कारागार के अनुभव

(४)

इसी का यह प्रायश्चित है

जेल मैनुअल मैंने देखा नहीं, पर वही मैनुअल अब साक्षात् नियम व कवाइद का चलता-फिरता-रूप धारण करके कैदियों में घुसकर मनमाना काम करता है, उनको बारीगों में संदूकों की भांति बन्द कराता है, उसकी इच्छा पूरी न करने पर वार्डरों के हाथों से पिटवाता है, या अन्य प्रकार से दण्ड देता है, जो झाड़े फिरने के नियम, शौच फिरने के नियम, तलाशी के नियम, स्नान के नियम, बैठने के नियम, उठने के नियम, बिस्तर लपेटने के नियम, साथ चलने के नियम, परेड़ के नियम, रोटी लेने के नियम इत्यादि नियमों में स्पष्ट आभासित होने वाला कालरूप मैनुअल यद्यपि पढ़ने को नहीं मिला, तो भी, हमको उसका साक्षात् चलता फिरता बोलता रूप देखने को मिला है। प्रायः नियमों की सृष्टि जेल के सुप्रबन्ध, कैदियों की रक्षा, कैदियों के बन्धन के लिये ही हुई

है, पर सुप्रबन्धके नाम पर कितना अत्याचार ! शौच के नियमों को देखा जाय तो मनुष्य को लज्जा को ही तिलाञ्जलि देकर साक्षात् पशु बनना पड़े । पेशाब भी खड़े खड़े ही खड़ी बाल्टी में खुले मैदान में निर्लज्जता से करने का प्रकार यहां देखा। ईश्वर को धन्यबाद कि पोलीटिकल कैदी जेल में आगये—नहीं तो न जाने ये बातें कब सुधरतीं। वार्डर लोग तलाशी के समय कैदियों को करीब २ नङ्गा ही कर डालते हैं । सिर्फ सीतापुर जेल में यह पाश्विक प्रथा पोलिटिकल कैदियों के साथ बरती गई, जिसके कारण हमारे भाइयों को बहुत कष्ट हुआ। बाहर रहते हुई गरीब कैदियों की सुध हमने कभी नहीं ली, शायद इसी का यह प्रायश्चित हो। सेण्ट्रल जेलों में भी हमारे भाईयों पर खूब अत्याचार हुए, बात बात पर मार तो मामूली बात है। ईश्वर का अनुग्रह कि हम लोगों के आने से मार का भूत भी भाग गया, खाने को भी बहुत अच्छा तो नहीं पर खराबों में भी अच्छा खाना मिलने लगा, बेहूदा नियमों की भी वैसी पाबन्दी नहीं है, वार्डर से लेकर ठेठ ऊपर तक के अधिकारी संभल कर काम करते हैं, अब ऊपर से यह भी हुक्म छूटा हैं कि पैरों से आटा न गूंदा जावे। इस हुक्म पर अभी पूरा अमल तो नहीं है पर कुछ कुछ अमल शुरू होगया है—

हमारे आई ०जी०

जब आई जी (I.G.) या अन्य अफसरों का दौरा होने को होता है, प्रायः तभी घण्टियों की भरमार व कायदे कानून तथा परेडोंकी धूम होने लगतीहैं। जहां दौरा हो गया कि जेल फिर सुनसान से प्रतीत होते हैं। जेल में जिसमें कि चोरी आदि से दण्डित होकर प्रायश्चित भुगतने के लिये

यहां भेजा जाता है, वहां पद पद पर कैसी चोरी होती है यह एक देखने की बात है, परं होती हैं सब चोरियां सभ्यता से। आटे की चोरी, निमक की चोरी, लकड़ी की चोरी, भाजी की चोरी, रोटी की चोरी, टाट, कम्बल, तसलादि की चोरी, कहां तक गिनें सफाई से चोरी सीखनी हो तो जेल में अच्छी तरह सीखी जा सकती है। दफ्तर के कागज़ सफाई से भगने की कमालियत हासिल करना हो तो जेल में ही हो सकती है। सारांश जेलों में चोरों ने आकर अपने प्रभाव से अपने ऊपर निगाह रखने वाले छोटे बड़े सभी अफसरों तक को खासा चोखा चोर बना रक्खा है। धर्म के नाम पर कहना पड़ता है कि बहुत से नेक अफ़सर इस बला से स्वयं बचे हैं पर वह दूसरों को बचा नहीं सकते। इस राज्य में काग़ज़ साफ रखने वालों की, हृदय साफ रखने वालों से अधिक क़दर है। इसलिये काग़ज साफ रक्खे जाते हैं न कि हृदय! पर ६० फी सदी चोरी का बाज़ार गर्म है। अथवा वे भी क्या करें नीचे से न उड़ावें तो ऊपर को क्या देवें। यह बातें किस से छुपी हैं? पर समझदार लोग 'तेरी भी चुप मेरी भी चुप' इस मन्त्र से काम ले रहे हैं। जेल में सभी वार्डर या अफ़सर क्रूर होते हैं सो यह बात नहीं। बहुत से मनुष्योचित व्यवहार करते हैं, दया से वर्तते हैं, कैदियों को वृथा नहीं सताते। यदि कैदी या कैदी के रिश्तेदार वार्डर व अफसरों की मुट्ठी गरम करते रहें तो कैदी को कोई दिक्कत नहीं रह सकती। बेचारे जो नहीं दे सकते उन्हीं की गत है। पालटि-कल कैदियों के आने से यह रोग कुछ कम हो गया है। बड़े २ डामिल कैदी तो शीशे आदि की गोलियां मुख में रख कर गले

के एक या दोनों तरफ पोली थैलियां बना डालते हैं, जिस में गिन्नी, रुपये, दुअन्नी, पैसे आदि आनन्द से रक्खे जाते हैं। जब किसी चीज की जरूरत हुई तब पैसे निकाले और वार्डर को दे दिये। वार्डर ने उसमें से आधे जेब में डाले व आधे की चीज ला दी। यह कैदी बड़े मजे में रहते हैं। वार्डर उल्टी उनकी खुशामद करते रहते हैं। जेल में एक स्त्री तो नहीं आसकती बाकी पैसे वाले को सब आनन्द मिल सकते हैं। सुना है कि ५) रुपये देने से डाक्टर गले में पोली थैली बनवा देते हैं। जेल में तमाखू का व्यापार भी खूब होता है।

सरकार ने न जाने तमाखू का प्रतिबन्ध क्यों रक्खा है। इन प्रतिबन्धों के होते हुए भी तमाखू धड़ा धड़ आती है, और कैदियों का कोई काम नहीं रुकता। काउन्सिल में बरेली के कपूर साहब ने तमाखू के प्रतिबन्ध को हटाने के लिए प्रयत्न किया था पर सरकार ने सुना ही नहीं। न मालूम सरकार की क्या हानि है-इस तमाखू के कारण जेल में बड़े बड़े अनर्थ होते हैं। उनका न लिखनाही अच्छा। हां एक बात भूल गया, जो चोर डाकू बाहर इतने निर्दय होते हैं, वे अन्दर आकर न जाने कैसे दयालु बन जाते हैं। परस्पर बड़ी हमदर्दी रखते हैं। रुपये पैसे की मदद करते हैं। आपस में अच्छी चीज़ बनाकर बांटकर खाते हैं। कभी बहुत अत्याचार हो जाय, तो मिलकर जेल वालों को तङ्ग भी करते हैं। अधिकारी लोग दुबारा कैदियों को बहुत नहीं सताते।

जेल में धर्म कर्म

जेल में धर्म कर्म की बड़ी अवहेलना है। मुसलमानों को नमाज़ पढ़ने के लिए लुंगी या तहमत मिल सकती है, पर

न जाने हिन्दुओंने क्या अपराध किये हैं जो इनको चार हाथकी लंगोटी भी मुश्किल से मिलती है। कैदी लोग इधर उधर से कपड़ा चुराकर लंगोट बनाकर पहनते हैं। धार्मिक त्योहारों में होली के दिन तेल की पूड़ियां व कुछ गुड़ मिलता है। कहीं कहीं तो केवल गुड़ही मिलता है। त्यौहारोंको अच्छीतरह से न मनाने देने से, व धर्ममर्यादा का लोप होने से, कैदी प्रायः पशुतुल्यहो जाते हैं। बाहरके लोग यदि त्यौहार के दिन या खुशीके दिन कैदियोंको अच्छी चीज़ देना चाहें,तो भी नहीं दे सकते। एक बार एक जेल में बादशाह के जन्मदिन किसी रईस ने कैदियों को मिठाई खिलाना चाहा, पर इजाज़त नहीं हुई। बाहर प्रिन्सआफ्वेल्स आए। धूम धाम कर गए, पर बेचारे कैदियों को क्या? सूखो एक मास की रिहाई मिली। पुराने भारत में ऐसे समय पर राजा लोग खुशी में आकर जेलखाने खाली कर डालते थे। पहले जेलखाने ही कम थे, क्यों कि राजा धार्मिक होते थे। इसीलिए प्रजा भी पाप कम करती थी। यदा कदाचित् इने गिने कैदी होगये, तो ऐसे मौके पर छूट जाते थे पर अब बस अल्लाह का नाम लो या सूखे अल्लाहो अकबर चिल्लाते रहो।

जेलशास्त्र का संशोधन होना चाहिये

सारांश अब वह समय आगया है जब जेल मैनुअल का संशोधन होना चाहिये, जिसमें धर्ममर्य्यादाको समुचित स्थान मिलना चाहिये, जो पण्डित लोग बाहर इतना वेदान्त छांटते रहते हैं,जो साधुसन्त जीवात्माकी एकता व अद्वैतमत का प्रतिपादन करते हैं,वे यदि जेल में आकर साक्षात् मूर्तिमान् सब जाति की एकता व अद्वैतवाद देखें तो उनका जन्म सफल हो सकता है। कैदियों में मैंने देखा कि काम के डर के मारे अथवा

सुभीते के लिये कूर्मी कायस्थ क्षत्रिय आदि भङ्गी का काम करने लगे। कितना अधःपतन !!!

बाहर वर्णव्यवस्था जन्म से कि कर्म से इसी सिद्धान्त पर आपस में सिर फोड़ने वाले लोग जेल में आकर देखें तो वर्ण-व्यवस्था का तत्त्व समझ सकते हैं। जेल में धोबी नहीं रहा, पकड़ चमार को बना धोबी ! भङ्गी नहीं रहा पकड़ धोबी को बना भङ्गी- ! राज नहीं रहा, पकड़ क्षत्रिय को बना राज-! रसोईया नहीं रहा ब्राह्मण नहीं मिलता पकड़ अनोखेलाल को दे लंगर में-! घसियारा नहीं रहा दे पण्डित को—! ईश्वर की कृपा है कि रसोई घर में जहां तक हो ब्राह्मण ही रक्खे जाते हैं क्योंकि सब जात उनके हाथ का खा सकती है पर वे अन्य किसी के हाथ का नहीं खाते—

जब मुझे देहरे जेल में सख्त सज़ा सुनाई गई तब मैंने मन में समझा कि अब लंगर में ब्राह्मण नहीं रहेगा तब मुझे वहां की भट्टी में झोंका जायगा—खैर मन को मैंने तसल्ली दी कि कैदियों को अक्सर रोटियों के कच्चे रहने की शिकायत रहती है, वहां पहुंचेंगे तो अच्छी अच्छी रोटियां खिलाया करेंगे—और अच्छे खासे मोटे मोटे रोट अपने लिये पकाया करेंगे—अफसोस—वह दिन नसीब नहीं हुआ। पाठक ! यह जेल लीला है-वाहरे इस जेल में आनेवाले-वाहरे तुम जेल में लानेवालो ! और वाहरे हमको जेल में भुगतने वाला !

—x—

कारागार के अनुभव

[५]

फिर भी कैदी भाग ही जाते हैं

इतना सख्त बन्दोबस्त रहता है तो भी बाजे खुदा के बन्दे जेलवालों को चकमा देकर भाग ही जाते हैं। भागने वाले कैदी लोहे की खिड़की तक भी काट कर पार निकलते हैं। सुना जाता है कि मामुली तागे के रोज रगड़ते रहने से महीनों में जाकर लोहे की सोखें भी कट जाती हैं। इसी लिये सायंकाल बारीग में बन्द करते समय सब कैदियों की तलाशी ली जाती है। शाम को जेलखाने के बन्द होने के पश्चात् एक भरा हुआ नक़शा जेलर साहब सुपरिण्डेन्ट के बंगले पर भेजते हैं— उसमें स्पष्ट लिखा हुआ होता है कि किस बारीग में कितने कैदी बन्द हैं, कौन पहरेदार है, कौन नम्बरदार है, कौन चाबी देनेवाला वार्डर है। उस बारीग का वार्डर कौन है। उस नक्शे के प्रारम्भ में लिखा जाता है कि आज बारीग बन्द करते समय कैदियों की तलाशी ली Nothing objectionable was found कोई एतराज़ करने लायक वस्तु, रस्सी आदि नहीं मिली। बारीग के दो ताले

लगते हैं एक ताली बारीग के असली वार्डर के पास रहती है दूसरी फाटक पर रहती है। प्रातः काल जब सब इकट्ठे होते हैं तब बारीग खोली जाती है। बारीगों को बन्द करने के बाद सब तालियों को एक सन्दूक में बन्द करके उस सन्दूक की चावी जेलर साहब अपने पास रखते हैं। यदि रात्रिमें किसी बारीग के खुलवाने की आवश्यकता हुई तो जेलर साहब आकर निकाल देते हैं। प्रत्येक वार्ड में दिन के व रात के वार्डर पृथक् पृथक् होते हैं। यदि ६ — ६ घण्टे की बारी हुई तो दोनों वार्डर रात को वहीं रहते हैं और बारी के अनुसार सोते आ जगते हैं। प्रत्येक बार्डर को बारह घन्टे ड्यूटी देनी पड़ती है। चावी वाले वार्डरकी खास ड्यूटी होती है। इनके लिये जगह — जगह पर चाबी वाले सन्दूक रक्खे रहते हैं इनको एक खास किस्म की घड़ी दी जाती है। घड़ीसहित उन सन्दूकों के पास जाकर वहां की चाबी से घड़ी लगानी पड़ती है। चाबी लगाने से घड़ी के भीतर लगाये हुए एक कागज़ पर निशान पड़ जाता है, जिससे वार्डर उस उस बारीग में ठीक समय पर गया या नहीं इस बात का पता चल सकता है। इसके अतिरिक्त जेलर, नायब जेलर, मुन्शी, लेटर – बाबू इनको — Round राउण्ड होती है। जेल की बारीगें भी आपस में बटी रहती हैं। किन्हीं को नायब बन्द करते हैं, किन्हींको मुन्शीजी, किन्ही को अंग्रेजी बाबू। जो जिन वारिगों को बन्द करता है वहीं उसकी गश्त लगती है, प्रातः बारीगों को वे ही खोलते हैं — कभी कभी बीच में एक खास बार्डर आकर पूछ आता है " सब ठीक है ? „ तब भीतर से पहरेवाला नम्बरदार या वार्डर उत्तर देता है कि ‚ सब ठीक है , ।

रात को बारह बजे जब वार्डरों की बदली होती है तब वह पहला वार्डर सब कैदियों को उठाता है और दोर को पंक्ति

में बैठने का हुक्म देता है। दूसरा वार्डर गिन लेता है फिर पहला वार्डर जाकर सोजाता है। इस गिनती में बेचारे कैदियों की बड़ी आफ़त रहती है। फिर प्रातः ४ बजे ऐसे ही बिठाया जाता है और बेचारे बैठे रहते हैं दरवाजे खुलने तक। बारीग का दरवाजा खुलकर जब गिनती होजाती है तब छुटकारा होता है। हर एक बारीग में उसमें बन्द होने वाले कैदियों के नामों की फेहरिस्त टंगी रहती है— कैदियों के के नाम के साथ कैदी का नम्बर भी लिखा रहता है। कैदी की खाट (मिट्टी की) भी निश्चित रहती है— प्रत्येक खाट पर नम्बर पड़ा रहता है। प्रातः जब नया वार्डर या जमादार कैदी का नाम पुकारते हैं तब कैदी को अपना नम्बर बतलाना पडता है। यदि नम्बर भूल गया तो कैदी की शामत आजाती है और पड़ने लगते हैं जूते। प्रातः शौचादि के पश्चात्—वहां भी नियमों व कवायदों की घण्टियों की भरमार रहती है— तब चक्कर म जमा होजाते हैं। जेलर साहब का दरबार लगता है, सबको ड्यूटी समझादी जाती है, फिर कैदी अपने अपने वार्डरों के साथ अपनी २ मशक्कत पूरो करने के लिये चले जाते हैं,— कोई बाहर, कोई चक्कीख़ाने में, कोई फाटक पर, कोई गोदाम में, कोई बाग़में, कोई दरीखाने में, कोई कहीं कोई कहीं— दुपहर को जब वार्डरों की ड्यूटी बदलती है, तब फिर गिनती होती है। महीने भर में किसी दिन, प्रायः मास के प्रारम्भ में एकाबार—

पगली

होती है। ठीक गिनती मिलाने के लिये या किसी खौफ़ के आपड़ने पर या गोल माल होने पर, या कैदो वगैरो की गड़बड़ मचने पर सब को एकदम काबू में लाने के लिये, या

भय बिठाने के लिये जो घण्टी बजाई जाती है उसका नाम पगली है- अर्थात् इसके बजतेही सब पागलों की तरह हड़बड़ा कर सब काम छोडकर, अपनी २ बारीग में बन्द होजाते हैं। इस लिये कैदियों ने इस घण्टी का नाम पगली रक्खा है — इस पगली के बजने के पूर्व दो या तीन फायर होते हैं, फिर घण्टी बजती है, घण्टी के होते ही सब काम बन्द हो जाता है। वार्डर अपने कैदियों को साथ लिये हुए फुर्ती से बारीग में जाते हैं, फिर जिस जिस का चार्ज होता है, वह वह जाकर गिनती करता है, सब का टोटल दफ्तर में मिलाया जाता है जब टोटल मिलजाता है तब जेल वाले अपनी खैर मनाते हैं।

जब गिनतीमें गड़बड़ होती है तब चारचार पांच पांच वार गिनती हो..ी है। एक वार पगलीके समय एक कैदी पानीके हौद में जा छुपा, इधर गिनती पर गिनती हुई-कुछ पता न चला तब हौद में से निकला तब जेलर ने उसकी खूब मरम्मत की,—एक बार एक कैदी शौच फिरते २ टट्टी में ही रहगया, फिर गड़बड़ हुई, बड़ी देर में वह वहां मिला,—एक वार सायंकाल के समय एक कैदी पेड़ पर जा चढ़ा,-बारीग बन्द करते समय गिनती हुई पर एक कम निकला, फेहरिस्त से एक एक नाम पढ़ा गया तब पता चला कि अमुक नम्बर का कैदी नहीं है-हुश्यार वार्डरने पेड़ पर से ढूंढ निकाला-कैदी पेड़ पर नंगा बैठा था, वार्डरों ने इसकी भी मरम्मत की। इसी कैदी ने रात को जङ्गला काट कर भाग जाने का यत्न किया, पर पता चल गया और नैनी जेल को भेजा गया।

एक—दो—तीन—चार

रात को पहरेदार कैदी की चारपाई (मिट्टी का ओटा) के पास जाकर, एक एक को गिनता हुआ एक-दो-तीन-चार

पाँच आदि कहकर ऊंची आवाज़ से गिनता है-जब सब को गिन चुकता है तब टोटल संख्या को ज़ोर से कहता है। और पीछे से बारीग का नंबर बोलता है———"अट्ठाईस, ताला जंगला, लालटैन सब ठीक है हुजूर नं० ४"—इसके पश्चात् नं० ५ वाला, इसकेपश्चात् नं०६ वाला गिनती करता जाता है। वार्डर लोग देखते रहते हैं कि गिनती तो ठीक होरही है। चाबी वाले देखते रहते हैं कि वार्डर तो नहीं सो रहे,-राउण्ड वाले देखते रहते हैं कि चाबी वाले तो ठीक ठीक काम कर रहे हैं। जेल की चारों ओर की ऊंची दीवार का नाम डंडा है, इसपर जो पहरेदार रहते हैं वे डंडेवाले कहलाते हैं। ये दूर दूर अन्तर पर खड़े रहते हैं और एक दूसरे से लोहे की टिकिया लेते व देते जाते हैं-और बारी बारी से "सब ठीक है एक नम्बर"-"सब ठीक है दो नम्बर"—सब ठीक है तीन नम्बर" इस तरह रातभर ज़ोर से चिल्लाते रहते हैं। दस २ मिनिट में एक टिकिया फाटक पर पहुंचाने का नियम है।

❃ जेल का टाइम-बटेल ❃

गरमी में		सरदी में
प्रातः ४	बजे पचासा (प्रातः उठने की घंटी)	५
४॥	,, वार्डरों को ड्यूटी पर बुलाने की घण्टी	५॥
५	,, तक बारीगें खुलती हैं	६
५–५॥	,, शौचादि	६–६॥
६	,, चने बटते हैं	७
६–११	,, मशक़्क़त	७–११
११	,, भोजन बटता है	११–११॥

मध्याह्न १॥ ,, तक विश्राम	१ बजे तक
१॥–४॥ ,, मशक़त	१–४
४॥–५ ,, भोजन बटता है	४–४॥
६ ,, बारीगें बन्द होती हैं	५॥

जेल की मशक़त

चिक २ फुट	दसूती २०—३० फुट
टाट-पट्टी ८–१० गज़	चर्खा–सूत २० छ० से १ सेर तक
बान ३०० गज़	चक्की—१५ सेर गेहूं, ३० सेर चना
ब्याब २००--२५० गज़	कालीन ६ इंच
मूंज-फर्श ६ फुट	कोलू--आध सेर से सेर भर तेल
दरी १॥--२ फुट	कम्बल ६० फुट

गाढ़ा ६० फुट

इसके अतिरिक्त पम्प, चरसा, बाग, बाहरकमान, राज कमान, लोहार खाना, गोदाम, आदि बहुत से काम हैं। चूना चक्की का भी काम होता है।

दर्ज़ी को ४ कुर्ते, ६ जांघिये, २ मिरज़ई, १६ टोपियां सीकर देनी पड़ती हैं यह प्रतिदिन की मशक़त हुई। बूढ़े--४० वर्ष के ऊपर के दुर्बल मनुष्यों को सफाई आदि का हलका काम मिलता है।

पेशी

जो कैदी अपनी मशक़त पूरी नहीं करता उनकी पेशी होती है। साहब सुपरिण्टेण्डण्ट मैजिस्ट्रेट रहते हैं और जेलर उनके पेशकार ! दिये हुये दिनों में से दिन काट लेना तनाही में देना, रामबांस, चक्की, ब्याब, आदि कामों में

लगाना— यही दण्ड है। जब कैदी रामबांस को कूटते हैं तब प्रायः यह गीत गाया करते हैं—

रामबांसको कड़ी मशक़्त, हमने से इनकार नहीं।
जेलखाने का यही रवैया, कोई किसी का यार नहीं॥

(एक कैदी को मैंने यह गीत गाते सुना)

तमाखू बिना कैसे कटे दिन रात।
ओ! तमाखू बिना कैसे कटे दिन रात॥

मालूम हुआ कि इसके पास तमाखू नहीं रही थी।

जब कैदियों को मारपीट होती है तब इनको बेतों की सजा दी जाती है। एक टिकिया के साथ बांधकर गिनती के १०, २०, ३० बेत लगवाये जाते हैं। एक कैदी कहता था कि जेल में जिसने ६० बेत खालिये फिर उससे बड़ा साहब भी डरता रहता है। सेण्ट्रल जेलों में, तड़ी आदि भयकर दण्ड दिये जाते हैं। बेड़ी हथकड़ी, डण्डा बेड़ी, खड़ी बेड़ी, आदि बेड़ियों के भी बीसियों प्रकार हैं।

वार्डरों की पेशी

वार्डर जब अपनी ड्यूटी में गफलत करते हैं तब उनकी भी पेशी होती है। इनपर प्रायः जुरमाना होता रहता है। किसी को दलेल मिलती है। कोई मुअत्तल होता है, कोई बदला जाता है। कैदी जब वार्डरपर बिगड़ते हैं वे भी कभी कभी खूब मरम्मत कर डालते हैं। इतना घोर प्रबन्ध व इतनी जबरदस्त पतियात रक्खी जाती है तो भी उपद्रव हो ही जाते हैं। प्रतिदिन साहब प्रातः ७ बजे आते हैं जब वे निकलजाते हैं जेल वाले सुदिन समझते हैं।

परेड

जेल के लिये साहब हौआ रहता है, वार्डरों के लिये जेलर हौआ और कैदियों के लिये सब हौआ हुये रहते हैं। आठवें दिन परेड देनी पड़ती है। सब कैदी अपना सामान टाट, बोरिया, बिस्तरा, कम्बल, तसला, कटोरी,—ठीक ठीक लगाकर हाथ में टिकिट लेकर खड़े रहते हैं— जब साहब देख जाता है, तब छुट्टी मिलती है। रविवार को आधा दिन काम करना पड़ता है। परेट के दिन साहब से जो कुछ कोई कहना चाहे, कह सकता है, पर जेलर साहब व वार्डरों के डर के मारे कोई कुछ कहने नहीं पाता। हां, कभी कभी कोई २ वीर कह ही डालते हैं— पीछे अधिकारी लोग उसकी क्या गति कर डालते होंगे इसका अनुमान सहज ही में हो सकता है। जब से असहयोगी लोग जेल में आये तब से रोज़ २ की झिक २ के मारे जेलर व साहब लोगों के नाक में दम है। बेहूदा बन्धन कम हो रहा है। रोबदोब ढ़ीला पड़ रहा है। दाल, भात, शाक, रोटी में कुछ फ़रक पड़ गया है।

भूतनाथ का बड़ा भाई

कैदी को एक कछ, एक कुड़ता, एक लंगोटी, एक टाट, दो कम्बल, एक तसला, एक कटोरी, इतना सामान मिलता है— हां भूल गया, एक लाल टोपी भी। साधारण कैदी को लाल टोपी, और दुबारा को काली टोपी मिलती है। एकबारा कैदी के गले में एक लोहे की हसली रहती है, इसमें एक तख़ती रहती है जिसपर दफ़ा, सज़ा, रिहाई की

तारीख छपी रहती है। दुबारा कैदियों के हाथ में एक लोहे का कड़ा और रहता है। पैरों में कड़े सबके रहते हैं। कुड़ता, टाट, कम्बल आदि पर नम्बर छपे रहते हैं। इस बर्दी को पहन कर सुन्दर से सुन्दर पुरुष भी भूतनाथ का बड़ा भाई बन जाता है। दुबारा कैदियों के पैरों में रात को सोते समय बेल डाली जाती है— जिससे बारीग के सब कैदी एकही लोहे की लम्बी संकल में बन्धे रहते हैं। कहीं कहीं प्रत्येक के लिये जालीदार पींजड़ा बना रहता है जो पिंजड़े एक साथ खुलते व बन्द होते हैं। भातू, पासी आदि जरायम पेशा लोगों के लिये कहीं कहीं ऐसा प्रबन्ध है। फांसी वाले लोगों के लिये अलग अलग तनाही होती है— जब तक उनको फांसी न लगे या छूट न जायं, या सजा बदल न जाय तब तक उनपर गारद की देखभाल रहती है। सेण्ट्रल जेलों में करीब २ यही प्रबन्ध है। विशेष है कि वहां की तनाही खास किस्म की होती है जिसको कुत्ता घर कहते हैं। जिसमें पचासों छोटी मोटी कोठरियां होती हैं पर रहता है वहां सदा अन्धकार, दिन में भी कठिनता से दीखता है। उद्दण्ड कैदियों को इस में रक्खा जाता है जिस से तंग होकर आगे दंगा करना भूल जायँ। मेरे एक मित्र अपना अनुभव कह रहे थे। इसमें आठ दिन रहने से मनुष्य पीला होकर निकलता है।

महज़ कैदी

महज़ अर्थात् सादी कैदवालों से कुछ भी काम नहीं लिया जाता, इनके हाथ में कड़ा डालना न डालना जेल-अधिकारियों की इच्छापर निर्भर है। कैदी की हैसियत पर निर्भर है।

महज़ कैदी अपने कपड़े लत्ते रख सकते हैं। पढ़ा लिखा कैदी हो तो एकाध पुस्तक भी मिल सकती है। जेल में मुसल्मानों के लिये कुरान व हिन्दुओं के लिये तुलसीरामायण लायब्ररी में रक्खी रहती है। जेल की बड़ी लायब्ररीमें ये दो ही पुस्तकें रहती हैं। पोलिटिकल कैदियों को बहुत सुभीते होते हैं-पढ़ने लिखने, अखबार मंगाने, बाहर से खाने, पीने, पहरने की चीज़ें मंगा लेने का सुविधा रहना है। पर गवर्मेण्ट प्रति मास नियम बदल रही है-न जाने ये सब सुभीते रहेंगे या नहीं—आजकल के नियमों के अनुसार तो इन पोलिटिकल कैदियों से हम महज़कैदी अच्छे हैं। सिर्फ खानपान में तंगी है। हमारे रायबरेली जेल में मेरे साथ बा० रामशरण एम०ए० भी थे और हम लोग बड़े आनन्दमें रहते थे। लखनऊ जेल की भान्ति यहां निरादर नहीं सहना पड़ता था। यहां के साहब मुकर्जी, छोटे साहब पं० नित्यानन्द जोशो, जेलर रायसाहब पं० चम्पालाल, डा० ज़हूरुद्दीन रिज़वी आदि सभी सज्जन पुरुष थे। बड़े आदरसे रखते थे। अपनी ड्यूटी बजाते हुए वे मनुष्योचित वर्त्ताव करते थे। सरकार का अन्न खाते रहने से उन का शरीर सरकार की ओर झुका रहता था तो भी उन शरीरों में भारत भूमि के परमाणुओं के मिले होने से हृदय के भीतर की तरङ्गोंकी लहर हमारी ओर ही बहती होगी इस में सन्देह नहीं।

कारागार के अनुभव

[६]

कैदी दिल को कैसे बहलाते हैं।

इतनी मुसीबतों में भी कैदी लोग दिल को बहलाने का सामान कर ही लेते हैं, समय समय पर वार्डरों से नज़र बचा कर--और कभी कभी वार्डर को साथ मिला कर, क्योंकि वार्डर भी सूखी ड्यूटी से तंग आकर मिल जाते हैं--कैदी लोग हंस हुंस लेते हैं, गाते-बजाते हैं, खेलते कूदते हैं। बाज़ा वार्डर भी बहुत खुश दिल होता है। मेरी बारीग की दीवार के पास का डंडे वाला कभी कभी ऐसा वैराग्य का गीत गाता था कि मेरा मन उमड़ आता था और मेरी नींद भाग जाती थी,--गाजा बाजा न सही, टीन, तसले पर ही तान देकर मिलमिला कर गाते हैं तब बड़ा ही आनन्द आता है। होली के दिन तो खुली छुट्टी रहती है--बस उस दिन जेलखाना जेलखाना ही नहीं मालूम देता...शाहजहांपुर के एक कैदी ने एक मजेदार गीत सुनाया उसको मैं कभी नहीं भूल सकता---

'जो जिये सो खेले फाग'

यहां राम न छाडिंही गूत,
वहां जानकी न छाड़े कङ्गण ॥ जो जिये ०—०
राजा जनक ने गौवें दीन्हीं,
सोने की सींग मढ़ाय ॥ जो जिये ०—०
राजा जनक ने हाथी दीन्हों,
सोने के हौद धराय ॥ जो जिये ०—०
राजा जनक ने पींडस दीन्हीं,
राणी ने धरिया चढ़ाय ॥ जो जिये ०—०
राजा जनक ने घोड़े दीन्हें
सोने के जीन लगाम ॥ जो जिये ०—०
तुलसोदास भजे भगवाना,
जो जिये सो खेले फाग ॥ जो जिये ०—०

ओह ! कहां है राम, कहां है सीता, कहां जनक और कहां उसकी रानी, कहां घोड़े, हाथी, पीडंस, जीन, लगाम, गौएं और उनके सोने के सींग !! कहां वह अवध का वैभव और कहां आज अवध की यह हीन दशा !! एक और झूमर उसने सुनाया—

होली खेले रघुवीरा अवध में, होली खेले रघुवीरा !
हाथमें कुंकम औ पिचकारी, भर भर मारे बदन में।
रघुवीरा अवध में, होली खेले रघुवीरा।

एक दिन ५-६ भंगी अपने कामसे निमट कर टीन पर गाते-बजाते हुए जा रहे थे, बड़े ही मधुर स्वर से गारहे थे, वह गीत यह है—

हो ! तमाखू बिना कैसे कटे दिन रात,
जेलर मारे, वार्डर कूटे
नायब लूटे, डाक्टर पीटे ॥ हो तमाखू बिना०
पास न पैसे, होवे कैसे ॥ हो तमाखू बिना०

मेरे पाठक हमारे जेल के भंगीकवियों के गीत को सुन कर मुग्ध होंगे। प्रायः कैदी लोगों को अश्लील गीत बहुत याद हैं, उन्हीं गीतों पर एक दूसरों को छेड़ा करना ह, कभी कभी इसी पर बड़ी मार पीट हो जाती है। पोलिटिकल कदी भी अपनी धज के निराले ही गीत गाते रहते हैं। कभी कभी तसले बजाते हुए निम्न लिखित गीत गाकर सारी बारीगको सिर पर लेकर नाचते थे—मुझे इनका नाच देखकर शिवजी का ताण्डवनृत्य याद आता था—

(१)

तुम्हें जुल्म करना, सितमगर मुबारक।
* * *
हमें जुल्म पर जुल्म, सहना मुबारक ॥
* * *
हमें हथकड़ी और बेड़ी मुबारक।
* * *
हमें दाल कंकड़ की खाना मुबारक ॥
* * *
हमें कैदमें गीत गाना मुबारक

हमें देश का प्राण चर्खा मुबारक ॥

*   *   *

हमें हिन्द मादर की उलफत मुबारक ॥

(२)

'बिस्तर बांध विदेशी ।
क्यों करता है अबेर ॥'

अब जो साधारण कैदी भी बाहर की धूमधाम देखकर आते हैं, उनको देश के गान भी याद रहते हैं। एक मुसलमान डण्डेवाला एक रात गारहा था—

'युरप को हिला देंगे, युरप को मिटा देंगे'

मुझे आश्चर्य हुआ कि युरप को हिलाने वाला यह कौनसा डण्डेवाला है। जब कैदी गाते हैं तब बाज़े खुशमिज़ाज़ वार्डर भी ताल देने लग जाते हैं। पर जब जेलर या किसी अन्य अधिकारी की आने की खबर मिलती तब सब चुप हो जाते हैं। बाहर के फाटकसे लेकर भीतर तक सब इशारेसे काम होता है। बाहर के फाटक से जब जेलर या साहब चलते हैं तब बाहरवाला भीतर और भीतरवाला फिर भीतर इशारा देता जाता है तब सब सावधान हो जाते हैं। हमारे सौभाग्य से हमारी बारेग में कबीरखां नामक वार्डर रक्खा गया था। वह दो मास रहा—बड़ी चहलपहल रही। जब यह ड्यूटी पर होता था तब बराबर गाया करता था। यह गाना जानता था। कण्ठ भी मधुर था। 'कन्हैया' के गीत, तथा भक्तिरस-प्रधान गीत गाया करता था।

जेल में जूआ

जब कैदियों के पास पैसे नहीं रहते तब वे आपस में

जूआ खेलते हैं-खूब जूआ चलता है ! कभी किसीका दीवाला निकलता है कभी किसी का। तमाखू की वजह से यह जूआ चलता है। पैसे न हों तो वार्डर को क्या दें, वार्डर को न दें तो तमाखू बाहर से कौन ला दे सकता है। वार्डर लोग अक्सर मिले रहते हैं तभी यह जूआ चलता है। कभी कभी कैदियों में खूब हाथापाई हो जाती है। अपनी खुराक बेचकर भी पैसे कमा लेते हैं। नौजवान लड़कों का इन कैदियों के साथ रखना अत्यन्त हानिकारक है। छोटी आयुवाले कैदी रात को पृथक् बारीग में बन्द किये जाते हैं। स्त्रियों के लिये पृथक् बारीग होती है। पाठक ! क्या कहा, जिलें पूरी बातों को जानना चाहो तो एक बार जेल में जाकर देखो।

अब मार्ग सुलभ है।

असहयोगियों ने जेल का मार्ग सुलभ बना रक्खा है। अब आप पधारेंगे तो इतनी दिक्कतें न होंगी जितनी की हम लोगों के नसीब में थीं। जाकर देखिये तो सही कैसी अजीब दुनियां है। जेल में रहनेवाले बाहर के जगत् को 'दुनियां' कहते हैं और बाहरवाले भीतर 'विचित्रलोक' समझते हैं। है भी विचित्रलोक—तीनों लोकों में न्यारा जेल-लोक सर्वथा देखने योग्य है, जिस में रहने से पूर्वजन्म के पाप कटते हैं, संसार की कर्मगति का बोध होता है, सुख दुःख-मीमांसा का परिचय मिलता है, सरकार का भय जाता रहता है, नरक-लोक का भय मिट जाता है, नौकरशाही का चक्र क्योंकर चलता है इस बात का पूरा पता मिल जाता है। देशभक्ति की परीक्षा हो जाती है, नकलियों की पोल खुल जाती है—आइये, अब मार्ग सुलभ हो गया है।

——:——

कारागार के अनुभव।

[७]

जेलके पारिभाषिक-शब्द

१–तिकड़म्

यह शब्द बाहर किसी ने न सुना होगा, पर जेल में तो इस प्रसिद्ध शब्द- 'तिकड़म्' के बिना गरीब कैदियों का काम नहीं चलता—गरीबों ही का क्या है, अमीरों का भी नहीं चलता जेलर, वार्डर व अधिकारियोंको पता चले बिना जेलनियम से विरुद्ध अपना काम कर लेना यही 'तिकड़म्' है। वार्डर भी कभी कभी कैदियों के साथ तिकड़म् में शामिल होते हैं। वार्डरों की तिकड़में अलग होती हैं, ऊपर के अधिकारियों की तिकड़में और ही विचित्र होती हैं। जेल में, बारोग में या अन्यत्र आग जलाना मना है, वहां तो केवल रसोई घर में आग जलती है और कहीं नहीं। पर इधर उधर से नज़र बचा कर आग जला लेना, 'तिकड़म्' है। बाग से भाजी चुरा लाना, रसोइयोंसे मिलकर रोटी या भात ज्यादा लेलेना 'तिकड़म्'है। अलग पका कर खाना' 'तिकड़म्' है। बाहर से वार्डरों

की मार्फत कोई वस्तु मंगा लेना 'तिकड़म' है। हस्पताल वालों से मिलकर दूध घी उड़ा लेना 'तिकड़म' है। यह हुई गवांरू कैदियों की 'तिकड़म'। पढ़े लिखे कैदियों की 'तिकड़म' इससे आगे चलती है। बाहर पत्र भेजना, बाहर से पत्र मंगाना, अखबार मंगा कर चोरी चोरी पढ़ना, अखबारों के पास जेल के हालात लिख भेजना, इत्यादि इत्यादि। यदि वार्डर लोग लोभ से न मिले रहें तो यह 'तिकड़म' चल नहीं सकती। वार्डरों की 'तिकड़म' इस से अलग है। वार्डर की लालटैन का तेल घर के लिये लेजाना, भाजी उड़ा लेजाना। तसला, कटोरा, कपड़ा जो हाथ आवे लेजाना, कैदियों से रोटी मोल लेजाना और बदले में तमाखू ला देना। कैदियों की चिट्ठी बाहर लेजाना, उनके रिश्तेदारों से मनीआर्डर मंगा कर कुछ स्वयं रखना कुछ कैदी के पास देना,- ऐसी एक नहीं बीसियों तिकड़में चलती हैं। पापी पेट व प्रलोभन जो कुछ करावे थोड़ा है। अब वार्डरों की तनख्वाहें बढ़ गई हैं नहीं तो समझ में नहीं आता ८—८ रुपये में कैसे गुजारा करते होंगे। बड़े अफसरों की तिकड़में इससे आगे जाती हैं और बड़ी सफाई से होती हैं- ये लोग बड़ा हाथ मारते हैं इस तरह तिकड़म-शास्त्र के सहारे से जेलमें जीवन कटता है। पोलिटिकल कैदी—समस्त प्रान्त को नचानेवाले कैदी इस शास्त्र में सब से निपुण रहे—पर उन दस ... बीस—पचास महानुभावों की प्रशंसा करनी चाहिये जिन्होंने इस 'तिकड़म' से कभी काम नहीं लिया और जब तक जेल में रहे तब तक गांधी-टाइप के कैदी बने रहे। बाकी लोगों का हाल न पूछिये। जेलवाले ताकते के ताकते रह जाते थे और 'तिकड़म' इतनी जोर से चलती थी कि साहब भी सब प्रबन्ध भूल गये। वार्डरों ने छोटे छोटे कामों के लिये पैसे खूब वसूल

किये। अखबारों में पहले पहले १८ अखबारों की मंजूरी थी उनमें लीडर (प्रयाग) आनन्द (लखनौ) हमदम (लखनौ) ये तीन ही यू० पी० के पत्र थे। इंग्लिशमैन कलकत्ते का था और शेष रहे १४ अखबार पंजाब के थे।—बड़ा बन्दोबस्त रक्खा जाता था कि कोई नया अखबार न आने पावे—पर क्या कोई रुकता था? राम का नाम लो—लोग मनमाने समाचार पत्र मंगाकर पढ़ते थे, और जेलवालों की मूढ़ता पर हंसते थे।

लखनौ जेल में पन्द्रह दिनमें नियत तारीख पर जिस के जिस के नाम जितने पत्र आते थे उनमें से केवल एक पत्र दे देते थे। पंद्रह दिन में एक ही पत्र लिख सकते थे—जब इस पर हल्ला गुल्ला मचा तब सब पत्र मिलने लगे पर एक ही पत्र लिखने का हुक्म था। इस भयङ्कर असुविधा को आप समझ सकते हैं। लोगों ने 'तिकड़म्' का सहारा लेकर तमाम जेलशास्त्र को धता बतला दिया। गांधी टाइप के लोग, सतयुगी लोग, बेचारे ईश्वर के नाम पर चुप चाप बैठे रहते थे, मानो पर्याय से यह स्पष्ट बोध होरहा था कि सतयुगी लोगों को जेल में भी आराम नहीं, दुनियांदार लोग ही जेल में मौज कर सकते हैं। हुल्लड़शाही के लोग 'गांधी टाइप' के लोगों की खूब मज़ाक उड़ाते रहते थे।—पर इसका परिणाम यह हुआ कि इनकी 'तिकड़म्' बढ़ते बढ़ते आपस में भी चलने लगी—और परस्पर घोर विरोध व दलबन्दी होकर जेल-वातावरण अशान्त होने लगा। ऐसे समय में गांधी टाइप के लोगों ने ही असहयोग व असहयोगियों की इज्ज़त बचाई—अब इस तिकड़म्-शास्त्र को रहने दो बड़ा लम्बा किस्सा है।

२—दुनियाँ

जेलवाले कैदी बाह्य जगत् को दुनियां कहते हैं। जब

कोई नवीन कैदी आता है तो पुराने कैदी पूछते हैं कि 'कहो दुनियां का क्या हाल है।" जेल दुनियां बाहर की दुनियां से अनोखी है। जब कोई छूटता है तो ख़ुशी होती है कि दुनियां देखने को मिलेगी।

३—रागिया

यह शब्द उस आदमी के लिये प्रयोग में लाया जाता है जो इधर उधर करता है, इधर की बातें उधर लगाता रहता है। ऐसा आदमी बड़ा उचक्का समझा जाता है और कैदी उससे सावधान रहते हैं। वार्डर लोग भी उस पर कड़ी नज़र रखते हैं।

४—मुखबिर

हर एक वार्डर अपने कैदियों में अपना मुखबिर रखता है जिससे कैदियों का भेद मिलता रहे। नायब जेलर, जेलर, लेटरबाबू, मुन्शी, सब अपने २ मुखबिर रखते हैं। थोड़ी सी रियायत दिखाने में कोई भी मुखबिर बन जाता है। वार्डरों वार्डरोंमें भी मुखबिर होतेहैं। इन्हीं मुखबिरों द्वारा जेल भर का हाल सब को मालूम हो जाता है। सारांश ठग लोग जैसे औरों को लूटते जाते हैं पर अपने भाइयों से सावधान रहते हैं, वही हाल यहां है। एक कैदी मधुर स्वर से एक दिन गा रहा था—

'देखके चलना मुसाफिर—
यह ठगों का ग्राम है"

मैंने कहा 'क्या कहने हैं, 'जीते रहो'

कारागार के अनुभव

(८)

मिलाई

जेल में मिलाई का भी विचित्र ढंग है। कैदी सब एक लाइन में बैठाये जाते हैं फिर बाहर से उनके मिलनेवालों को छोड़ा जाता है। बीचमें १ या १॥ गज का अन्तर रहता है ऊपर देखने वाले जेलर, नायब, जमादार टहलते रहते हैं। हुक्म हुआ 'मिलो' बस सब एक दूसरे से बातचीत करने लगते हैं— बातें भी खूब ऊंचे से होती हैं एक तो दूर से बोलना और उस रामरौले में बोलना और सुनना ! एक अच्छा खासा बाज़ार लग जाता है। "वक्त हो गया, बस" की आवाज़ आते ही, सब उठकर चल देते हैं। मिलाई में भी बहुत तिकडम् चलती है। पढ़े लिखों की मिलाई ज़रा सभ्यता पूर्वक होती है। बरेली में इसी तरह रस्सी का निशान बान्ध कर अलग अलग बैठाने का उद्योग किया था पर समझदार जेलर ने पीछे से यह ढंग छोड़ दिया। लखनऊ में पहले अच्छा ढंग था पर पीछे से बहुत सख्ती होती गई। वहां भी तहसील या कलेक्टरी के सामने का नज़ारा दीखता

था। मिलाई के कई नियम हैं। तीन मास, छः मास, १ मास १५ दिन, ८ दिन के पश्चात् उन उन श्रेणियों के कैदियों की मुलाक़ात होती है। पत्र के नियम पहले और थे अब बदल गये। पहले बेरंग खत भेजे जाते थे, अब सरकार जेल के खर्च से पत्र भेजेगी। नान-पोलटिकल कैदी अपने खर्च से पत्र भेजते थे, वे भी अब साधारण कैदी की भांति जेल खर्च से ही पत्र भेज सकेंगे। सरकार ने एक नया क्लास निकाला है उसका नाम है नान-पोलिटिकल, इसमें वर्त्ताव तो साधारण कैदी का सा रखते हैं पर उसको पोलिटिकल समझते हैं। मिलाई वगैरे सब पालिटिकल की भांति है। तीन मास में एक पत्र भेज सकते हैं, तीन मास में एक बार मिल सकते हैं। बाहर से आये हुए पत्र प्रति दिन मिल जाते हैं। इस क्लास में सैकड़ों नवयुवक भाई पड़े हुये हैं। यह दिक् करने का तरीका गवर्नमेंट ने अच्छा निकाला है। नान-पोलिटिकल क्लास एक विचित्र क्लास है। मुझे दस मास तक इस विचित्र क्लास का अनुभव मिलता रहा है। वेदान्तियों के अनिर्वचनीय ब्रह्म के सदृश इस क्लास की महिमा अवर्णनीय है।

रिहाई

जब कैदी छूटता है तब उसको घर तक का टिकिट व खुराक के पैसे मिल जाते हैं। पर्वतीयों को डबल खुराक मिलती है क्योंकि पर्वत में उनको कई कई दिन चलना पड़ता है। जहां इक्के चलते हैं इक्कों का किराया मिलता है। अन्य पोलिटिकल कैदियों को इण्टर क्लास का किराया मिलता है। अन्य कैदियों को थर्ड का टिकिट मंगाकर दिया जाता है। जरायम पेशा लोगों के साथ स्टेशन पर चढ़ाने के लिये

एक आर्डर भेजा जाता है। ऐसे लोगों के छूटते ही उनके थानों में सूचना चली जाती है। जो जो कैदी छूटते हैं उन सब के वारन्ट उस जगह वापस भेजे जाते हैं जहां उनकी सज़ा हुई थी। चलते समय एक रिहाई का टिकट मिलता है सार्टिफिकिट में लिखा रहता है कि अमुक नम्बर का कैदी आज यहां से अपनी सज़ा भुगत कर छूट रहा है! इस पर किराया, खुराकखर्च आदि भी लिखा रहता है। जहां इस सार्टिफिकिट पर साहब के हस्ताक्षर हुये कि बस, फाटक खुलता है और कैदी 'दुनियां' में आता है।

चलते समय कैदी रिहाई बांटता है जिसके पास जो चीज़ हो उसको बांट देना इसी को रिहाई बांटना कहते हैं। कोई तमाखू बांटता है कोई गुड़, कोई कुछ।

कारागार के अनुभव

(१)

॥ जेलस्वप्न ॥

(१)

अब ज़रा जेलखाने के स्वप्नों की बहार सुनिये। प्रातः उठकर नित्यकृत्यों से निवृत्त होकर जब लोग एकत्रित होजाते थे तब स्वप्नमीमांसा चलती थी, बाजे पिशाचवृत्ति ऐसे थे कि रातभर जागते थे और दिनभर सोते रहते थे। बाज़ों को स्वप्न आते थे कि ' आज हम छूट गये'—'आज हाथी देखा' 'आज हमारा जलूस निकला'—'आज करनल क्रीमेण्ट से भेंट हुई'—'आज गांधी जी आये, सब को डांट गये कि चर्खा क्यों नहीं चलाते'—'आज लो० तिलक आये और कहगये कि यदि आप लोग असहयोग के योग्य होते तो क्या मैं अपने समय में असहयोग का बिगुल न फूंक देता"—

(२)

कईयों को इस प्रकारके स्वप्न आते थे—'आज मैं तनाहीम भेजा गया'—'आज बड़ा स्ट्राइक हुआ'—'आज जेल में गोली

खबो'—'आज हवाई जहाज ने आकर ऊपर से कागज़ फेंके जिसमें लिखा था कि असहयोगी लोग सरकारसे सुलह करलें'-

(३)

गृहस्थियों के स्वप्न और किस्म के थे—कोई स्त्री से मिलकर दुखी होरहा है, कोई पुत्र को प्यार देरहा है, कोई [illegible] हुई मां को समझा रहा है, कोई यार दोस्तों से निपट रहा है, कोई अपने मुन्शी से हिसाब किताब समझ रहा है, [illegible] रियासत का हाल पूछ रहा है।

(४)

कई ऐसे बन्द-ए-खुदा थे कि जो न सहयोगी थे न असहयोगी। कर्नल क्लोमेएट के शब्दों में 'दर्या में बहकर' आये थे। ऐसे लोग दिनभर लम्बे सांस लेते रहते थे। इनके [illegible] भी विचित्र थे। कभी कभी सोते साते चौंक उठते और पूछते कि 'हमारे छूटनेका हुकमतो नहीं आया'। कई ऐसे भी थे जिन्हों ने देशभक्ति का नाम भी नहीं सुना था—न जाने जेल में कैसे आये

Breaths there a man with soul so dead.
Who never to himself hath said:
This is my own my native land.

इस कोटि के लोग थे।

(५)

एक साधुने अपना स्वप्न सुनाया कि उसने साहबसे कपड़े रंगने के लिये गेरूवा मांगा। साहबने नामंज़ूर किया और कहा अपने पैसे से मंगाओ, बस इसी पर झगड़ा हुआ, [illegible] हुआ, बखेड़ा हुआ।

(६)

हम लोगों में बहुत से फिलासफर भी थे। उनके स्वप्न प्रायः इस किस्म के होते थे। 'स्वराज्य' में पहले हमको 'स्व' मिलेगा कि 'राज्य' मिलेगा या दोनों एक साथ मिलेंगे। पहले सरकार हमको छोड़ जायगी या हम सरकार को छोड़ देंगे? असहयोग का अर्थ है असहयोग, इसमें महात्मा जी ने हिंसा-अहिंसा का क्या पचड़ा लगा रक्खा है।

(७)

कट्टर मुसलमानों का स्वप्न इस प्रकार था। स्वराज्य हो गया है, हिन्दू-मुसलमान सब एक होगये हैं—खान पान सब एक होगया है, गोश्त-बाज़ार आरहा है, पढ़े लिखे बाबू आधे मुसलमान हो गये हैं और हिन्दू लीडर पूरे मुसलमान बन गये हैं—

(८)

जेल में कट्टर आर्यसमाजियों की संख्या भी कम नहीं थी। उनके स्वप्न निराले ही थे। वैदिक नाद ईरान तक जा पहुंचा, अरब में झंडा जागड़ा। मुसलमान ईसाइयों की शुद्धि ज़ोर से होने लगी। तोपें ढलने लगीं, उनके हवन कुंड व चमच बनने लगे—संसार में शांति फैलने लगी।

(९)

कट्टर हिन्दूओं को स्वप्न आया कि स्वराज्य क्या मिला एकाकार, भ्रष्टाकार हो रहा है, मुसलमान ज़ोर पकड़ रहे हैं ऐसे स्वराज्य से क्या लाभ? अभी गोकुशी भी बन्द नहीं हुई।

(१०)

क्रिश्चन का स्वप्न मालूम नहीं क्या था क्योंकि हमारे

सूबे भर में सिर्फ एक ही क्रिश्चन जेल में आये थे और वे थे आगरा जेल में। उनका नाम है जार्ज जोसेफ ।

(११)

एक बौद्ध पूंगी हमारे साथ रहता था, उसको रातदिन खाने पीने के ही स्वप्न आते थे ।‌ वह बुद्धभगवान् को भुला बैठा था। जैनी मिले पर वे अपने 'अर्हन्' को नहीं जानते थे। कोरे बाबू थे।

(१२)

पारसी भी नहीं मिला, यहुदी भी नहीं मिला,-हां जिस मजिस्ट्रेटने मुझे सज़ादीथी वह ज़रूर यहुदी था। फौजी सिक्ख दो चार मिले पर वे पोलिटिकल नहीं थे। ग़ालबन इनको 'ननकाना' के स्वप्न आते होंगे।

(१३)

मामूली कैदियों के स्वप्नों का अन्दाज़ा पाठक स्वयं लगा सकते हैं।

कारागार के अनुभव

(१०)

पोलिटिकल कैदी समय को कैसे बिताते है ?

साधारण कैदी दिनमें अपनी मशक़त पूरी करते और थकावट के कारण रात्रि में गाढ़ निद्रामें पड़े रहते हैं। परन्तु पोलिटिकल कैदी जिनको कुछ भी काम नहीं करना पड़ता, जिनके लिये खान- पान - रहन- सहन- लिखने- पढ़ने- बोलने- बतलानेमें इतने सुभीते रहते थे वे अपना समय कैसे काटतेथ यह जानने कीबात है। यह मैं पहले लिखचुकाहूं कि हम लोगों में सबप्रकार के लोग थे- इसीलिये इन की दिन चर्या का अनुमान पाठक स्वयं लगा सकते हैं। तथापि संक्षेप से लिखता हूं----

धार्मिक लोग

प्रातः ४ बजेसे ही उठकर, नित्य कर्मों से निवृत्त होकर धर्मग्रन्थों को देखते थे । साधारण रीति से इन का समय शान्ति से ही व्यतीत होता था। कोई अपने से अच्छा मनुष्य मिला, उससे कुछ सीखा, कभी थोड़ी धार्मिक चर्चा करली।

कभी राजनैतिक चर्चा चलाई, जाप आदि में २-४- घन्टे व्यतीत किये, कभी रामायण देखी, कभी अन्य ग्रन्थ देखे- बस इन लोगों का यही ढङ्ग था। ये लोग प्रायः समुदाय में कम मिलते जुलते थे। खान- पान में आचार विचार का बहुत खयाल रखते थे।

कट्टर राजनैतिक

ये लोग प्रायः बहुत देर में उठते थे, स्नान करते करते दस ग्यारह बज जाते थे। सन्ध्यावन्दन का नाम नहीं। भोजन के पश्चात् दो तीन घन्टे कोई राजनैतिक या अन्य ग्रन्थ देखते थे। बीच में कुछ सो लिये, थोड़ासा ताश खेला,-शाम को गीली डंडा, कबड्डी लगाली, कभी गेंद-बल्ला उठाया,—सायं भोजन के पश्चात् अखबार पढ़ते पढ़ाते १०-११ बजे तक सोगये।

कई विद्वान् नियमपूर्वक कुछ लिखते लिखाते भी रहते थे। कुछ काल तक जेलचर्चा भी चलती थी। कभी कभी जेल कमेटियोंमें समय बहुत खर्च होता था। बहुतसे सज्जन नियमपूर्वक दो तीन घन्टे तक चर्खा भी चलाते रहते थे।

मध्यमश्रेणी के लोग

दोनों समय खूब पेट भरना, इधर उधर खूब फिरना, जब दिल न लगे तब 'अल्ला हो अकबर' या 'महात्मा गांधी की जय' की आवाज से जेल को सिरपर उठा लेना, कोई गप्प छोड़ना, झगड़े करना कराना, आदि बातों में ही समय व्यतीत करते थे।

'काव्यशास्त्रविनोदेन, कालो गच्छति धीमताम्।
व्यसनेन च मूर्खाणां, निद्रया कलहेन वा ॥,

इस वचन का पूर्ण अनुभव आया।

खेद की बात

अंग्रेज़ी पढ़े लिखों में देश के विषय में जितना अनुराग देखा गया, उतना अनुराग स्वधर्म के विषय में नहीं देखा गया। धर्मकी इस अनास्था पर खेद है। प्राचीनढर्रे के पंडित मौलवी आदि लोग इस मंडली में आकर बहुत दुखी हुए। किसान व साधारण लोग अधिक धर्मभाव वाले देखे गये। इन अंग्रेजी पढ़े लिखे लोगों का खानपान का अनाचार और सबको एकाकार करने का उद्योग प्राचीनप्रेमियों को अच्छा नहीं लगा।

कई लोग जेल में आकर बाहर से भी अधिक उच्छृङ्खल और विलासी बन गये। वे स्वयं हैरान थे कि उनको क्या होगया। यह दुःख से कहना पड़ता है कि गान्धी जी भारत को जिस सात्त्विक भाव को जिस ऊंची सीढ़ी पर ले जाना चाहते हैं वह अभी दूर है—नहीं नहीं—अति दूर है।

शायद सत्त्व, रज, तम, इस त्रिगुण-मीमांसा के तत्त्व को समझकर अधिकारियों के अनुरूप कार्य या उपदेश न बतला कर सब को एक साथ एक जैसा उपदेश देने में बड़ी भारी भूल हुई है।

एक बार प्रजापति के पास देव, मनुष्य और राक्षस गये और उपदेश के लिये प्रार्थना की। प्रजापति ने कहा "द"

देवों ने समझा इन्द्रियों का दमन करना चाहिये।

मनुष्यों ने समझा दान देना चाहिये।

राक्षसों ने समझा दया करनी चाहिये।

इस तरह एक ही अक्षर के उपदेश से तीन अधिकारियों ने तीन भिन्न अभिप्राय निकाले। महात्मा गाँधी ने एक

'असहयोग' शब्द कहा पर उसकी भी ऐसी ही गति हुई।
नवयुवकों ने असहयोग को 'हुडदंग' समझा।
मुग्ध गंवारों ने 'लट्ठ' समझा।
किसी ने 'सरकार को गाली' समझा।
किसी ने 'घर वालों की ही खबर लेना' समझा।
धार्मिकों ने 'पूर्ण सात्विक भाव' समझा।
बाबुओं ने 'व्याख्यान की झड़ी' समझा।

इस तरह गान्धी सिद्धान्त तो था एक ही पर धारण कर गया अनेक रूप! अन्त में चौड़ा चौड़ी के रामरोले के पश्चात् असली अर्थ की छान बीन होने लगी!! जो पहले सोचा जाना चाहिये था वह सोचा जाने लगा तब, जब कि करीब करीब उसका समय निकल गया। यह हमारा मन्द भाग्य, और क्या कहें।

कारागार के अनुभव

[११]

क्या हम जङ्गल में घुस गये ?

श्री पं० विश्वम्भरदत्त चन्दौला सम्पादक गढ़वाली ने मेरे पास एक पत्र भेजा था कि "आप सीधा रास्ता छोड़ कर जङ्गल में घुस गये"—इस का उत्तर मैंने जो दिया था वह पाठकों के अवलोकनार्थ यहां देता हूं-इस से मेरे विचार स्पष्ट प्रतीत होंगे—

डिस्ट्रिक्ट जेल
राय बरेली।
फाल्गुन बदि ४ सोमवार

श्री चन्दोला जी,

आप का विस्तृत पत्र मिला धन्यवाद ! आप को हमारे कार्य व कार्यप्रणाली की समालोचना करने का पूर्ण अधिकार है। आप ने लिखा है 'सीधा रास्ता जिस रास्ते पर कोई खतरा नहीं, उसे छोड़ कर जङ्गल और पहाड़ों में घुस गये"

आप ही बतलाइये कि जब देहरादून का जिला ही पहाड़ों और जङ्गलों का जिला है तब उस में सीधे रास्ते कहां मिलते ? उत्तर की ओर केवल राजपुर तक सीधा रास्ता है, उस में भी चढ़ाई है और राजपुर के आगे मसूरी तक विकट चढ़ाई है। आगे गङ्गोत्री तक जङ्गल, चढ़ाई, व पहाड़ ही पहाड़ हैं। पश्चिम की ओर चूहड़पुर तक सीधा रास्ता है पर उस में भी विकट नदी नाले हैं, आगे फिर जमनाजी हैं। पूर्व की ओर रायपुर तक कुछ अच्छी सड़क मिलती है पर आगे फिर नामुराद सौंग नदी है और उस के परली तरफ फिर ऊंचे पहाड़ हैं। दक्षिण की तरफ हरद्वार तक भयङ्कर जङ्गल ही जंगल है। इसलिये मेरे जेल में आने के बाद कोई नये साफ सुथरे रास्ते निकाले गये हों तो अच्छी बात है। यह अटल नियम है कि किया हुआ कोई कर्म खाली नहीं जासकता। केवल फल की ओर दृष्टि रखनेवाले लोग इन स्थूल चक्षुओं से जब कुछ नजर नहीं आता घबरा जाते हैं। सात्त्विक बुद्धि के लोग केवल कर्तव्य-बुद्धि से अपना काम करते रहते हैं, फल मनुष्य के हाथ में नहीं, परमात्मा के हाथ में हैं। केवल शुद्ध भाव से कर्म करने में ही मनुष्य का अधिकार है। यही तत्त्व मैंने समझा है। इसी पर मैं आरूढ़ रहता हूं। शेष रही त्रुटियों की बात, सो केवल यही वक्तव्य है कि चलनेवाले ही फिसला करते हैं, चढ़नेवाले ही गिरते हैं, तैरनेवाले ही डूब जाया करते हैं। कितना ही कोई सीधा रास्ता क्यों न हो आगे कहीं न कहीं खतरा है ही। खैर शेष कभी मिलने पर, आप के प्रेम व सहानुभूति के लिये मैं कृतज्ञ हूं। यह प्रेम उत्तरोत्तर बढ़ता रहे।

श्री नरदेव शास्त्री

—:*:—

करागार के अनुभव

(१२)

श्री गिरिराज हिमायलय के लिये जेल मे सन्देश।

गिरिराज हिमालय ! तू हिम का आलय है इसी लिये तेरा नाम हिमालय है। तू सब से ऊंचा है, संसार के अन्य पर्वत तेरे संमुख सिर झुकाते रहते हैं. तेरी ऊंची ऊंची चोटियां अनन्त काल से- नहीं नहीं सृष्टि के आदि से संसार की दशा देख रही हैं। वेदों का पवित्र प्रादुर्भाव उन्हीं चोटियों की गोद में हुआ। ऋषि महर्षि, मुनि मुनिवर, तपस्वी कर्मयोगी, ध्यान-योगी सब ने तेरी गोद में शरण लेकर ही भव-बन्धन को काटा है। हे गंगा, यमुना, सिन्धु ब्रह्मपुत्र आदि नद और नदियों के उत्पादक ! हे वनस्पति व औषधियों के अक्षय भण्डार ! तेरी महिमा अकथनीय है-तेरी सब से ऊंची चोटी पर चढ़ कर संसार के आदि स्थान भारत वर्ष के अद्‌भुत दृश्य को देखकर अपने जन्मको कृतार्थ करनेकी बहुतोंने ठानी पर आज तक वहांतक कोई भी न पहुंच सका, इसलिये भगवन् ! तुम

अगम्य हो- तुम ने पवित्र भारतवर्ष की सहस्रों वर्षों तक रक्षा की, तुमने अपनी आंखों से भारत का उज्ज्वल स्वातन्त्र्य देखा, तुमने शरणागतों को भवबन्धन मे छुड़ाया फिर एक समय ऐसा आया कि तुमने ही इस भारत की दीन, हीन, मलीन दशा देखी। तुमने ही चुप चाप पर-चक्र देखे, और तो और आज तेरी ही उपत्यका (तलैटी) व अधित्यका में रहनेवाले लोगों की दरिद्रता देखी नहीं जाती। गिरिराज! अनन्त काल से तेरे सिर पर हिम के पड़ते रहने से तेरा मस्तिष्क इतना ठण्डा हो रहा है और क्या कहा जावे ? गर्मी और सर्दी दोनों दशाओं में तेरी एक सी ही दशा रहती है, न तो कभी तू गर्मी में गरम हुआ, और न सर्दी में अधिक सर्द हुआ। हे पर्वतशिरोमणि! कब तक के लिये यह तैनें मौन साध रक्खा है? भारतवर्ष तुझ से बहुत कुछ पूछना चाहता है। अन्य द्वीपवासी भी तुझसे बहुत कुछ पूछना चाहते हैं। कलियुग के आदि में पांचों पांडव द्रोपदीसहित उत्तराखण्ड की ओर गये थे, उनका फिर कुछ पता नहीं-तुझे तो कुछ पता है ? वे भारतवर्ष में होते तो भारत इतनी हीन गति को कभी प्राप्त न होता। तैंने न जाने उनको बर्फ में कहां गलाडाला, न जाने तबसे उनकी अस्थियोंपर कितना बर्फ गला कृष्णमुरारि का कुछ पता है ? उन ऋषि मुनि तपस्वियों को जानता है जो एकबार इधर से गये फिर नहीं लौटे। जिन क्षत्रिय वीरों को कुरुक्षेत्र में रणगति मिली उन का भी कुछ पता है ? सुना है अश्वत्थामा जीते हैं, वे कहां हैं ? कृष्ण का शाप बेचारे को ऐसा लगा कि तब से न जाने कहाँ भटक रहे हैं। नारद मुनि का भी पता नहीं चलता नहीं तो उन से ही पूछ लेते। चिरजीवी मार्कण्डेय भी न जाने कहां छुपे बैठे हैं- बोलो गिरिराज! बोलो, एक बार तो बोलो-फिर मौन साध

लेना। भारतवर्षरूपी घर में आप ही एक बड़े बुजुर्ग बचे हो, आप ही रूठ गये तो हमारा कौन रक्षक है? गिरिराज! तेरा रूठना सह्य है। द्विजों में नम्रता नहीं रही, क्षत्रियों में वीरता नहीं रही, वैश्यों में बहुसंख्यता नहीं रही, और इसलिये तेरी आज्ञा को पालन करने की शक्ति ही हम में नहीं रही तब बोलकर क्या करोगे। जब हमारा पुण्य ही क्षीण हो रहा है, पाप बढ़ रहा है तब हम से आशा ही किस बात की है? पर भगवन्! हम अज्ञों के साथ तेरा यह विकट असहयोग कब तक चलेगा? हे हिमराशि! घर में बच्चों ने कोई अनुचित काम होजाय तो क्या उनको न समझाना चाहिये? क्या उन से इस तरह एकदम नाता तोड़ना चाहिये? हमारा तो विश्वास है कि तेरी कृपा होते ही हमारे दुःख दूर होंगे, हमारे भाग्य चमकेंगे और भारत के दिन फेर फिरेंगेः--

गिरिराज! उदार! न मार हमें।
गिरिराज! उभार न टार हमें॥
गिरिराज! उठाय चलाओ हमें।
गिरिराज! चलाय बढ़ाओ हमें॥

न जाने यह सब पुण्य पवित्र आत्माएं कहां गईं? युरोप में, पाताल में, चन्द्रलोक में, कि सुरलोक में, कि सूर्यलोक में, कि कहां हैं? हे बुजुर्गों! तुम हो कहां और भारतवर्ष में कब लौटोगे? अब यहां आपकी अत्यन्त आवश्यकता है--हमारे गिरिराज तो हम से बेतरह रूठे हैं। हमारी इतनी दुर्गति हो गई पर मजाल कि जरा हिलें या डोलें। और न सही कम से कम दादाभाई, रानाडे, गोखले इनका भी पता चल जाय तो बहुत कुछ हो सकता है, यह नहीं तो खाली लोकमान्य तिलक का पूरा पूरा पता चल जाय तो भी उनसे पूछ कर ही बहुत काम हो सकेगा--पर हमारे गिरिराज कुछ बोलें तब न?

बोलना तो दूर रहा पलक उठा कर भी नहीं देखते, हे पतित, पावन ! अब बहुत परीक्षा हो चुकी और आपकी तपस्या भी खूब हुई—वह तपस्या किस काम की जिससे हमारी दीनता, हीनता, अनन्यशरणता न मिटे। युधिष्ठिर को धन्य है कि वह अपने कुत्ते को भी स्वर्ग के दरवाजे के भीतर ले गया, और गिरिराज ! एक तुम हो कि तुम्हारे होते हुए हमारी यह दयनीय दशा हो गई है। आपकी ऊंचाई, चौड़ाई, गहराई, आपका वनस्पतिभण्डार, यह सब किस काम आवेगा ? गङ्गे तेरे पिता की यह दशा ? उन्हें क्यों नहीं जगाती। यमुने ! तुझे क्या हो गया ? सिन्धू नद जरा अपने पिताकी आंखों पर पानी के छींटे तो डालो। ब्रह्मपुत्र ! इस के शरीर को तो भीगो दो। शायद यह इसको समाधि नहीं, यह योग करते करते निद्रा को प्राप्त हो गया है। नहीं नहीं यह तो निद्रा में पड़ कर महानिद्रा को पहुंच गया है। अब क्या किया जावे। पुराणों में लिखा है कि नर-नारायण दो ऋषि हिमालय में सदैव तप करते रहते हैं और जब जब भारत को आवश्यकता पड़ती है तब तब वह आकर उद्धार करते हैं। न जाने ये कहाँ हैं। और हे जनार्दन ! तुम ही कहो कहां हो। तुमने चुप साध कर अपने ही जनों का अर्दन कर जनार्दन नाम को अच्छा सार्थक कर रक्खा है। जनार्दन का अर्थ शत्रुजन का अर्दन अर्थात् मर्दन था परन्तु हमारे दुर्भाग्य से आज हमारे ही अर्दनकरने वाले का नाम जनार्दन हुआ जाता है। हे कृष्ण मुरारी ! आप के वायदे कहां गये ? क्या आप की समझ में आप के आनेयोग्य धर्म की ग्लानि नहीं हुई ? अधर्म का ज़ोर नहीं बढ़ा ? पाप और पापियों की संख्या नहीं बढ़ी ? आसुरी सम्प्रदाय ज़ोरों पर नहीं है ? आप भारत वर्ष से रूठे हैं:—

जब जब होगी धर्म ग्लानि तब, तब लूंगा अवतार ॥

इस वचन को अर्जुन से कहनेवाले आप ही तो हैं या और कोई ? द्रोपदी-चीर-हरण के समय आप की आवश्यकता थी तो क्या भारत-सर्वस्व के अपहरण के अवसर पर आवश्यकता नहीं है ? हे कृष्ण ! आओ शीघ्र आओ। युधिष्ठिर भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव, द्रोपदी आओ। भीष्मपितामह ! द्रोणाचार्य ! कृपाचार्य! आओ राम, लक्ष्मण, सीता, नल दमयन्ती, सावित्री ,सत्यवान आओ ! पुण्यात्माओ ! कहां हो आओ। गिरिराज हिमालय ! यदि तू हम से बोलना नहीं चाहता, हम से इतनी घृणा है कि टुक देखना भी पसन्द नहीं तो एक बार अपनी सारी शक्ति लगा कर इतने ज़ोर से इन को बुला कि जिस से हमारा काम बन जाय। ज़रा यह भी जोर से कह देना कि 'भारत जीता है' पर सिसक रहा है, भारत जीता है, पर मर रहा है, भारत में दम है पर अब निकल रहा है'। हे पर्वतदेव ! इतना हमारा काम कर दोगे तो हम सदैव तेरे ऋणी रहेंगे। तेरे होते हुए देवों को बन्दीवास भोगना पड़े इस से अधिक भारतवर्ष की और कौनसी अधोगति होगी।

नरदेवशास्त्री वेदतीर्थ
(रायबरेली—अवध)

* * * *

संयुक्त-प्रान्त

सूबेभर के राजनैतिक कैदी

(प्रयाग)

पंडित मोतीलाल नेहरू, पण्डित जवाहरलाल, नेहरू पंडित मोहनलाल नेहरू, पण्डित श्यामलाल नेहरू, मौ० कमालुद्दीन जाफरी, पण्डित कृष्णकान्त मालवीय, पण्डित गोविन्द-कान्त मालवीय, पण्डित कपिलदेव मालवीय, पण्डित केशवदेव मालवीय, ला० जगन्नाथप्रसाद अग्रवाल, बा० पुरषोत्तमदास टंडन, बा० रणेन्द्रनाथ वसु, बा० गुरु-नारायण खन्ना, बा० परमात्मासिंह, सैयद अब्दुल मुई-दजेदी, बा० कुंवरबिहारी माथुर, प्रो० रलियाराम, शेख मुहीनुद्दीन, पंडित गौरीशंकरमिश्र, पंडित टीकाराम त्रिपाठी, शेख मुहीनुद्दीन सिद्दीकी, पंडित प्रेमनारायण मालवीय, शेख हमीदअहमद, मि० वैकंटराम अय्यर, श्री० देवीदास गान्धी, मि० जार्जजोसेफ, मि० सी० के० रंगा-अय्यर, मास्टर मथुराप्रसाद, डाक्टर गिरधरसहाय सक्सेना,

कानपुर

बाबू रामस्वरूप गुप्त, पण्डित उमाशंकर दीक्षित, पण्डित बालकृष्ण शर्मा, पण्डित लक्ष्मीनारायण अग्निहोत्री, डाक्टर मुरारिलाल, डाक्टर जवाहरलाल, श्री० गणेशशंकर विद्यार्थी, पण्डित रघुवरदयाल मिश्र, श्रीयुत श्यामलाल गुप्त, पण्डित रामलाल शर्मा, पं० रामप्रसाद मिश्र, बा० नरायणप्रसाद अरोड़ा, श्री० ठा० महावीरसिंह, मुंशी तसद्दकहुसेन।

बांदा

बा० युगलकिशोरसिंह, बा० शम्भुदयाल श्रीवास्तव, बा० चन्द्रभान, बा० मिथलाशरण, मु० भाऊलाल, बा० नारायणप्रसाद पं० गंगाराम दुबे, श्री० रामानन्द, पं० जगन्नाथ शर्मा, मु० फैयाज़ इलाही, पं० रामप्रसाद अवस्थी, बा० द्वारकासिंह, पं० रामदेव, पं० गोपीचंद, बा० रामदयाल, बा० दिलीपसिंह, बा० रघुनन्दनप्रसाद, पं० राजाराम दुबे, बा० मन्नीलाल।

बलिया

श्री० चन्द्रदत्त पाण्डेय अलमोड़ा निवासी, श्री० हरिहरनाथ, पं० रामेश्वरशर्मा, बा० मुरलीमनोहर, पं० नंदकिशोर, स्वा० ब्रह्मानन्द भारती, बा० चन्डीप्रसाद, बा० केदारनाथ, श्री० अवधबिहारी छात्र, पं० मुरारिशर्मा, बा० नन्दलाल श्रीवास्तव, पं० हरिद्वार शर्मा, बा० मथुराप्रसाद, बा० भगवानसिंह, श्री० चित्तू पान्डे, बा० भैरवप्रसाद, पं० रामदीन ओझा, पं० नागेश्वर उपाध्याय, पं० माहेश्वर उपाध्याय, मु० मुहम्मद इसमाईल उर्फ़ नसीरा, बा० मोरध्वजसिंह, बा० रामप्रसाद, बा०

ब्रह्मदेवप्रसाद मालिक (मनियर), बा० केदारनाथ कायस्थ, स्व० बा० विश्वनाथसिंह (प्रभुपुर-रामगढ़ बनारस निवासी) कु० गोपेश्वरीप्रसादसिंह ।

गोरखपुर

बा० रघुपतसहाय, बाबा राघवदास (बरहज) पं० भगवतीप्रसाद दुबे, स्व० बा० अवधनारायणलाल (देवरिया) पं० ब्रह्मदेवशर्मा (पडरौना)

बस्ती

पं० वेदव्रत, श्री० महादेवसिंह, बा० विश्वनाथ मुख्तार, पं० रामावतार शर्मा, पं० दलश्रृंगार शर्मा, मु० रामानुग्रहलाल मु० झनकुलालजी, ठ० राजकुमारसिंह ।

बहरायच

पं० प्रभुदयाल मिश्र, कानपुरनिवासी ।

आजमगढ़

ठा० सूर्यनाथसिंह ।

फतहपुर

मौलाना आरीफ, बा० वंशगोपाल श्रीवास्तव, बा० दुर्गाप्रसाद, बा० भवानी शंकर ।

फैजाबाद

पं० दयाकृष्ण गंजूर, मौ० शाह सैयद मुहमद अशरफी मुबारक, शाह मुहमद शफी, पं० महादेवप्रसाद शर्मा (मुबारिकपुर)

बुलन्दशहर

बा० अतरसिंह, मु० अबुलज़मीलखां, ठा० सुखलाल, पं० रघुवरदयाल मिश्र, पंडित विश्वशर्मा, ब्र० प्रभुदत्तशर्मा, स्वा०योगानन्द आश्रम ।

गाज़ीपुर

बा० गजानंद अग्रवाल पं० इन्द्रदेव त्रिपाठी, पं० रामचन्द्रशर्मा, मु० मुहमदवईदुल्ला, स्वा० सहजानन्द ।

मिरज़ापुर

पण्डित विन्ध्येश्वरीप्रसाद मालवीय, पण्डित रमानन्द तिवारी, पण्डित हनुमानप्रसाद पाण्डेय, मौ० युसुफइमान, प्रो० रामदास गौड़ ।

जौनपुर

ठा० रामनरेशसिंह, पण्डित रामनरेश त्रिपाठी ।

जालौन

पं०वेणीमाधव तिवारी ।

झांसी

श्री रामचरन कंचन, बा० कृष्णगोपाल, रा० बालकृष्ण सीताराम टेंगशे,

आगरा

श्री रामसिंह 'सिंहवर', डाक्टर लक्ष्मीदत्त, पण्डित ठाकुरप्रसाद, लाला चान्दमल, पं० रामरत्न शर्मा, मु०याकूब अली ।

मैनपुरी

चौ० कामता सिंह भागौल, चौ० रिसालसिंह भागौल, पं० रेवतीराम शर्मा, मु० शिवसहाय वर्मा, कुं० राजसिंह, बा० रामगुलाम, डा० भगवानदास, पं० द्वारकानाथ शुक्ल, कुंवर गुलाबसिंह, पण्डित जीवनलाल द्विवेदी, श्री० चन्द्र-भाल जौहरी।

अलमोड़ा

पण्डित बद्रीदत्त पाण्डेय.

रायबरेली

मौ० रियासत हुसेन, प० माताप्रसाद मिश्र, मु० शीतला-सहाय, मु० सज्जासिद अली, मु० कमरुलजमा, मौ० वाजिदअली साहब, मु० लाल मुहम्मद, बल्ला।

खीरी

वीर बालक बलरामसहाय, ला० बाबूराम 'शान्तिस्वरूप' कुं० रत्नसिंह चौहान, बा० हरनाम सुन्दरलाल, बा० महे-श्वरसहाय, बा० गिरिजाप्रसाद।

सुलतानपुर

मौ० दोस्तमुहम्मद, बा० हरप्रसाद, बा० गनपतराय पण्डित रामलाल मिश्र।

बाराबंकी

श्री० शिवसुन्दरसिंह, श्री० मुज़तबाहुसेन, श्री० मुर्तजा हुसेन, मु० अमीरुद्दीन फिरवी, शे० मुहम्मद सैय्यद, शे० अबू असगर, मौ० मुहम्मद हमीद, मु० मुस्तफा हुसेन,

मु० फरजन्द अली, शे० बादशाह हुसेन, शे० नबाव अली, चौ० अतर अली, शे० मुइनुद्दीन, मौ० गुलाम मुस्तफा, सैय्यद अहमद हुसेन कुनियत, शे० मकबूल हुसेन, शे० हबीब उल्ला, मु० गनी अहमद, डा० महबूब हुसेन।

हरदोई

बा० ब्रजबिहारी लाल, चौ० लालताप्रसाद, श्री रघुनन्दन प्रसाद, पं० मैकूलाल, पं० [illegible]लाल, ठा० पंचमसिंह, ठा० निरजंनसिंह।

प्रतापगढ़

श्री० प्रताप बहादुरसिंह, मौ० नसीरउद्दीनअहमद।

सीतापुर

बा० अम्बिकाप्रसाद, ठा० इन्द्रेश्वरसिंह, श्री० शम्भूनाथ श्रीवास्तव, बा० लक्ष्मीनारायण, बा० गिरिजाप्रसाद।

अलीगढ़

ब्र० रामगुलाम, पं० वेदमित्र, मौ० निसारअहमद शेरवानी, मु० मुहमदउस्मान हाफिज़, बा० भगवानदास हालना, बा० नरेन्द्रचन्द्र बैनर्जी, ठा० इन्द्रवर्मा, ठा० मलखसिंह।

मेरठ

श्री विष्णुशरण दुबलिस, बा० ज्योतीप्रसाद, पं० दीवानदत्त, मौ० हकीम नज़ीर अहमद।

(देहरादून)

वेदतीर्थ नरदेवशास्त्री, चौ० हुलास वर्मा, पं० ब्रजबिहारी फरासी (जावन), ठा० मानसिंह, (जावन) स्वा० विचारानन्द (पंजाब में पकड़े गये थे),

मथुरा

परिडत लक्ष्मीनारायण शर्मा, सैयद अब्दुलगनी, श्री राधाकृष्ण भार्गव, परिडत मदनमोहन चतुर्वेदी, निरञ्जन प्रसाद (सादावादी), डा० मुन्नालाल शर्मा।

अवध

बाबा रामचन्द्र।

पीलीभीत

मौ० मक़सूद आलम, मु० मुहमद नसीर उद्दीन, पं० दुर्गाशंकर शुक्ल।

शहाजहांपुर

पं० वंशीधर मिश्र, श्री लालबहादुर त्रिपाठी, बा० बलराम सहाय, काज़ी मुहमद सगीर।

बदायूं

चौ० तुलाराम, बा० रघुवीर सहाय सक्सेना, चौ० गंगासिंह, बा० रुद्रनारायण सिंह, पं० जयगोपाल शर्मा, बा० लक्ष्मीदत्त।

लखनौ

पं० हरकरणनाथ मिश्र, हाफिज मंजूरहुसेन, शफीक अहमद खां, मु० बुद्धूलाल, श्री गोपालदास वैश्य, श्री रामे

श्वर सहाय, बा० बेनीप्रसाद सिंह, मो० शौकतअली, मौ० सलामत उल्ला साहब, शे० खताक उल अमा, हकीम अब्दुल जलील, डा० लक्ष्मीसहाय, मु० अब्दुल अजीज, मु० वजीरअली, बा० मोहनलाल सक्सेना, बा० रामचन्द्र तिवारी, डा० शिवराजनारायण सक्सेना, मु० रामनाथ गुर्टू, म० भुवनेश्वरीनारायण वर्मा, मु० सैयदअली अब्बास, ला० रामेश्वरसहाय सिनहा, शे० नरुज्जमां, हकीम सैयदअली आगुका, बा० गोपीनाथ श्रीवास्तव, बा० नन्दकिशोर, सै० मुहम्मद नवाब, ला० राधेलाल, ला० फकीरचन्द, पण्डित मातृप्रसाद, ला० हनुमान प्रसाद सक्सेना पं० रामेश्वर प्रसाद अवस्थी, पं० जगन्नाथ प्रसाद, श्री मन्नीलाल, शे० अब्दुल साहब, पं० कन्हैयालाल, मु० कन्हैयालाल श्रीवास्तव, पं० पुरुषोत्तम, मु० काजी रफीअहमद, सै० शाहिदरजा साहब, सै० अहमदअलीखां साहब, बा० मित्रचन्द्र, पं० कमलाकृष्ण बा० गोपाल नारायण।

बनारस

बा० भगवानदास जी, प्रा० कृपलानी, पं० देवकीनन्दन सिंह, कविराज पं० कृष्णचन्द्र, ठा० बैजनाथ सिंह, श्री सत्यदेव शाही, पं० लक्ष्मीनारायण शर्मा, बा० सम्पूर्णानन्द, डा० ताराचन्द्र, पं० शिवविनायक मिश्र, पं० रामसूरत मिश्र, श्री गिडवानी, मौ० अबुमसूद ।

फर्रुखाबाद

सेठ लालमणि गुप्त ।

मुरादाबाद

पं० शंकरदत्त शर्मा, बा० रामशरण गुप्त, बा० ब्रजवासी

लाल, सैयद उ.फरहुसेन, मु० अशफागहुसेन, ला० बाबूलाल–अमरोहा, वैद्य प० नाथूराम शर्मा, अमरोहा, डा० नरोत्तम-शरण अमरोहा, नवाब जमील अहमद अमरोहा।

एटा

बा० बाबूराम वर्मा, चौ० मुहमद इब्राहिम, मु० न्याज-अहमद, श्री मानपाल गुप्त–कासगंज, बा० राजबहादुर।

इटावा

मु० मुहमद रहमत उल्ला, पं० रामकुमार त्रिपाठी, पं० ज्योतिशंकर दीक्षित, पं० ब्रह्मदेव शर्मा शास्त्री, काव्यतीर्थ।

बिजनौर

श्रोत्रिय जगदीशदत्त, बा० विश्वमित्र, श्री महावीर त्यागी, प्रो० धर्मवीर त्यागी (बनारस), श्री भवानी शङ्कर, मु० मिरज़ा सैयद अलीबेग, बा० नेमीशरण।

बस्ती

पं० द्वारिकाप्रसाद, ठा० पृथ्वीराजसिंह, मुहमद सरदार-अलीखां, मौ० मुहमदअहसन, मौ० मंजरअली, मौ० जहूरअली, मौ० सै० अबदुलवजूद, बा० जियाराम सक्सेना, पं० बंशीधर-पाठक, बा० टिकैतराय, ठा० मोतीसिंह वकील।

गोण्डा

पं० बदलराम, म० चुन्नीलाल स्वर्णकार, म० जुगलकिशोर करनलगंज, म० रामनाथ, मौ० महम्मदजमाँ, पं० राममनोरथ मिश्र-तुलसीपुर, पं रामदत्त शर्मा, ला० सूर्यलाल करनलगंज।

सहारनपुर

पं० लक्ष्मीनारायण शर्मा (बिहारी), स्व.० वामदेवाश्रम।

प्रिय पाठक सूबे भरके कैदियों की नामावली देना कठिन कार्य है, बलिया, गोरखपुर, सीतापुर, लखीमपुर, वस्ती के सैकड़ों भाइयोंकी नामावली नहीं मिली। सच्चेवीर साधारण कैदीकीभांति जीवन व्यतीत कररहे हैं। धन्य है इनको। उनको भी धन्य है जो चुपचाप जेल काट गये पर लोगों ने उनके नाम भी न जाने। असली पुण्य इन्हीं भाइयों ने लूटा है।

सीतापुर जेल में जिन भाइयों ने सख्त मुसीबतें सही हैं उनकी एक फहरिस्त हाथ आई है। उन भाइयों को नमस्कार करके उनके नाम लिखता हूं।

पीलीभीत

पं० कन्हैयालाल(पुरानागंज) बा० चण्डीप्रसाद, शा० जको-उद्दीन रईस (पोटा), हकीम मकबूल अहमद, पं० रघुनन्दन-प्रसाद, म० गेन्दनलाल वैश्य, म० रतनलाल वैश्य, म० राम-भरोसे वैश्य, पं० झांझनलाल (बीसलपुर), पं० दुर्गाशङ्कर (पुरानागंज)।

सीतापुर

पं० बैजनाथ, पं० सर्जूप्रसाद, व हरदि्दी (महोली), म० अयोध्याप्रसाद (पडलना, निसरिख, मु० गिरजादयाल (बड़ागांव)।

मैकूलाल गुप्त बड़ागांव, पं० शम्भूदयाल बड़ागांव, चौ० खडगसिंह बोहट, पं० बांकेलाल, पं० छोटेलाल बड़ागांव गजाधरप्रसाद वजीरनगर, पं० जमनाप्रसाद जमालपुर, पं० भगवानदीन चौरिया, बा० जगदीशबख्शसिंह कुंडिया, पं० माधोप्रसाद झकराउन, मु० महावीरप्रसाद सिधौली, मु० सरजूदयाल मसुवामऊ, पं० विश्वेश्वरदयाल मसुवामऊ,

पं० मभूतिप्रसाद मसुवामऊ, मु० दशरथलाल नंगौर, मुन्शी महावीरप्रसाद भरद्पुर, अलीमुहम्मद बिसवां, शेरकऊ नाऊ बिसवाँ, भटौराके गया दत्त कूर्मी, मल्लू, बैजू भभूति; बिद्रो, महादेव, संउता के पं० सूर्यदीन, देवतादीन ठठेर, गनेशवैश्य. लहरपुर के डा० चुन्नीलाल, ला० परसराम रईस, पं० राजाराम नवीनगर के पं० केदारनाथ।

मु० गुरुनारायणलाल इसमाइलपुर, पं० मातादीन चौबे पुराना सीतापुर मु० वाहिद अली, जंगली कवड़िया, लोकनाथ वैश्य, कन्हई-कहार, अलीहुसेन, सालिक कूर्मी बिसवां, ला० गौरीराम गुप्त बस्ती, बा० गयाप्रसादसिंह फैजाबाद, पंडित महादेवप्रसाद मुबारकपुर, नूरमहमद खां बस्ती, मु० गिरजा-दयाल महुरहटा, पं० राधाकृष्ण सहसापुर, पं० शिवराम मोहकपुर, पं० गजराजप्रसाद चंद्रावल, पं० छोटेलाल बड़ागांव पं० ब्रजभूषणलाल दर्याबाद, मु० फतहबहादुर सिधौली. परवनमुराऊ, मन्द्रामुराऊ मउसवा, दुर्जन रैदास रहीमाबाद, पं० माधोराम ढलिया, भैकू कहार जालेपारा।

खीरी

ब्रजकिशोर गुप्त गोला, मु० शान्तिप्रसाद श्रीनगर, पं० दयाराम मोहल्ला सिकंदराबाद, पं० जमनाप्रसाद मूंडा मितौली के मु० काशीराम, शंकराप्रसाद, गंगादीन पंडा, पं० वासदेवलाल, कमरुद्दअली, प्रतापसिंह बिजुआ, अहमद नगर के पं० सूर्यप्रसाद, शंकर गिर, सुदवा गिर, ममरी के शिवनारायण, खेमकरण, श्यामलाल।

गुलाम हुसेन मनीहर। ओवेलके मनोहरलाल वैश्य, राम-हंदक ठठेर, दिजुवाके पं० गंगाधर, पंडित शिवनारायण

तथा,—

गोला के— राधा कृष्ण वैश्य, सुन्दरलाल, शिवगिर, भोलागिर, गुलाबगिर, भोमगिर, पं० भोलानाथ, वज़ीर दर्जी, पं० अयोध्याप्रसाद ममरी, पं० बन्शीधर अहमदनगर, प० चन्द्रशेखर, पं० पुरवा।

धौरहराके— ठा० छत्रपाल सिंह, छंगामिश्र, श्यामलाल मिश्र, पं० बाँकेलाल, मुरली बाबा, हाजी साहब, पं० राम बिलास, पं० संकटाप्रसाद, पं० चन्द्रभाल, रामदुलारे महेवागंज, पं० रामचरन लाल, पं० रामलाल पलेवा, पन्नूलाल वैश्य लखीमपुर,

गोलाके— पं० पुरुषोत्तमदेव, पं० शंकरलाल, हकीम रामचरण लाल, पं हजारीलाल भीरा, बच्चनलाल वैश्य भीरा, लुकमानसिंह बिजुआ, लक्ष्मणसिंह बिजुआ, पं० रामप्रसाद श्रीनगर, पं कन्हैयालाल फूलबेहणा,

ओयेल के— पं० दनकूराय, पं० गुरुदीन, आत्मासहाय, गोबरेधोबी, फिदाहुसेन, पं० चन्द्रभाल मोतीपुर, बलराम-सहाय कायस्थ लाहोरनिवासी,

सीतापुर

मु० अमीरसाहब लहरपुर, पं० बद्रीप्रसाद नवीनगर, फिबक्रबिसवाँ, ठा० झामसिंह बीहट, छेदूवैश्य, हस्मतयारखाँ बिहारीसिंह, पं० बाबूराम खैराबाद।

गोरखपुर

पं० ब्रह्मदेवशर्मा पडरौनावासी, रामबहाल पीपरायच, पं० चन्द्रदेव दुधही, यादअलीखाँ दुधही, पं० परसराम देवरिया, बा० जमुनालाल रावतसेखपुर, मु० रमाशंकर सिसवा बाजार, पं० राजमन तिवारी पटनी, बा० मुरलीधर देवरिया,

छब्बीलाल दुधड़ी, स्वा० चखानन्द हटा, कश्यप मुरारीलाल कायस्थ।

यह फेहरिस्त बिजुआ के प्रतापसिंह द्वारा मिली थी। पचासों भाइयोंके नाम फिर भी रह गये। ऊपरके नामोंमें बहुत से बी० ए० एम० ए० जिमींदार, रईस, पण्डा, पुरोहित आदि महानुभाव हैं।

फिर जेल में

हमारे बहुत से भाई जो अपनी पूरी सजा काटकर आगये थे फिर दुबारा भेजे गयेहैं। बाबा राघवदास बरहज, श्रीगणेश-शंकर विद्यार्थी कानपुर, पं० ब्रह्मराम गोंडा, आदि पचासों भाई फिर पहुंच गयेहैं। जो शेष भाई बाहरहैं उनको किस समय किस तरह अचानक ले जायंगे इसका अनुमान कौन लगा सकता

राजनैतिक अपराध में पकड़े हुए सैकड़ों भाई मामूली कैदियों की भांति दुःख उठा रहे हैं। लग भग १५० के नान-पोलिटिकल करार दिये गये हैं, ये भी जगह जगह पड़े हुए हैं।

लखनौ के स्पेशल क्लास में अब कितने हैं विदित नहीं। भविष्य के गर्भ में क्या क्या है इस बातको सर्वान्तर्यामी भगवान् ही जानता है। ऊपरी बातोंसे निराश न होकर परमेश्वर पर विश्वास रखकर सद्‌भावना से मातृभूमि के लिये यत्न करते रहना चाहिये। मंगलमय भगवान् ही फल देनेवाले हैं—मनुष्य केवल कर्म करने का अधिकारी है—

—"कर्मण्येवाधिकारस्ते, मा फलेषु कदाचन"—

(गीता)

जेल में जाने के पूर्व

महात्माजी के विशेष उद्गार

(मनन करनेयोग्य)

वाचकों को विदित हो कि चौरीचौरा के किस्से के पश्चात् बारदौली में वर्किङ्ग कमेटी की बैठक हुई थी, उसमें सत्याग्रह मुलतवी करने का जो प्रस्ताव पास हुआ था वह "बारदौली रेज़ोल्यूशन" के नाम से प्रसिद्ध है। बारदौली वर्किङ्ग कमेटी के पश्चात् देहलीमें आल-इण्डिया-कांग्रेस कमेटी की बैठक हुई। उसके विषय में २ मार्च १९२२ के 'यंग इण्डिया' के अंक में महात्माजी ने जो दुःखपूर्ण लेख लिखा है उसका प्रत्येक अक्षर मनन करनेयोग्य है—

'शान्त रहो'—'शान्त रहो'—'शान्त रहो'।

दिल्ली की आल-इण्डिया-कांग्रेस कमेटी में आये हुए सभासदों के मनमें ज्ञात या अज्ञात, ईश्वर जाने, अत्याचारिता का प्रवाह इतने ज़ोर से बह रहा था कि मैं सचमुच यही चाहता रहा कि मेरी हार होजाय तो। अच्छा है।

अल्प संख्याके साथ रहना और बहुमतके विरुद्ध होते हुए भी अपने मत का आग्रह करते रहना, इन सब बातों का मुझे अच्छी तरह अनुभव है। मुझे यदि किसी बात से डर लगता है तो वह अपने साथ बहुमत होने का है। क्योंकि इस समय मेरे साथ जो प्रचण्ड बहुमत है—ऐसा जो सरकार व अन्यों को भी भास हो रहा है—इस प्रचण्ड बहुमत में अविचारी उपासकों की ही अधिक भरती है। ऐसे उपासकों से मुझे घृणा होगई है। ये लोग मेरे मुख पर थूकेंगे तो मैं ठीक स्थान पर हूं, ठीक चल रहा हूं, भूल नहीं कर रहा हूं—ऐसा मैं समझूंगा। तब फिर बार बार हिमालय जितनी बड़ी भूल करने, बार बार ग़लत अन्दाज़ा लगाने और बार बार भूल स्वीकृत करने का अवसर ही न आयेगा। आगे बढ़कर बार बार पीछेन लौटना पड़ेगा। या बारबार नये ढंग न करने पड़ेंगे लेकिन यह बात होनी ही नहीं थी !!! मेरे साथ जो बहुमत दीखता है उसका लाभ मुझे नहीं मिल रहा किन्तु इस बहुमत का लाभ दूसरे ही उठा रहे हैं—ऐसा मेरा खयाल हो चला है। अब बेशरम बनने में ही मेरी रक्षा है। मेरी यह आदत कभी भी दूर न होगी यह मैं अपने साथियों को बार बार समझा रहा हूं—बार बार अपने सोबती-साथियों से कहता आया हूं। जब जब भूल होगी, तब तब आम तौर से उस भूल को प्रकट किये बिना मैं कभी चुप नहीं रहूंगा। मैं अपनी आन्त-रिक आवाज़को छोड़ किसी की बात नहीं सुन सकता। ऐसा करने में संसार भले ही मुझसे अलग होजाय, भले ही मैं अकेला रह जाऊं।

सत्य को स्मरण करके चलना इसी का नाम है। लोगों का वर्त्ताव देखकर मैं आज अधिक दुखी हो रहा हूं लेकिन पहले की निसबत कुछ अधिक स्याना भी हो रहा हूं। हम

लोगों का अनत्याचारीपन ऊपर ऊपर का है। वह जड़ तक नहीं पहुंचा। भीतर से क्रोध के आवेग बराबर आते रहते हैं और सरकार भी एक प्रकार से अपने अविचारों के कार्यों से इसमें मदद हो देती रहती है। हमारे लोग अहिंसात्मक इस लिये बन रहे हैं कि वे शक्तिहीन हैं लेकिन पहला मौका मिलते ही बदला लेने की स्पिरिट मनमें अवश्य रखते हैं। इस मार कूटकर लाये हुए ऊपरी अहिंसात्मक भावों से क्या कभी सच्ची शान्ति निर्माण हो सकती है? मैं जो तजुरबा कर रहा हूं क्या यह फ़िज़ूल नहीं है? जो मुझे अच्छा नहीं लगता या अच्छा नहीं दीखता उसको मैं अच्छा क्योंकर कहूं। जबरदस्ती की सहकारिता में से खुशी की सहकारिता कैसे निकल आ सकेगी? जिस जंगल में सीधे रास्ते नहीं हैं या रास्ते ही नहीं हैं, वहां मार्ग टटोलने के लिये बार बार ठहरना पड़ेगा ही। बार बार रुकना पड़ेगा ही, कभी कभी वापस भी होना पड़ेगा ही, कभी कभी चोट खाकर गिर पड़ना या लहुलुहान होना पड़ेगा ही।

अन्तर्मुख होकर आत्मशुद्धि करो।

२-देहली में जो लोग आयेंगे वे असन्तुष्ट होकर आयेंगे, इस बात को मैं पहले ही से जानता था। लेकिन वहां मेरा इतना घोर विरोध होगा ऐसी मुझे आशा नहीं थी। विधायक कार्यक्रम में उनकी रुचि ही नहीं थी फिर वे उसको क्यों मंजूर करते। क्यों साहब यह 'सोशल रिफार्मलोग'—की बैठक है या क्या ऐसा प्रश्न करते थे। वे चाहते थे कि सरकार की पीठ पर अहिंसात्मक घूसे लगाये जायं। घूसे और वे भी अहिंसात्मक !!! सब धोखा था, बनावट थी। लोगों ने यह अब तक नहीं जान पाया कि विधायक कार्यक्रम की आवृत्त

न होगी तो जो स्वराज्य मिलेगा वह एक दिन भी नहीं टिक सकेगा। जेल में जाने का नाम सरकार को अहिंसात्मक घूसे लगाना नहीं है। खास प्रकार के कारावास से ही स्वराज्य मिलेगा। जिनके मनमें द्वेष उमड़ रहा है, अत्याचार के उफान उठ रहे हैं, लेकिन जो ऊपर से अहिंसा की बातें कर रहे हैं, ऐसे हजारों लोगों के जेल में जाने से भी स्वराज्य मिलेगा यह आशा व्यर्थ है। इस तरह सरकार से स्वराज्य चुराया नहीं जा सकता। ऊपर ऊपर से अहिंसा की बातें करते रहेंगे किन्तु मौका आने पर खूब खबर लेंगे ऐसो धमकी दिखा कर या देकर जो लोग स्वराज्य लेना चाहते हैं उनको चाहिये कि ऊपरी शान्तभाषा को छोड़कर शारीरिक बल के भरोसे पर ही स्वराज्य लेने का यत्न करें-क्योंकि संसार की वह पुरानी प्रथा है ही। और ऐसा स्पष्ट कहने व करने में कम से कम दम्भ तो न रहेगा।

या तो यह मार्ग लो या 'मेरा प्रस्ताव' मञ्जूर करो। मेरा प्रस्ताव मंजूर करोगे तो आप लोगों पर बहुत भारी जिम्मे-वारी आयेगी। अगर आप लोगों का शान्त उपायों पर वि-श्वास नहीं है तो मेरे प्रस्ताव के झंझट में न पड़िये। इस तरह मैं सभासदों को साफ साफ कहता रहा लेकिन किसी ने मेरी न सुनी। थोड़ासा नाममात्र परिवर्त्तन करके प्रस्ताव स्वीकृत कर डाला। अब उनका कर्त्तव्य है कि उस पर अमल रहे। उनका पूरा पूरा उत्तरदायित्व है। वह उत्तर-दायित्व यही है कि लोगों का बार बार तकाजा हो तो भी कानूनभंग के झंझट में न पड़कर विधायक कार्यक्रम में लगे रहें। जैसे तैसे जेल में पहुंच जाना यही एक तात्कालिक कार्य नहीं है। भाषणस्वातन्त्र्य, लेखनस्वातन्त्र्य, सभास्वा-तन्त्र्य आदि प्रस्थापित करनेका भी यह समय नहीं है। समय

है अन्तर्मुख होकर आत्मशुद्धि करने का, समय है शान्तता के उपयुक्त साधनों के एकत्रित करने का। यदि इस समय सावधान न हुये तो संकटसागर में जा पड़ेंगे और फिर ढूंढ़े पता भी न चलेगा।

चौरीचौरा का प्रायश्चित्त

३— आज जो लोग जेलों में हैं उनके विषय में सोचने में कोई लाभ नहीं। चौरीचौरा के हत्याकाण्ड के विषय में मैंने जब सुना तब उसके प्रायश्चित्त की पहली किश्त में मैंने अपने मन से उन सब जेलबन्धुओं को बली दे दिया। वे सब इसी ख्याल से जेल में गये हैं कि लोग अपने निश्चयसामर्थ्य से छुड़ा लेंगे। स्वराज्य की पार्लियामेन्ट का पहला कार्य कारागार के दरवाजे खोलना होगा ऐसी आशा थी, किन्तु ईश्वरीय संकेत और ही थे। हम लोगों ने जोकि बाहर रहे थे उनको मुक्त कराने का यत्न किया। परन्तु नाकामयाब रहे, इसलिये अब उनको पूरी सजा भुगतनी चाहिये। जो लोग किसी और खयाल से जेल में गये वे चाहें तो सरकार को प्रार्थना पत्र दें या माफी मांगकर पीछा छुड़ावें। उनको छुट्टी है। ऐसे लोगों के अलग हो जाने से आन्दोलन को कोई हानि नहीं होगी, प्रत्युत आन्दोलन मजबूत ही होगा। पहले रूस में भी सहस्रों लोग जेल में गये थे, पर वह देश अब तक पूर्ण स्वतन्त्र नहीं हुआ। जब अधिकतर लोग शान्त रहेंगे व अहिंसात्मकभाव के लोग आन्दोलन करते रहेंगे तब स्वराज्य समीप आने लगेगा। लेकिन अगर लोग मन में हिंसात्मक भाव लेकर जेल में जायेंगे तो ध्येय दूर होता जायगा। इस समय निंदास्तुति की पर्वाह न करके गिने चुने भी सच्चे अहिंसात्मक असहयोगी काम करेंगे तो भी बहुत काम होगा।

अधिकारी लोग इस हमारी प्रथा को कमज़ोरी की प्रथा समझकर धर पकड़ जारी रक्खेंगे, अत्याचार करेंगे तो भी चुप चाप सहना चाहिये। सरकारी दमननीति के उत्तर में जो वैय्यक्तिक कानून भंग चला था वह भी इस समय बन्द होना चाहिये। समस्तशक्ति को आर्थिक व सामाजिक दशा के सुधारने में खर्च करना चाहिये। विधायक कार्यक्रम में चट-कीलापन नहीं है लेकिन वह शक्ति बढ़ाने में तो अवश्य अच्छा है। ज़िमींदार, माडरेट आदि लोगों के सामने घुटने टेक कर मनाना चाहिये और कहना चाहिये कि हमारे मन में तुम्हारे विषय में कोई द्वेष नहीं, अप्रोति नहीं है। अंगरेजों के साथ भी द्वेष नहीं करना चाहिये, उन को तकलीफ न देनी चाहिये, उनके जी को न दुखाना चाहिये। हां अपने कर्त्तव्य पर अड़े रहना चाहिये, झुकनेकी आवश्यकता नहीं।

ये लोग अलग क्यों नहीं हो जाते।

४—दिल्ली की सभा में जिन थोड़े लोगों ने मेरे प्रस्ताव के विरुद्ध अपना मत दिया उनका ध्येय और ही है। असहयोग के कार्यक्रम पर जिनका विश्वास नहीं है वे लोग हमारे साथ बहने की अपेक्षा, अपना पृथक् संघ बना कर स्वतन्त्र रीति से कार्य करें तो कैसा अच्छा हो। जिन को कांग्रेस के ध्येय पर विश्वास नहीं है वे कांग्रेस में क्यों रहते हैं। दिल्ली की सभा में मैंने "ध्येय" का खुलासा किया था। विशेष कर उस ध्येय के 'शान्त'—'अहिंसात्मक'—'लेजिटिमेट' इन तीन शब्दों की व्याख्या की थी। मैंने 'लेजिटिमेट' का अर्थ किया था 'सत्यपूर्ण' तब लोग कहने लगे कि इस अर्थ का 'ध्येय' में कोई शब्द नहीं इस लिये आप इस प्रकार की व्याख्या नहीं कर सकते। मैंने वाद बढ़ाना उचित नहीं समझा और आक्षे-

पाई शब्द निकाल डाले। परन्तु आज सत्य का खून हुआ ऐसी मेरी अन्तरात्मा कहने लगी। ये अल्पसंख्या वाले लोग पूर्ण स्वदेशभक्त हैं पर यदि इन को 'ध्येय' में विश्वास नहीं तो इन को चाहिये कि कांग्रेस से अलग हो जायं। अपना अपना पृथक् पृथक् ध्येय रख कर काम करना ही अच्छा है। जहां रह कर अपनी बात चलती नहीं वहां रह कर मार्ग में रुकावट डालने की अपेक्षा वहां न रहना ही अच्छा। प्रजातन्त्र की स्थापना होनी होगी तो इसी प्रकार से होगी।

निदान में भूल हुई

५—मैंने 'मराठा, में मि० केलकर का लेख ध्यानपूर्वक पढ़ा। मि० केलकर ने मुझपर जो टिप्पणी की है वह सौम्य और विवेकपूर्ण है यह मैं मानता हूँ। पर बारदौली में मैंने जो उलटी कुलांच मारी थी वह अपरिहार्य थी- मैं टाल नहीं सकता था —यदि मैं केलकर व इनके साथियों को ऐसा विश्वास दिला सका तो मेरे मन को समाधान होगा। सुसंगतता तो अच्छी वस्तु है पर हर समय सुसंगत होने से काम नहीं चल सकता। रणमैदान में घंटे २ भर म चाल बदलनी पड़ती है। रोग के निदान के अनुरूप ही औषधी देनी पड़ती है। राउन्ड टेबल कानफरेन्स के समय मैंने पं० मालवीय जी की बात सुनकर पीछे कदम नहीं हटाया या ढीला नहीं पड़ा क्योंकि यदि ऐसा करता तो असत्यवादी बन जाता। लोग मुझे मूर्ख कहते। उस समय राजकीय आकाशमंडल निरभ्र था इसलिये माडरेटों के लिये खुला जंगल नहीं छोड़ा उस समय मुझे वैसा करना ही ठीक प्रतीत हुआ। इस में मेरा दोष इतना ही समझिये कि मेरा निदान ठीक नहीं था। उस समय बारदौली के सत्याग्रह को रोकना हमारी कमजोरी

समझी जाती। चौरी चौरा रामरौले ने आकाशमंडल अभ्राच्छादित करदिया तब मुझे अगत्या निदान बदलना पड़ा-

ता० ६ मार्चके यंग इण्डिया में 'नान ह्वायोलन्स,'अनत्याचार, के ऊपर म०गान्धीने निम्नलिखित विचार प्रकट किये-

शुद्ध प्रीति

जब कोई मनुष्य अपने आपको 'अत्याचारी, कहता है तब उसका कर्त्तव्य है कि वह शत्रु पर भी क्रोध न करे। किसीका अनिष्ट न चाहे, प्रत्युत भला ही चाहे। शत्रु के अपकार सहन ही करने चाहियें। प्राणिमात्र के विषय में द्रोहबुद्धि न रखना इसी का नाम अनत्याचारीपन है। हिंसक प्राणियों के विषय में भी मन में अप्रीति न होनी चाहिये। अनत्याचारीपन का अर्थ है शुद्धप्रीति। धर्मशास्त्रकार कहते हैं अपकार का बदला न लेना चाहिये। किसी समय ऐसा भी मौका आवे तो बदला लेना चाहिये। शम, दम, क्षमा इनके विषय में विधिवचनों की कमी नहीं है।

मेरे जीवन का आधार

मेरे जीवन का एकमात्र आधार पूर्ण प्रेम है। इस मार्ग में मुझ से कभी भूल होजाती है तो मैं सुधारने का यत्न करता रहता हूं। लेकिन अहिंसात्मक भाव के अन्तिम स्वरूप का प्रचार मैं कांग्रेस व खिलाफत द्वारा नहीं करना चाहता। क्योंकि इस प्रकार का यत्न व्यर्थ है क्योंकि सब स्त्री-पुरुष एकदम सब नियमों का पालन करेंगे ऐसी संभावना नहीं है। यद्यपि पूर्ण रीतिसे नियम पालन अशक्य है तो भी अंशतः आचरण करना असम्भव नहीं,—वह आंशिक आचरण भी उच्चस्वरूप के अनुरूप ही होना चाहिये। बड़े जलसंचय के जो गुणधर्म हैं वे एक

बिन्दु में भी होते हैं। जब किसी सिद्धान्त को स्थल व काल से मर्यादित कर लेते हैं तब उसी को 'पालिसी' कहते हैं। पर उसमें भी अधिकसे अधिक आचरण करने का ध्यान अवश्य रखना पड़ेगा। एक मनुष्य कहेगा कि 'सत्य' मेरा सिद्धान्त है। दूसरा कहेगा कि 'सत्य' मेरी नीति है। पालिसी को जब चाहे बदल सकते हैं पर तत्त्व नहीं बदल सकते। इसीलिये बहुत से असहयोगियों का पालिसी के रूप में स्वीकृत अहिंसात्मकभाव उच्च कोटि का नहीं है। शुद्ध आचरण पड़ना जाता है उसकी यही वजह है।

प्रेम की भट्टी

प्रेम की भट्टी में अंग्रेजों का कठोर स्वभाव पिघले बिना नहीं रह सकता। अगर पिघले नहीं तो समझ लेना चाहिये कि प्रेमाग्नि की भट्टी ठीक ठीक गरम नहीं हुई। अहिंसात्मक भाव शुद्धस्वरूप का होना चाहिये। वह वैसा नहीं है। केवल शारीरिक व्यथा न पहुंचाने से उसका पालन नहीं होता। 'चलो आज हम कुछ नहीं कहते' यह भी शुद्ध स्वरूप का द्योतक नहीं है। जब भविष्य में कुछ नहीं करेंगे तभी शुद्ध स्वरूप होने लगेगा। 'आगे कभी खबर लेंगे' इस भाव के बहुत से लोग हैं पर यह अच्छा नहीं। अंग्रेज अधिकारी व उनके सहकारी पुरुषों से हरतरह से स्नेह रखना चाहिये। कृति में शान्ति न रह सकती हो, विचार में भी शान्ति न रहती हो तो 'अहिंसात्मक' यह शब्द छोड़ देना चाहिये। जो मनुष्य शान्तवादी नहीं वह तत्काल ही उपद्रव कर बैठेगा। यह बात नहीं, पर उस आदमी पर कोई जिम्मेवारी तो नहीं आपड़ती। लोग यदि स्पष्ट रूप से यह कहदें कि हम इस शान्तिव्रत को पालन नहीं करेंगे तो चौराचौरी की जिम्मेवारी मेरे सिर पर नहीं पड़ेगी। जब

तक ऐसा स्पष्ट नहीं करते ज़िम्मेवारी सब के सिर पर पड़ेगी ही।

मुझे ऐसी क्रान्ति पसन्द नहीं

यदि यह शान्त मार्ग पसन्द है तो अंग्रेजों के साथ या सहयोगियों के साथ इस समय जो हमारा झगड़ा चल रहा है उसको मिटाना चाहिये। 'आप लोगों से हमको किसी प्रकार की भी जान जोखों नहीं है ऐसा सर्टिफिकेट लेना चाहिये। मत भेदों के अंशों को छोड़कर अन्य सब बातों में हम एकत्रित हो सकें तो जरूर मिलना—बैठना चाहिये। शांति से जो क्रान्ति होगी उसमें पके हुए फल की भांति स्वराज्यरूपी फल नौकरशाही के हाथों से स्वयं हमारे हाथों में आ पड़ेगा * * * * सब काम स्वाभाविक रीति से होने चाहियें। जिनको हमारा कार्यक्रम पसन्द नहीं वे अपना दूसरा कार्यक्रम तैयार कर लेवें। कार्यक्रम पर हमको पूर्ण विश्वास होगा तो शरीर सामर्थ्य की भांति नौकरशाही प्रीतिसामर्थ्य के भी वशीभूत हो सकेगी। जिनको इस बात पर विश्वास नहीं, वे जायं कौंसिलों में और सहें अपमान। या जिनको यह मार्ग भी पसन्द नहीं वे करें रुधिर—क्रान्ति, मुझे ऐसी क्रांन्ति पसन्द नहीं, और न मैं ऐसी क्रान्ति में मदद दे सकूंगा। दो मार्गों में से एक मार्ग को स्वीकार कीजिये या तो अहिंसात्मक असहयोगी बनिये या प्रतियोगी सहकारिता को स्वीकार कीजिये।

पाठक गण! जेल जाने के पूर्व महात्मा जी के मस्तिष्क में कौन कौन से विचार घूम रहे थे उसका यह दिग्दर्शन मात्र है। महात्मा जी ने एक अंक में लिखा था कि I know no other way मुझे दूसरा मार्ग आताही नहीं। ता० ११ मार्च १९२२ रात्रि के समय म० गाँधी पकड़े गये थे उस से पूर्व ही महात्माजीने If I am arrested 'यदि मैं पकड़ा जाऊं' यह लेख

लिखा था। इन सब बातों पर विचार कीजिये। सोच विचार कर पग रखिये। हमने अपनी रामकहानीमें सब कुछ लिख डाला है जिससे आपको वस्तुस्थिति का परिज्ञान हो जायगा। शरीर व प्राण का जो सम्बन्ध है वही सम्बन्ध म० गांधी व असहयोग- आन्दोलन का था। प्राण के चलते ही जो शरीर की दशा होनी है वही इस समय हमारे आन्दोलन की है। यदि हम अब भी न संभल सके तो भविष्य में जो दुर्दशा होगी उसका अनुमान करना कठिन है। जब कभी मैं एकान्त में बैठकर सोचता हूं कि महात्मा जी अपनी मियाद पूरी करके जब हम लोगों में आयंगे तब क्या देखेंगे, क्या कहेंगे तब मुझे कोई उत्तर नहीं सूझता। इतना मैं कह सकता हूं कि इस निराशा में भी एक सुन्दर आशा की झलक दिखाई देती है! मैं उस झलक का स्वरूप वर्णन करने में असमर्थ हूं- कभी कभी बाहर की उदासीनता को देखकर जी चाहता है कि चलो कोई कानून तोड़कर जेल में शान्ति से जा बैठें। पिछले जेल के अनुभव से मैं कह सकता हूं कि बाहर की अपेक्षा भीतर बहुत आनन्द है। सच बात यह है कि बाहर तो मेरा जी भी नहीं लग रहा। भगवान वह दिन शीघ्र दिखावें, जब कारागार का पुनः दर्शन हो और फिर हम दुबारा वैय्यक्तिक स्वराज्य का अनुभव कर सकें। क्योंकि "धन्या नरा न पश्यन्ति, देशभङ्गं कुलक्षयम्"— ॥ शम् ॥

श्री नरदेवशास्त्री, वेदतीर्थ।

❋ सत्याग्रही के शस्त्र ❋

श्री० डी० वी० अठल्ये ने म० गान्धी जी का सुन्दर जीवन चरित्र लिखा है। उसमें से एक आवश्यक अवतरण वाचकों के मनोरञ्जनार्थ उद्धृत करता हूं—

WEAPONS OF A SATYAGRAHI.

(FROM D. V. ATHALYE'S LIFE OF M. GANDHI.)

"For a true *Satyagrahi*", he [Mahatma Gandhi] says. "the weapon of fight must be clean-edged with love.,, A Satyagrahi fights the battle of righteousness with love as his sword. The result of the fight may embarrass or paralyse his opponent. But that is *not* his *aim*. He merely seeks the vindication of *right* by *love*. Such a vindication is possible only when in the course of the fight he invites suffering on himself. The process of the victory of a Satyagrahi is this: he fights, he suffers, he awakens the conscience of his opponent by the immensity of his sacrifice and then stands unarmed before him, compelling him to reform. The question now is, is this the only way to assert one's rights? Is self-suffering the only way of righteous fight? Do the cannons of highest religion and ethics prohibit the infliction of suffering on others from the domain of righteous warfare? It would seem that the philosophy of the *Gita* runs counter to such an assumption. While we are discussing here

the propriety of inflicting financial loss on one directly associated with our opponent, it must not be forgotten that the *Gita* (though Ghandhi considers it to be "a sermon on non-violence" came into existence as a plea for mortal fight. To Gandhi who would assume nothing not unimpeachably proved, the setting of the *Gita* may be allegorical. But to the millions of his countrymen it is not so Was Arjuna not a *Satyagrahi*? No devout *Hindu* will answer the question in the negative, and yet the fact is to be reconciled that his *Satyagraha* was essentially different from that of Gandhi. The explanation is not difficult: Arjuna fought a *righteous* war with *righteous* weapons. Gandhi wants to fight a *righteous* war with exclusively the weapon of *love*.'

महात्मा गान्धी कहते हैं कि सत्याग्रही के शस्त्र को खड्ग प्रेम की धार लगी रहनी चाहिये। सत्याग्रही पुरुष प्रेमके खड्गसे सत्य का युद्ध करता है। इस युद्ध का यह परिणाम होसकता है कि शत्रु हड़बड़ा या घबरा जावे, परन्तु सत्याग्रही का वह उद्देश्य नहीं है। उसका केवल यही अभिप्राय है कि प्रेम से सत्य को प्रमाणित कर देवे। यह तबही हो सकता है जब कि वह इस युद्ध में अपनी खुशी से अपने ऊपर दुःख लाता है। सत्याग्रही का विजय का प्रकार यह है—वह लड़ता है, दुःख उठाता है, और अपने दुःख की तीव्रता से शत्रु की आत्मा में एक समवेदना या जागृति उत्पन्न करता है और फिर उसके संमुख निरस्त्र का निरस्त्र ही डटा

रहता है जिससे कि शत्रु सुधार करने के लिये मजबूर हो जाता है।

अब प्रश्न यह है कि क्या अपने अधिकार को जतलाने का यही एक उपाय है ? क्या धर्म और नीति के उच्च तत्त्व सत्य के युद्ध में अन्यों पर आघात करने या दुःख पहुंचाने को मना करते हैं ? यह स्पष्ट दीखता है कि गीता का सिद्धान्त सर्वथा इसके विपरीत है। महात्मा गान्धी गीता को अहिंसा का उपदेश ही मानते हैं और शायद उनकी समझ में यह युद्ध का प्रकरण आलङ्कारिक है— पर लक्षों करोड़ों भारतवासी ऐसा नहीं मानते। क्या अर्जुन सत्याग्रही नहीं था ? कोई भी हिन्दु इस प्रश्न का उत्तर निषेधपरक नहीं दे सकता और अर्जुन का सत्याग्रह गान्धी जी के सत्याग्रह से सर्वथा विभिन्न था। अर्जुन व गांधी जी के सत्याग्रह में यह भेद है कि--कि अर्जुन सत्याग्रह के युद्ध में सच्चे अस्त्र शस्त्रों से लड़ा पर महा० गान्धी सत्याग्रह के युद्ध में केवल प्रेमास्त्र से काम लेना चाहते हैं। इसलिये महात्मा गांधी जी के सत्याग्रह का मेल अर्जुन के सत्याग्रह के युद्ध से नहीं मिल सकता।—

ब्राह्म धर्म का उत्थान

❋ सशस्त्र व निःशस्त्र प्रतीकार ❋

संसार में जब जब कभी अत्याचार या अनाचार या अन्याय हुआ है तब दोही प्रतीकार देखे गये हैं— १, सशस्त्र २, निःशस्त्र और कोई तीसरा प्रकार नहीं देखा गया। जब महात्मा जनों पर अत्याचार या अन्याय हुए तब वे निःशस्त्र प्रतीकार या गांधी जीके अभिमत प्रकार को काम में लाते रहे हैं। यद्यपि महात्मा लोग ईश्वर पर विश्वास रखकर चुपचाप सब कुछ सहते रहे पर पीछे से अत्याचारी का जो नाश हुआ वह सशस्त्र प्रतीकार से ही हुआ। यवनों के समय में हिन्दु साधु सन्त महात्माओं को बहुत कष्ट हुए। यद्यपि उन्होंने सब कुछ चुप चाप सहा तो भी परिणाम यह हुआ कि पंजाब में सशस्त्र प्रतीकार के अवतार गुरु गोविन्दसिंहादि हुए और महाराष्ट्र में शिवा जी का अवतार हुआ। इसलिये 'अहिंसात्मक भाव' से 'निःशस्त्र प्रतीकार' करना यह ब्राह्मणों का धर्म है। महा० गांधी ने इस ब्राह्मण धर्म के उत्थान के लिये चेष्टा की यह बहुत अच्छा हुआ। ब्राह्मधर्म के उत्थान के बिना क्षात्रधर्म उद्दीप्त नहीं होता। ऋषि मुनियों पर राक्षसों का अत्याचार बढ़ता था तभी क्षत्रिय लोग तेजोयुक्त होकर रक्षा करते थे इस प्रकार से दुष्टों का संहार होजाता था। विश्वामित्र के यज्ञ में राक्षस विघ्न डालते थे, वह स्वयं निःशस्त्र रहा, वह चाहता तो अपने तेज से ही राक्षसों का विध्वंस कर देता किन्तु ऐसा करने

से ब्राह्मधर्म का लोप होजाता, इसलिये वह दशरथ के पास गया और रक्षार्थ राम लक्ष्मण को ले आया। यही दशा सहस्रों ऋषि, मुनि, ब्राह्मण, संन्यासी वानप्रस्थ आदियों की हुई। इन लोगों को——क्योंकि ये समाज के मुख हैं,—इस लिये शान्त रहना चाहिये, दुःखों को, अत्याचारों को चुपचाप सहना ही चाहिये—इसी का परिणाम यह होगा कि क्षात्रतेज प्रदीप्त होकर अत्याचार व अनाचारों को नष्ट करेगा। ईश्वर स्वयं न किसी की रक्षा करने आता है न जाता है, वह इसी प्रकार ब्राह्म और क्षात्र शक्ति द्वारा काम चलाता है। ब्राह्मशक्ति विधायकशक्ति है क्षात्रशक्ति संहारक शक्ति है। संसार में दोनों ही शक्तियों से काम चलता है संसार में बल तभी तक रहता है जब तक कि दोनों शक्तियां सम तोल हों केवल एक से काम नहीं चलता। अतः विधायक कार्यक्रम करने वाले लोग अहिंसात्मक भाव से अन्याय का निःशस्त्र प्रतीकार करते रहें॥ क्षात्र तेज इस प्रतीकार में सशस्त्र सम्मिलित होगा ही! उसको कौन रोक सकता है? ब्राह्म शक्ति वालों को क्षात्र शक्ति वालों से घबराने की आवश्यकता नहीं। न क्षात्रशक्ति वालों को ब्राह्मशक्ति से दूर भागने की आवश्यकता है! ब्राह्मशक्ति उद्दीप्त हो और क्षात्रशक्ति पीछे रहे यह हो ही नहीं सकता। श्रीकृष्ण ने गीता में समय प्राप्त स्वधर्म को फलाकाङ्क्षा छोड़कर पालन करते रहने के लिये जो उपदेश किया है उसका मर्म भी यही है। सत्व, रज, तम की मीमांसा पर सूक्ष्म दृष्टि डालने वाले लोग इस तत्त्व को भली भान्ति समझ सकेंगे। "निग्रहः किं करिष्यति" "स्वभावस्तु प्रवर्त्तते" यही तत्त्व सर्वमान्य है।

॥ शम् ॥